आगमोद्धारक

नमो नाणस्स नमो नमः

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन

उज्जैन का जैन हिन्दी मासिक

प्रधान सम्पादक

डॉ.सुभाष जैन, उज्जैन

सम्पादकीय कार्यालय

डॉ.सुभाष जैन

46, सखीपुरा, उज्जैन-456001 (म.प्र.)

मोबा. नं. 94250-91012, 8770884897

1-E-mail-Subash_3333@yahoo.co.in

2-E-mail-i.am.Subhashjain@gmail.com

इन्दौर कार्यालय

प्रफुल्लकुमार जैन ''पप्पू''

1073, सुदामानगर, फूटीकोठी रोड़

इन्दौर-452009 (म.प्र.)

5057087, 5057067

मोबा. नं.-98260-10089

सदस्यता

आगमोद्धारक के सदस्य बनने वाले श्रीमानों से निवेदन है कि सदस्य के लिये शुल्क राशि बैंक ड्राफ्ट/चैक/M.O. से श्री सिद्धसेन दिवाकर चेरिटेबल ट्रस्ट, उज्जैन के नाम से सम्पादकीय पते पर भिजवाये। अन्य नाम से सदस्यता राशि स्वीकार नहीं की जायेगी। - **डॉ.सुभाष जैन**

सच्चे हीरा-मोती:- *एक राजकुमारी ने हीरे-मोती बेच कर एक धर्मार्थ औषधालय खुलवाया। इस औषधालय से गरीब लोगों को बहुत लाभ हुआ। राजकुमारी स्वयं भी प्रतिदिन रोगियों की सेवा-सुश्रूषा करने जाया करती थी। एक दिन जब वह रोगियों की सेवा में लगी हुई थी तो एक रोगी उसकी दया से प्रभावित हुआ और उसकी आंखें भर आयी। राजकुमारी को अपनी सेवा से बहुत संतोष हुआ। राजकुमारी ने कहा- अपने सच्चे हीरे-मोतियों को मैं आज देख सकी हूं।*

दिव्य आर्शीवाददाता

प.पू.मालव भूषण आचार्य श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.

मार्गदर्शक एवं प्रेरक

परम पूज्य आचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन, उज्जैन

अध्यक्ष- भाई श्री प्रफुल्लजी जवेरी, मुंबई (महा.)

शाश्वत संदेश

परजूरइ ते सरीरयं, केसा पंडुरया हवंति ते।
से सव्वबले य हायइ, समयं गोयम ! मा पमायण॥

तेरा शरीर जीर्ण होता जा रहा है, केश पक कर सफेद हो चले है, शरीर का सब बल क्षीण होता जा रहा है। हे जीव ! क्षण मात्र के लिये भी प्रमाद मत कर।

- उत्तरा. सूत्र, 10.26

पाथेय

हे नाथ, अपने प्रकाश को इस तमासाबूत जगत में उतरने दो ताकि इसमें से उभरकर सामने आ सकें एक नवीन जगत ! जो कार्य अभी तक तैयारी की स्थिति में है उसे पूरा करो और एक ऐसी नई मानवता को उत्पन्न करो-जो तुम्हारे भव्य एवं नूतन विधान की सही एवं सच्ची अभिव्यक्ति हो अब हमारे गति बैग को नहीं रोक सकेगी कोई बाधा हमारे प्रयासों का कोई भी भ्रम नहीं कर सकेगा भ्रान्त। तुम पर अपनी सब आशाएं एवं कर्म आश्रित कर तुम्हारे सर्वोच्च संकल्प के प्रति पूर्ण समर्पित होकर हम तुम्हारे समग्र अविर्भाव के हेतु किये गये अभियान में सब विरोधों पर विजय पाते हुए अचल निश्चय के साथ आगे बढ़ेगे, हे विश्व विधाता, हे अन्धकार पर विजय पाने वाले प्रभु, तुम्हारी जय हो।

शुल्क सोपान

स्तम्भ	11,511/- रुपये
आजीवन	1000/- रुपये
पांच वर्षीय सदस्य	301/- रुपये
एक वर्षीय सदस्य	80/- रुपये
एक प्रति	10/- रुपये

नोट- आगमोद्धारक में प्रकाशित रचनाओं से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

वर्ष-28 पौष-माघ जनवरी 2023 अंक-1

विषय सूची

1- शाश्वत संदेश, पाथेय 3

2- विषय सूची 4

3- नववर्ष में नये संदेश से ऊर्जा प्राप्त करें- (सम्पादकीय)- डॉ.सुभाष जैन 5

4- सूर्य की उपासना का पर्व ''मकर सक्रान्ति''- शांतिलाल सगरावत, नवकार मंत्र में 68 अक्षर है...., मन की ग्रंथि 6

5- पाप की सजा भारी-प.पू.आचार्य श्रीअरुणविजयजी म.सा.,प्रभु-प्रेम छिपा नहीं रहता लोगस्स की आराधना 7-8

6- समकित क्या है ?- पं.गुणसुंदर विजयजी गणी म., अति दुर्लभ मनुष्य भव.... 9-10

7- धर्म का अधिकारी, सच्चा मुनि, मृत्यु का भय 11-13

8- न्यायालयों की निगाह में जैन धर्म बहुत प्राचीन धर्म है, आयंबिल से मधुप्रमेह **Diabetes** से मुक्ति 14

9- बिन सांप्रदायिकता-पंन्यास श्री चन्द्रशेखर विजयजी परतंत्र न हों, कुसंग और सत्संग 15-17

10-किस धर्म में कब मनाया जाता है नव वर्ष, वृद्ध और युवक 18

11-रिवाल्वर जब खिलौना बन गयी-पू.आ.श्री विजय पूर्णचन्द्र सूरीश्वरजी म.सा., विषय-कषाय ही दुःख है, करो घर खाली-राजश्री राजगढ़ 19-20

12-वर्तमान तीर्थकर भगवानजी के शासन यक्ष और यक्षिणी जिन्दगी में 8 के पहाड़े का महत्व.... 21

13-जैन शासन में इतिहास बनाने वाले शासन रत्न (संघपति), वर्जित कार्य 22

14-भक्ति की शक्ति- सुधीर पटवा, योग मतलब ? 23

15-कस्बे में हमारे अतिथि मुनि ढूंढने बाहर चले घर घाणी-एस.सी.कटारिया (जैन) सबसे प्रेम करो 24

16-वर्गपहेली- 332 - जयंतीलाल जैन 25

17-ज्ञान गंगोत्री- 332-आ.प्रवर श्री मृदुरत्नसागरजी म.सा. 26

18-शासन-समाचार 27-41

19-हमारे तीज त्यौहार, सादर आमंत्रण, सारे देश में आगमोद्धारक,दृष्टिकोण बदलें.... 42

संपादकीय

नववर्ष में नये संदेश से ऊर्जा प्राप्त करें

इक्कीसवीं सदी का एक ओर वर्ष पूर्ण होने के साथ एक और वर्ष हमारे समक्ष समुयास्थित होने जा रहा है। व्यापार की तरह शुभकामनाओं का लेन देन होगा। एक और वर्ष समय कालखंड के इतिहास के पन्नों में दर्ज हो गया है। कैसे याद करूं 2022 की ओर कैसे स्वागत करूं2023 का ? ईमानदारी पर होते भ्रष्ट हमलों को, प्रकृति के हमलावर तेवर से उत्पन्न हुए मानवीय क्रंदन को, मानवता को आंतकित करते आतंकवादियों को, युद्ध की विभीषण ज्वाला से झुझती मानवता को, महिलाओं पर होते बलात्कार-हत्या और अपमान को, सांस्कृतिक विरासत पर होते हमलों को, और धर्म को निगलते आधुनिक पाश्चात्य राक्षस को, व्यतीत हो रहे 2022 में यह सब कुछ घटनाक्रम कैसे भूले जा सकते है ? इन सबके बीच नववर्ष का स्वागत तो हमें करना ही होगा।

जब देश विकास की नई मंजिलें छूने की ओर आगे बढ़ रहा हो, अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपना दबदबा सिद्ध कर चुका है तो इसके लिये भी बीते वर्ष को याद रखना होगा। यह बात सही है कि भौतिक विकास की अंधी दौड़ ने इस देश के नैतिक, सामाजिक मूल्यों के साथ धार्मिक, सांस्कृतिक मूल्यों को पीछे छोड़कर जो विकास हो रहा है उसका परिणाम शुभ आयेगा, ऐसा मानना हमारी भूल होगी क्योंकि जो दौड़ दौड़ी जा रही है उसकी विकृति के प्रभाव से समाज का सौहार्द भी खत्म होता जा रहा है। चारों ओर फैले स्वार्थ के साम्राज्य से पारिवारिक रिश्तों को नष्ट करते मनुष्य के घिनौने स्वरुप ने समाज के ताने-बाने को छिन्न-भिन्न कर दिया है। मनुष्य के इस विकृत स्वरुप का प्रभाव धर्म, राजनीति, समाज, संस्कृति और अर्थतंत्र के साथ विश्वसनीय मानी जानेवाली न्याय प्रणाली तक को अपने आगोश में ले लिया है। ऐसा लगने लगा है कि मानवीय मूल्य, किताबी ज्ञान तक ही सीमित रह गया है।

शिक्षा का व्यापारीकरण उस पर राजनीति, आंतकवाद का बिन बुलाया रक्तबीज बनता राक्षस हो या राजनीति दुश्मनी पालते और राष्ट्र का विनाश कर अपनी रोटी सेकते राजनेता हो, टीवी चैनलों के माध्यम से ऐसे सपने बेचते जो कभी पूरे नहीं होते और अश्लीलता फैलाते, यह मनोरंजन के साधन धर्म की मानमानी व्याख्या कर एक दूसरे से लड़ाने का ही काम कर रहे है। इन सब मुद्दों पर स्वाभीमानी राष्ट्र चिंतक और आत्मचिंतकों को अब यह मंथन करना होगा। हमारी धर्म सांस्कृतिक विरासत के साथ नैतिकता की दिशा और दशा क्या हो ? देश का वातावरण प्रदूषित करनेवाले इन तत्वों की बहुलता से मानवता को कैसे उभारे यह तय कर आगे बढ़ना होगा। कौन सी विचारधारा, कार्य निष्ठा हमारी संस्कृति के हितों को मजबूत आधार देगी और हमारे राष्ट्र के गौरव पुनः प्राप्त करने में सहायक होगी। 2023 में इसका चिंतन होना चाहिये।

भविष्य के द्वारोद्घाटन की चाबी हमारे पास ही है, धर्म संस्कृति के साथ नैतिकता और आचरण विहीनता के माहौल के मध्य एक आध्यात्मिक आंदोलन का भारी ज्वार जनजन में पैदा कर उन्हें सचेत करना होगा। आध्यात्मिक पुर्न जागरण के बगैर इस समय में, आने वाले समय में भी समाज को सही मार्गदर्शन और प्रेरणा नहीं मिल पायेगी। धर्म आध्यात्म का जो विपुल भण्डार हमारे मनीषी छोड़ गये है उसके प्रति जागरुक होना होगा, समय की विपरीत धारा में बह रहे मानव को बचाकर ही इस देश, धर्म, संस्कृति की रक्षा कर पायेंगे, हिंसात्मक प्रतिरोध का विरोध प्रेम के आधार पर कर हमारे सर्जनात्मक उत्तरदायित्व को हमें समझकर उस पर चलना होगा।

बीते वर्ष के हमारे संकल्प क्या थे ? कितने साकार हुए ? जीवन व्यर्थ तो नहीं बीत रहा है, जीवन जीया जा रहा है, सिर्फ बीत रहा है ? कितने क्षण पल हमने व्यर्थ गंवाये, कितने सार्थक रहे ? कभी किसी के लिये कुछ किया या निज हित स्वार्थ से ही समय व्यतीत हो गया ? आनेवाले समय के बारे में हमने कुछ सोचा कि नहीं ? हैप्पी न्यू ईयर-सेम टू यू- नववर्ष मुबारक हो-आपको भी हो वाट्सअप के मैसेज से मोबाईल भर देंगे, क्या इसी से नवागत 2023 का स्वागत करेंगे ? या कोई नया संदेश हमारे हृदय से निकलेगा ? जो सारे वर्ष इसे ऊर्जा प्रदान करता रहेगा, ऐसा कुछ सोचना नहीं करना होगा तभी नववर्ष का स्वागत समाचीन होगा।

समय बड़ा बलवान है, सुख-दुःख, सफलता-असफलता, जीवन में आती-जाती रहती है। जीवन चक्र ऐसे ही चलता है, हमारे धर्म समाज की परम्पराओं, संस्कृति का अक्षुण्य बनाये रखने के लिये हमें सजग रहना होगा नहीं तो आनेवाली पीढ़ी को कुछ नहीं मिल पायेगा। हमें इस वर्ष यह ध्यान रखना होगा कि ईश्वरीय सत्ता का सानिध्य हमारे जीवन में बना रहे। इसी भावना के साथ हम सब नववर्ष का स्वागत करें यही शुभेच्छा !

-डॉ.सुभाष जैन

सूर्य की उपासना का पर्व "मकर सक्रान्ति"

✻ शान्तिलाल सगरावत, मंदसौर

देवराज के नाम से आख्यायित उपनिषदों में माघ मास इस वर्ष पौष सुदी-बारस, 14 जनवरी 2023 को मकर संक्रान्ति का महात्वपूर्ण पर्व सूर्य की उपासना का पर्व है। इस दिन सूर्य धनु राशि से निकलकर मकर राशि में प्रवेश करता है। इसे उत्तरायण भी कहते है। इसके पहले सूर्य दक्षिणायन होता है। धर्म ग्रंथों में उत्तरायण को देवताओं का दिन और दक्षिणायन को देवताओं की रात कहा गया है। उत्तरायण में सूर्य का और दक्षिणायन में चन्द्रमा का प्रभाव अधिक रहता है। इस दिन से दिन बड़े होने लगते है और रातें छोटी। इस प्रकार उत्तरायण (पूर्व) सूर्य के महत्व को दर्शाता है। सूर्य की गति से संबंधित होने के कारण यह पर्व गति, नवचेतना, नव उत्साह और नवस्फूर्ति का प्रतीक है।

नवकार मंत्र में 68 अक्षर है....

पहले पांच पद के अक्षर 35 है।

आखरी चार पद के अक्षर 33 है।

नवकार मंत्र में 8 संपदा है।

नवकार एक अक्षर के जाप से 7 सागरोपम पापों का नाश होता है।

नवकार एक पद के जाप से 50 सागरोपम पापों का नाश होता है।

एक नवकार के जाप से 500 सागरोपम पापों का नाश होता है।

नवकार मंत्र का आगमिक नाम श्री पंचमंगल महाश्रुतस्कंध है।

नवकार मंत्र 14 पूर्व का सार है।

नवकार मंत्र में 48 लब्धि है।

नवकार के एक अक्षर में 1008 विद्या देवी है।

नवकार मंत्र शाश्वत है।

9 लाख नवकार गिनने नरक-तिर्यंच गति का बंध होता है।

नवकार का स्मरण कोई भी समय किसी भी परिस्थिति में कर सकते हैं।

शुभ ध्यान रहे इसलिए मरते समय नवकार सुनाया जाता है।

दिन बड़े होने से तात्पर्य है जीवन में अधिक सक्रियता। दिन में सूर्य का प्रकाश भी अधिक समय तक मिलता है, जो फसलों के लिये अत्यन्त आवश्यक है। हमारे ऋषियों-मुनियों ने इस अवसर (उत्तरायण) को अत्यन्त शुभ और पवित्र माना है।

शिशिर ऋतु में प्रकृति पर बुढ़ापा छा जाता है। वृक्षों पर पत्ते झड़ने लगते हैं। चारों ओर कोहरा छा जाता है। विक्रम संवत के अनुसार माघ और फाल्गुन शिशिर अर्थात् पतझड़ के मास है। इसका प्रारम्भ मकर सक्रान्ति से भी माना जाता है। इस शिशिर ऋतु में और फाल्गुन मास में कड़ाके की ठण्ड पड़ती है। ये ऋतुएं जीवन रुपी फलक के भिन्न-भिन्न दृश्य हैं, जो जीवन में रोचकता, सरसता और पूर्णता लाते है। दिशाएं धवल एवं उज्जवल होती है, ऐसा महसूस होता है जैसे वसुन्धरा और अम्बर एकाकार हो गये हो। ओस से कण-कण भीग जाता है। सूर्य में अमृत की प्रधानता रहती है, अतः शाक, फल, वनस्पति उस अवधि में अमृत तत्व को अपने में समेट कर पुष्ट हो जाते हैं।

शिशिर ऋतु में फूलों से पौधे लद जाते हैं। पुष्प युक्त पौधों की भरमार से बाजार में नर्सरी का कामकाज बढ़ जाता है। सब्जियों के पौधे तथा लताओं का उत्पादन चरम स्थिति में पहुंच जाता है। इस समय जठराग्नि तेज होने से यह सेहत बनाने का मौसम है।

मन की ग्रंथि:- स्वस्थ, प्रसन्न और सुखी रहने के लिए हमको इस बात का सतर्कतापूर्वक ख्याल रखना है कि- मन में कोई ग्रंथी यानी गांठ, कोई उलझन या कोई कुंठा न रखें, मन को बहते पानी की तरह साफ रखें और रुके हुए पानी की तरह सड़ने न दें। यदि हम मन को किसी भी कार्य, घटना, पदार्थ या विचार से उलझा कर रखेंगे, बांध कर रखेंगे तो यह ग्रंथी एक कुण्ठा बन जायेगी। गतः न शोचति पण्डितः के अनुसार बीती ताहि बिसार दे, आगे की सुध लेना ही बुद्धिमानी होती है। पर कई लोग ऐसा नहीं कर पाते और किसी न किसी विचार की उधेड़बुन में फंसे रहते है।

पाप की सजा भारी...!

*प.पू.आचार्यश्री अरूणविजयजी म.सा.

गतांक से आगे...!

मिथ्यात्व के 21 प्रकारः-

मिथ्यात्व की 10 संज्ञा, अभिग्रहिकारि 5 मुख्य भेद, 6 देव-गुरु-धर्मगत।

10+5+6 =21 इस तरह 21 प्रकार से मिथ्यात्व जो जगत में प्रचलित है वह अनादिकाल से है और अनन्त काल तक रहेगा । हमेशा मिथ्यात्वीयों की संख्या ही सम्यक्त्वीयों की संख्या से ज्यादा ही रही है। धर्मीयों की अपेक्षा अधर्मियों की संख्या ही ज्यादा ही रही है। यह संसार का स्वरुप ही ऐसा है। मिथ्यात्वी तो सभी है। पर इसमें से ही समझकर -जानकारी प्राप्त करके मिथ्यात्व वृत्ति को हटाना चाहिये और सम्यक्त्व को प्राप्त करना चाहिये। जैसे संसार में सभी बालक जन्म से तो अज्ञानी-नादान नासमझ ही है परन्तु 15-20-25 वर्ष तक उन्हें पढ़ा लिखाकर अच्छा विद्वान-होशियार बनाया जाता है । उसी तरह संसार में उत्पन्न निगोद से लेकर आज तक के सभी जीव मिथ्यात्वी ही है परन्तु गुरु भगवंतों से शास्त्रों से, सिद्धांत का सच्चा-यथार्थ सम्यग् स्वरुप समझकर उसे छोड़ने का प्रबल पुरुषार्थ करना चाहिये और सम्यक्त्व प्राप्त करना चाहिये।

आत्मादि पदार्थगत मिथ्यात्वः- जैसे देव-गुरु-धर्म का विचार किया वैसे ही जगत के दृष्टादृष्टा-अनेक तत्व है। उनका भी सही विचार करना चाहिये। अनेक विषय में भी जो अज्ञान है, जो विपरीत ज्ञान है, जो विपरीत श्रद्धा है, उसे तो हटाना ही चाहिये। ऐसे तत्वों का विचार करने पर मुख्य रुप से नौ तत्व प्रमुख है।

जीवादि मुख्य नौ तत्वः- 1-जीव-14, 2-अजीव-14:-धर्मास्तिकाय,अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, काल, पुद्गलास्तिकाय, 3-पुण्य-42, 4-पाप-82, 5-आश्रव-42, 6-संवर- 57, 7- निर्जना-12, 8-बध-4, मोक्ष-9

उपरोक्त तालिका के अंदर संक्षेप से जगत के मूलभूत सभी पदार्थो को नौ तत्वों की संख्या में समाविष्ट कर दिया गया है । इनका विस्तृत विवेचन यहां पर पृष्ठ मर्यादा के कारण संभव नहीं है। यदि इन नौ तत्वों का स्वतंत्र रुप से विवेचन करने लगे तो एक स्वतंत्र पुस्तक निर्माण हो सकती है। चार प्रकरणों में दूसरे प्रकरण नौ तत्व की पुस्तकें सुलभ है जिज्ञासु वर्ग वहां से जरुर अभ्यास करें।

यहां पर मिथ्यात्व संबंधी विषय है अतः इसी दृष्टिकोण से विचार-विमर्श करते हैं। विशेष जिज्ञासुओं को उपाध्यायजी यशोविजयजी महाराज के अध्यात्मसार ग्रंथ में लिखे मिथ्यात्व त्याग एवं सम्यक्त्वधिकार का विवेचन जरुर पढ़ना चाहिये। उसी तरह मुनिसुंदरसूरि विरचित अध्यात्म कल्पद्रमुक ग्रंथ में भी मिथ्यात्वत्यागाधिकार का जो सुंदर विवेचन है वह भी पढ़ना चाहिये। इस तरह अनेक ग्रंथों में, शास्त्रों में सुंदर विवेचन है। कहने का भावार्थ यह है कि आत्मा-मोक्षादि के अस्तित्व का एवं स्वरुप का यर्थार्थ ज्ञान प्राप्त करना चाहिये। विपरीत और विकृत ज्ञान मिथ्यात्व को पैदा करेगा । मिथ्यात्व बढ़ाएगा। सम्यक्त्व से दूर रखेगा। ऐसे मिथ्यात्व को जन्म देने वाली 6 प्रकार की वृत्ति बताई है। इन्हें विप्रतिपत्तियां कही है- वे 6 हैः-

नास्ति नित्यो न कर्ता च न भोक्तात्मा न निर्वृतः।
तदुपायश्कच नेत्याहुर्मिथ्यात्वस्य पदानिषट्॥

1-पंचमहाभूत से भिन्न कोई आत्मा है हो नहीं। 2- अनुत्यपन्न, अविनश्वर और एक स्थिरता के स्वभाव वाली आत्मा नित्य है । 3-आत्मा निष्क्रिय है अतः किसी प्रकार के कर्म का कर्ता नहीं है। 4-वैसे ही आत्मा कर्म के फल को भोगनेवाली भी नहीं है। 5- कर्म इत्यादि कुछ बंधता नहीं है अतः मोक्षादि भी कुछ नहीं है। 6- और जब मोक्ष ही नहीं है तो मोक्ष प्राप्ति का कोई उपाय-साधन या मार्ग कुछ भी नहीं है। इस तरह की विचार धारा, नास्ति भाव की मान्यता में मिथ्यात्व के 6 स्थान है। इन छः प्रकार का विचार धारा वाला मिथ्यात्वी कहलाए। पाश्चात्य देशों में आज भी एक ऐसा विचारक पक्ष चल रहा है। जो अपने आपको अज्ञानवादी Agnostic कहलाते हैं। अज्ञानी है इसी में उनको आनंद है और जगत में आत्मा-पुण्य-पाप-स्वर्ग-नरक-मोक्ष-परमेश्वर आदि कुछ भी नहीं है। ये उनकी मान्यता है। अतः वे खुश है। चार्वाक (नास्तिक) मतवादी विचारधारा तो संसार में लाखों के पास जन्मजात है। केवल कुछ भी है नहीं-किसी अदृष्टपदार्थ को सत्ता-अस्तित्व मानना ही नहीं, यह मान्यता और जो है उसे विपरीत रुप से मानना यह मिथ्यात्व अवश्य त्याज्य है। विचाराधारा को हकरात्मक POSITIVE बनाइए और फिर आत्मादि सभी पदार्थो का तर्कबद्ध युक्तियुक्त अभ्यास कीजिए सभी का सही स्वरुप ज्ञान में आएगा। ***''अन्नाणंखुमहाभयं''*** अज्ञान ही महा भयंकर पाप है। मिथ्यात्व ही मुल जड़ अज्ञान है। अतः सम्यग् ज्ञान की प्राप्ति के लिए प्रयत्न करना चाहिये।

मिथ्यादर्शनाविरति-प्रमाद-कषाय-योगा बन्धा हेतयः॥

तत्वार्थ के इस सूत्र में कर्म बंध के जो पांच कारण बताए है उसमें मिथ्यात्व सर्व प्रथम कर्म बंध का कारण है अतः निगोद की अव्यक्त अवस्था में पड़े हुए अनन्त जीवों को भी भयंकर कर्मो का बंध मिथ्यात्व के हेतु के कारण सतत होता है। मिथ्यात्व में कर्मो की स्थिति भी बड़ी लम्बी-लम्बी बंधती है। और आज वही मिथ्यात्व की दशा हमारी भी रही तो फिर क्या फर्क पड़ा ? और जहां तक मिथ्यात्व रहेगा वहां तक कर्म बंध का लम्बा संसार चलता ही रहेगा। इसीलिए मिथ्यात्व शल्य को 18 पापस्थान के क्रम में 18 वें क्रम पर बताया गया है। हृदय में तीर या पैर के कांटे की तरह आत्मा में यह मिथ्यात्व शल्य की तरह पड़ा है। कांटा आपको ठीक तरह से चलने नहीं देगा उसी तरह मिथ्यात्व का यह शल्य सही तरीके आत्मादि पदार्थ मानने-समझने नहीं देगा और जब तक कोई जीव आत्मादि पदार्थो को सही तरीके से मानेगा, जानेगा ही नहीं वहां तक आचरण कैसे करेगा ? क्योंकि धर्म क्या है ? जो तत्वज्ञान के सिद्धांत है उन्हीं की आचरणा धर्म है। अतः मिथ्यात्व आत्मा के अंदर एक शल्य (कांटे) के रुप में है। यही परम रोग है, परम अंधकार रुप है। अर्थात अज्ञान रुप है। यही मिथ्यात्व आत्मा का शत्रु है। आत्मघात करने वाला यही परम शस्त्र-अस्त्र है। आत्मा के लिये तो यही परम नरक है। परम दौर्भाग्य है, परम दारिद्र है, परम संकट है। परम कांतार और महा दुर्भिक्ष भी यही है। अतः

स्वाध्यायेन गुरोर्झक्त्या, दीक्षया तपसा तथा।
येन केनोद्यमेनैव, मिथ्यात्वशल्यमुद्धरेत ॥

स्वाध्याय-अध्ययन से, गुरु भक्ति से, दीक्षा से तथा तपश्चर्या से इत्यादि जिस किसी भी उपाय से मिफ्यात्व के इस शल्य को निकालना ही चाहिये। सूई से जैसे किसी भी रीति से कांटा तो पैर में से निकालना ही चाहिये, वैसे ही आत्मा में फंसे हुए इस कांटे को तो निकालना ही चाहिये। येन केन उपायेन भी निकाल के ही छोड़ना चाहिये। एतदर्थ यथा प्रवृत्तिकरण, अपूर्वकरण और अनिवृत्तिकरण की प्रक्रिया जानकर अपूर्व शक्ति लगानी चाहिये। सच्चे तत्वज्ञान को जानना चाहिये- और सम्यग् दर्शन, सम्यग् श्रद्धा अर्थात सत्य तत्व की श्रद्धा धारण करनी ही चाहिये।

सभी जीव मात्र मिथ्यात्व का त्याग करके सम्यग् श्रद्धा धारण करके मोक्ष को प्राप्त करें यहीं शुभ मनोकामना...!

(आगे और भी है...!)

प्रभु-प्रेम छिपा नहीं रहता

प्रभु का प्रेम चन्द्रहास तलवार जैसा है। कहते है कि चन्द्रहास तलवार इतनी तीक्ष्ण होती है कि म्यान को भी काट देती है, इसलिए चन्द्रहास तलवार हमेशा म्यान मुक्त ही रहती है। प्रभु-प्रेम भी ऐसा ही है। वह गुप्त नहीं रह सकता। किसी न किसी रुप में प्रगट होता ही है।

प्रभु के प्रति प्रेम याने अनंत के प्रति प्रेम। समग्र अस्तित्व के प्रति प्रेम।

यह प्रेम कहीं ज्ञान रुप से, कहीं तपरुप से, कहीं परोपकार रुप से तो कहीं कोई दूसरे रुप से प्रकट होता है।

प्रभु का सच्चा भक्त जीवों का अवश्य मित्र होता है, अपनी आत्मा के प्रति अवश्य प्रमाणिक होता है।

जगत के जीव उसे भगवान का ही परिवार लगता है। हरेक जीव में उसे शिव के दर्शन होते है। भगवान अगर सूर्य है तो जगत के सभी जीव किरणें है। भगवान अगर फूल है तो सभी जीव पंखुड़ियां है। वास्तव में तो इससे भी अधिक है। किरण कभी सूर्य नहीं बनता, पंखुड़ी फूल नहीं बनती, लेकिन जगत के जीव भगवान बन सकते हैं। जीव और शिव में कुछ भी भेद नहीं है मात्र आवरण और अनावरण का ही भेद है। शिव (भगवान) अगर वृक्ष है तो जीव बीज है, शिव अगर घट है तो जीव मिट्टी है, शिव अगर वस्त्र है तो जीव रुई (कपास) है, शिव अगर प्रतिमा है तो जीव पत्थर है। पत्थर, रुई, मिट्टी और बीज में क्रमशः प्रतिमा, वस्त्र, घट और वृक्ष की संभावना है उसी तरह हरेक जीव में शिव (भगवान) की संभावना है- ऐसी दृष्टि जिसकी खुल जाये वह अवश्य जीवों के साथ मैत्री निभानेवाला होगा ? उसकी मैत्री, उसकी करुणा, उसका सरल व्यवहार देखकर ही लोगों को लगेगा कि यह प्रभु-प्रेम से रंगा हुआ है।

कस्तुरी की सुगंध को छिपा नहीं सकते। अंगुली से सूर्य का प्रकाश रोक नहीं सकते। घास से मेरु ढक नहीं सकते उसी तरह अंदर प्रकटित प्रभु का प्रेम ढक नहीं सकते। किसी न किसी रुप तो प्रगट होगा ही !

लोगस्स की आराधनाः- ***''लोगस्स कल्प'' में प्रथम गाथा पूर्व दिशा में जिनमुद्रा में 14 दिन उसके बीज मंत्रों सहित 108 बार गिनने का विधान है। तदनुसार गिनने से और उसके उपसंहार रुप छठी गाथा बैठकर 108 बार गिनने से एक प्रकार की अद्भूत शांति की अनुभूति होती है।***

समकित क्या है ?

✽ पं. गुणसुंदर विजयजी गणी म.

''अरिहंतों मह देवो, जावज्जीवं सुसाहुणो गुरुणो ।
जिण पन्नतं तत्तं इअ संम्मतं मए गहिअं ॥

अर्थात् अरिहंत मेरे देव है, सुसाधुजन मेरे गुरु है, जिनेश्वर भगवंत प्रणित धर्म तत्व है । इस प्रकार मैंने यावज्जीव-सदासर्वदा के लिए सम्यग् दर्शन का स्वीकार किया है।

✽ समकित के द्वारा ही जैन शासन में सही रुप में प्रवेश किया जा सकता है ।

✽ समकित के द्वारा ही जगत के समस्त द्रव्यों का-तत्वों का रहस्य समझ में आता है ।

✽ समकित के द्वारा ही तीर्थकर परमात्माओं के उपदेश को आचरण में रखने का सामर्थ्य प्रगट होता है ।

✽ समकित के कारण ही इस उपदेश का सुचारु रुप से उचित एवं सफल अमल होता है ।

✽ क्या है यह समकित अर्थात् सम्यग् दर्शन ? जैन शास्त्र उत्तर देता है:-

हम उस देव-गुरु-धर्म तत्व के विषय में विचार करें।

जैन धर्म किसी एक व्यक्ति को परमेश्वर-भगवान मानता नहीं है। अनादिकाल से चार गतिरुप संसार में भटकता हुआ जीव सम्यक् दर्शन-ज्ञान-चारित्रा की संपूर्ण आराधना के द्वारा कषायों से मुक्त होता है, घाति कर्मो से मुक्त होता है, वीतराग दशा को प्राप्त करता है। सर्वज्ञदशा-सर्वदर्शिता को प्राप्त करता है, जिन-वीतराग-सर्वज्ञ बनता है और वही आत्मा जब संपूर्ण कर्मरहित बनती है, देह-मन-वचन-पुद्गल से शाश्वत रुप से मुक्त बनती है तब सिद्ध परमात्मा बनती है।

अष्टमहाप्रतिहार्य की शोभायुक्त ज्ञानादि चार अतिशययुक्त अर्थात् बारह गुणों से युक्त विहरमान जिन को तीर्थकर अरिहंत परमात्मा कहा जाता है । ऐसे अनंत अरिहंत-अनंत सिद्ध भगवंत भूतकाल में हुए है, वर्तमान में विद्यमान है तथा भविष्य में अनंतानंत होंगे।

अरिहंत भगवंत धर्मशासन की (तीर्थ की) स्थापना करते है, अतः वे तीर्थकर हैं । इसमें वे जगत को यथार्थ तत्व का ज्ञान तथा मोक्ष मार्ग प्रदान करते हैं तथा साधु-साध्वी-श्रावक-श्राविका स्वरुप चतुर्विध संघ की स्थापना करते हैं। क्रमशः आयुष्य समाप्त होने पर शेष वेदनीय आदि अघाति कर्मो का क्षय करके मोक्ष प्राप्त करते है तब वे सिद्ध बनते हैं। अरिहंत में चार घाति कर्मो के क्षय के कारण चार गुण तथा सिद्ध प्रभु में चार घाति+चार अघाति अर्थात् आठ कर्मों के क्षय के कारण आठ गुण होते हैं, फिर भी अरिहंत भगवंत प्रथम पद पर तथा सिद्ध भगवंत द्वितीय पद पर है, यह इस कारण से कि श्री अरिहंत प्रभु के उपदेश से ही अन्य भव्य जीव भी मोक्षमार्ग की आराधना कर सर्वकर्म क्षय करके सिद्ध होते हैं । अतः सबसे महान उपकारी होने के कारण वे पंच पंचमेष्ठिपद में प्रथम पद पर विराजित हैं।

गुरुतत्व अर्थात् जो जिनाज्ञा प्रतिबद्ध है, पंचमहा व्रतधारी है, रात्रि भोजन से विराम प्राप्त है, जिन्होंने साधु-दीक्षा ली है जो, भव्य जीवों को तत्व अर्थात् सत्य स्वरुप पदार्थों का उपदेश देते है वे गुरु है। वे स्वयं कर्मो से-कषायों से मुक्ति प्राप्त करने हेतु साधना करते हैं और योग्य जीवों को मुक्ति के उपाय बताते हैं। वे वीतराग, सर्वज्ञदेव के मार्ग का अनुसरण करते हैं। जो पंचागी जिन आगमों को सत्य स्वरुप में स्वीकारते हैं।

धर्मः- विश्व के प्रारंभिक-प्राथमिक योग्यतावाले जीवों से लेकर क्रमशः सर्वोच्च कक्षा तक पहुंचे हुए समस्त जीवों के लिए हितकारी तथा जिसका पालन किया जा सके ऐसी विविध कक्षा की साधना दिखानेवाला, विश्व का यथास्थित स्वरुप समझानेवाला समस्त विश्व के लिए ग्राह्य हों ऐसे सर्वव्यापी नियम प्ररुपित करनेवाला, वीतरागता, सर्वज्ञता, सत्यवादिता आदि विशेष गुणों को धारण करनेवाले परमात्मा द्वारा प्ररुपित, समस्त विश्व के युक्तासिद्ध और वास्तविक रुप से विद्यमान तत्वों पर प्रकाश डालनेवाला विश्व की दुःखद समस्याओं का हल हो जिससे खोजा जाय ऐसे स्यादवाद अर्थात् अनेकांतवाद आदि सिद्धांतों तथा अहिंसा, अपरिग्रह आदि का आचार मर्यादाओं का परिदर्शन करानेवाला है जैन धर्म । राग-द्वेष जेतु जिन ने बनाया हुआ धर्म है ''जैन धर्म।''

इस प्रकार के देवत्व, गुरुतत्व तथा धर्मतत्व का स्वीकार करनेवाले- माननेवाले, व्यक्ति के पास- उसके हृदय में समकित अर्थात् सम्यग्दर्शन होता है। समकित अर्थात् मोक्ष की ओर जानेवाला मोक्ष की ओर आत्मा को ले जानेवाला सही मार्ग, पर रुचि सही आदर्श, सही लक्ष्य, सच्चा विश्वास सच्ची श्रद्धा, सच्ची रुचि, सच्ची इच्छा और उचित समझ।

काल, स्वभाव, भक्तिव्यता, पूर्वकर्म का उदय और पुरुषार्थ, ये पांच कारण जब एकत्रित होते हैं, तब कार्य होता है, ऐसा माननेवाले के अंतःकरण में समकित होता है। जो ऐसा नहीं मानता है और किसी एक-दो-तीन या चार कारणों से कार्य होना संभव है ऐसा मानता है उसके पास समकित नहीं हो सकता।

यह समकित परमार्थ का बोध करानेवाला है। यह समकित सम्यक् चारित्र धर्म का मूल है। यह समकित, धर्म-नगर का प्रवेशद्वार है, धर्ममंदिर की बुनियाद है, धर्म का भंडार है, धर्म का आधार है, धर्म को चिरस्थाई बनाने का सुंदर पात्र है। इस समकित की उपस्थिति में ही दान-शील-तप आदि की क्रिया का मोक्ष श्रावक बन सकता है।

जीव को संसार में भटकानेवाले आठ कर्म हैं। इन आठ कर्मों में सर्वाधिक प्रबल कर्म है- **''मोहनीय कर्म।''** उसके दो विभागों में से एक विभाग है- **''दर्शन मोहनीय कर्म''** और दूसरा विभाग है- **''चारित्र मोहनीय कर्म।''** इस दर्शन मोनहीय के क्षय से, क्षयोपशम से, उपशम से आत्मा में सर्वज्ञ प्रणीत तथ्यों के प्रति श्रद्धा विषयक जो परिणाम उत्पन्न होता है उसका नाम है सम्यग्दर्शन। साथ ही अनंतानुबंधी क्रोधित चार कषाय रहितता जरुरी है।

इस समकित के छः स्थानक विशेष जानने योग्य, श्रद्धा करने योग्य है। समकित जिसमें स्थिर हो उसका नाम है स्थानक। ये इस प्रकार हैः-

1- आत्मा है। 2- आत्मा नित्य है। 3- आत्मा कर्मो का कर्त्ता है। 4- आत्मा भोक्ता है अपने कर्मो की। 5- आत्मा का मोक्ष संभव है। 6- मोक्ष प्राप्ति के उपाय है।

अब इसे कुछ विस्तार से समझें :-

1- आत्मा देह-मन-वचन-पुद्गल से पूर्णतः भिन्न ज्ञान-दर्शन की स्फुरणायुक्त चैतन्य लक्षणयुक्त होती है। दूध और पानी की भांति अग्नि और लोहे की भांति वह भले ही पुद्गल के साथ एकाकार-सी दिखाती हो, फिर भी वह उससे भिन्न-अलग ही है।

2- यह आत्मा नित्य है। उसका नवसर्जन किया नहीं जा सकता और उसका सर्वदा-सर्वथा नाश भी नहीं हो सकता। वर्तमान समय में जाति स्मरण ज्ञान के (पूर्व जन्म की स्मृति के) अनेकानेक देशविदेश के किस्से आत्मा की नित्यता के द्योतक है। नवजात शिशु की स्तनपान की इच्छा-प्रक्रिया, आत्मा की नित्यता, प्रतीति रुप है। अकबर को पूर्व का संन्यासी के भव का स्मरण हुआ था वह बात तो प्रसिद्ध है।

3- आत्मा को मन-वचन-काया के योगों के द्वारा कर्म के साथ संबंध होता है अतः आत्मा कर्म की कर्त्ता है।

4- बांधे हुए कर्म शुभ अथवा अशुभ फल देते है, अतः उन कर्मो का भोक्ता भी आत्मा ही है। अन्य किसी के द्वारा उपार्जित शुभाशुभ कर्म किसी अन्य व्यक्ति को फल नहीं दे सकते। ''खाय भीम और टट्टी जाय मामा शकुनि''- ''करें कोई और भरे कोई'' ऐसा कर्मो के विषय में संभव नहीं है।

5- जहां आधिरुप मन के दुःख, व्याधि रुप झंझटें शरीर के दुःख तथा बाह्य उपाधि का नामनिशान भी नहीं है और केवल आत्मिक आनंद का महासागर है ऐसा कर्म-कषाय मुक्ति का स्थान अर्थात् मोक्ष है.... और....

6- ऐसे मोक्ष की प्राप्ति के उपाय अर्थात सम्यक-दर्शन-ज्ञान-चारित्र स्वरुप मोक्ष मार्ग भी अवश्य-निश्चित रुप से है।

अति दुर्लभ मनुष्य भव....

मनुष्य भव दुर्लभ क्यों ?

शास्त्रों में बताया है दुर्गम 11 घाटियों को पार करने के बाद मनुष्य भव मिलता है। 1- पृथ्वीकाय 2- तेयकाय 4- वायुकाय 5- वनस्पतिकाय 6- बेन्द्रिय 7- तेइन्द्रिय 8- चतुरिन्द्रिय 9- तिर्यच पंचेन्द्रिय 10- नरक 11-देव। इन 11 घाटियों को पार करने के बाद कर्मो की विशुद्धि होते-होते जब महान पुण्य का उदय होता है तब मनुष्य भव की प्राप्ति होती है।

पुण्य उदय से मनुष्य भव मिल गया तो भी 10 बोलों का मिलना भी अति दुर्लभ है जिनको पाने के लिए देवता भी तरसते हैं:- 1- मनुष्य भव 2- आर्य 3- उत्तम कुल 4-पांचों इन्द्रियाँ 5- लम्बा आयुष्य 6- निरोगी काया 7- साधु-संतों का सहयोग 8- जिनवाणी श्रवण 9- जिनवाणी पर श्रद्धा।

धर्म का अधिकारी

अधिकार-यह अपने इस स्वाध्याय ग्रंथ का मौलिक तत्व है, इसमें मानव जीवन का रहस्य समाया हुआ है। मानव जीवन यानि जो जीवन हम जी रहे हैं वह ? या जिसका महापुरुषों ने दर्शन किया है, वह ?

इस ग्रंथ के पठन, मनन, श्रवण द्वारा हम यह जान पायेंगे कि महापुरुषों के जीवन और हमारे जीवन में क्या फर्क है ? सच्चे मानव जीवन की प्राप्ति अति दुर्लभ है। दूसरे प्राणियों के साथ जब मनुष्य की तुलना करेंगे तभी हमें मनुष्य जीवन की सार्थकता का पता चलेगा !

व्यक्ति पैसे को ही केन्द्र बिन्दु मानकर स्वयं को सुखी मानता है, परन्तु अंधे, लंगड़े धनी इंसान को यदि पूछा जाए तो शायद वे अपने आपको सुखी नहीं मानेंगे, पैसा होते हुए भी। जीवन में पांच इन्द्रियों की पटुता के साथ-साथ अहिंसक कुल मिलना अत्यन्त दुर्लभ है। अहिंसक संस्कृति में पले इन्सान का हृदय खून के छींटे देखकर ही द्रवित हो जाएगा, क्योंकि उसका लालनपालन ही अनुकंपामय संस्कृति में हुआ है। भौतिकवाद में वही व्यक्ति मुग्ध होकर घुमता है, जिसे इस संस्कृति का भान नहीं।

मद्रास के एक न्यायाधीश के यहां गोरा सुंदर बालक जन्मा। उसके मुख को देखकर सभी प्रसन्न होते थे, परन्तु उसके नीचे के सभी अंग अपंग थे, उसका जीवन यातनामय निरर्थक हो गया था। इसलिए पंचेन्द्रियों की परिपूर्णता प्राप्त करना महान पुण्योदय है। पंचेन्द्रियों की पूर्णता के साथ विनय विवेक होना भी आवश्यक है। इसलिए ज्ञानियों ने कहा है कि- प्राप्त साधनसामग्री का जितना सदुपयोग करोगे, उतना ही विकास अच्छा होगा, दुरुपयोग से विनाश होगा, विवेक ही सफलता की चाबी है।

सुन्दर देखना, बोलना, विचार करना और सत्कार्य करना, यह जीवन का आशय होना चाहिए। जब तक हमें मृत्यु के दर्शन नहीं होते, तब तक हम अपने जीवन में न करने योग्य काम करके अपना जीवन व्यर्थ गंवा बैठते हैं।

यह मृत्यु एक ऐसा दंड है, जो न झुकनेवाले को भी झुका देती है, यह ऐसी शिक्षक है जो बेहोश को होश में ला देती है। मृत्यु को समझने वाला यह समझता है कि जीवन-मृत्यु के दो अखंड छोर है। जन्म से पहले भी जीवन था और मृत्यु के बाद भी जीवन होगा।

अज्ञान व्यक्ति अपने बुजुर्गों, गुरुजनों की अवहेलना करता है, अकड़कर घूमता है, पर ऐसे व्यक्ति का सर एक दिन मृत्यु झुका देती है और अहंकार की मौत हो जाती है।

यहां एक विचारणीय प्रश्न है, ''दुनिया में बड़ा कौन ? मानव या उसकी परछांई ? उसे कैसा जीवन जीना चाहिये ? अपने अंदर बसे हुए चेतन को पहचान कर या परछाई के अनुकूल बनकर ?'' यह एक बहुत ही गहन अबूझ पहेली है।

मानव और परछाई दोनों को इसका जवाब नहीं मिल पाया, तब दोनों एक सूने मंदिर में गये, वहां मूर्ति नहीं थी प्रश्न की प्रतिध्वनि थी, हाथ जोड़कर पूछा, ''देव आप ही बताईये कौन बड़ा ? मानव या परछांई ?'' आवाज आई, शांत हो जाईये, कोई आ रहा है, मानव और परछांई एक कोने में छिप गये।

तभी एक धनवान आया और बोला- मेरे पास पैसे थे, तब सभी मेरे स्वजन थे, आज पैसेरुपी परछांई नहीं है, तब सभी मुझसे दूर हो गये हैं।

थोड़ी देर बाद एक सत्ताधीश आया, मेरे हाथ में जब सत्ता थी, सब मुझे सलाम करते थे, मेरे इर्द गीर्द घूमते थे, आज सत्ता चले जाने पर मेरी कोई कीमत नहीं ? क्या वाकई दुनिया सत्ता की परछांई को ही नमन करती है ? तभी एक धानिक आया, कल तक उसे, लखा कहते थे, आज उसे लक्ष्मीचंद कहकर सभा में आगे बैठाते हैं, उसकी वाह-वाह करते हैं। उसने नमन करके कहा, हे मंदिर के देव, तुझे विनती करता हूं, मेरी संपत्ति की परछाई को अमर रखना।

जगत में यही नजारा देखने को मिलता है, इन्सान अपने आसन सिंहासन से बड़ा माना जाता है। अपने सच्चे आंतरिक अस्तित्व को दिखाकर नहीं जीता, तब उसकी परछांई उससे बड़ी बन जाती है।

परछाई तो बाह्य वस्तु है, सत्य तो अपना अस्तित्व है परन्तु जीवन में उल्टी गंगा बह रही है। इन्सान से अधिक उसके श्रृंगार की कीमत बढ़ गई है।

जीवन के दो विभाग है- बाह्य और अंतर। बाह्य खजाना चाहे जितने अधिक हों, उससे सच्चा आनंद नहीं मिल सकता, लोग आकर्षित होंगे पर जब तक आंतरिक ऋद्धि से हम सम्पन्न नहीं होंगे, सात्विक सुख की प्राप्ति दुर्लभ है। आंतर वैभव ऐसा है, जिसे कोई नहीं छीन सकता।

अंतर का खालीपन बेचैनी बढ़ाता है, व्याकुल करता है, यह एक खण्डहर जैसा है, जिसमें भय रुपी भूत परिक्रमा करते हैं। हमें अपने हृदय को समृद्ध रखना है, अपनी आंतरिक समृद्धि का एहसास दिलाए ऐसे व्यक्तित्व की जरुरत है, ऐसे मनन, चिंतन और ध्यान की जरुरत है, ताकि हम अपनी आंतरिक समृद्धि को पहचान सकें, अनुभव कर सकें।

कई लोग भूतकाल में ही जीते हैं। यह तो बासी भोजन करने जैसी बात है। वर्तमान ही उपयोगी है, हां अपने पूर्वजों के सद्‌गुण जरुर ग्रहण कर सकते हैं। उधार लेकर जीवन जीना चर्चास्पद बनता है। अपनी जरुरतें मर्यादित करके जीने वाले के समान कोई सुखी नहीं जगत में।

साधु सांसारिक वस्तु किसी को देते नहीं और नहीं लेते हैं, तो उनके जैसे निश्चिंत दूसरे कौन हो सकते हैं ?

मानव के मन में आज शांति नहीं, स्थिरता नहीं चिंतारुपी चिंता उसे खा रही है, क्योंकि इन्सान अपनी सच्ची समृद्धि को भूल कर परछांई का विस्तार कर रहा है। इसमें केवल धर्म ही इन्सान के चैतन्य को शांत, सौम्य और निश्चिंत बनाता है, जो धर्म का पालन करते हैं, धर्म उनका पालन करता है।

जितनी मौलिक साधनों की वृद्धि उतनी दुःख की भी वृद्धि, जितने साधन घटाऐंगे, शांति बढ़ेगी, यदि यह दृष्टि नहीं अपनाएंगे तो कभी अपने ही साधन खंजर बन जाएंगे।

जीवन में दुःख कहां से आते हैं ? गया हुआ सुख आंसुओं से वापस नहीं आता, इसलिए तत्वज्ञानियों ने जीवन की गहराईयों को टटोलकर हमें एक नई दृष्टि प्रदान की है। दुःख आया तो क्यों आया ? किसने खड़ा किया ? यह सोचने पर पता चलेगा कि अपने कल्पित सुख में से दुःख का सर्जन हुआ है, प्राप्त साधनों का वियोग होने पर दुःख आ घेरते हैं। कल्पित सुख में विचरने से अल्प आनंद प्राप्त होता है, अल्प समय के लिए, उन साधनों के अभाव में, दुःख महसूस होता है, बेचैनी बढ़ती है, क्योंकि इस सुख का आधार क्षणविनाशी वस्तुओं पर निर्भर था।

आनेवाले दुःखों के लिए दूसरों को जिम्मेदार ठहरना उचित नहीं है। जब हम अपने निज दोष दर्शन करने की शुरुआत करेंगे, तभी सही रोशनी प्राप्त होगी। प्रभु श्रीमहावीर के कानों में कीलें ठोंके गये, तब भी भगवान ने किसी को दोषी नहीं माना, उन्होंने सोचा पूर्व भवों में मैंने शैय्यापालक के कानों में शीशा डलवाया तो आज यह मेरे कानों में कीलें ठोक रहा है। दूसरों को दुःख देने में सुख माना था, अब समतापूर्वक दुःख सहन कर लो। यह एक महान शिक्षा है, साधनों से सुख के मोह में भ्रमित होकर जीने से जीवन शांत समाधिमय कैसे हो सकता है ?

एक उदाहरण याद आ रहा है। एक राजा ने अपने नाई को जरी से कसीदाकारी की हुई शॉल दी। गांव में एक आदमी के पुत्र की शादी का जुलूस निकलने वाला था, उस आदमी ने नाई से वह शॉल मांगी और दुल्हें को ओढ़ाई। नाई को कहा गया, वह किसी को नहीं बताए, मगर नाई के पेट में भला कोई बात टिक सकती है ? उसने सबसे कह दिया- दुल्हे की शॉल मेरी है। हालांकि शाल बहुत सुन्दर थी, तारीफ के काबिल थी, पर इससे क्या दुल्हे के बाप की ईज्जत बढ़ी या कम हुई ?

अपने जीवन में भी अधिकतर वस्तुएं किराये की है, एक दिन इन्हें छोड़कर हमें जाना है, इनसे आत्मगौरव कैसे बढ़ सकता है ? स्वस्थ मन से अंतकरण की गहराईयों में डूब कर चिंतन किया जाए तभी जीवन की गूढ़ता का दर्शन हो सकता है। अपनी सच्ची आत्मिक संपत्ति से ही शांति प्राप्त हो सकती है।

हीरे का प्रकाश उसके सभी पासों में रहता है, ऐसे ही एक महान शक्ति हमारी आत्मा में छुपी हुई है। सत्य, अहिंसा आदि का अंतर-प्रकाश, बाहर की चकाचौंध से ज्यादा प्रभावी है। हमारा कार्य है इस महान शक्ति को प्राप्त करना। सामान्य मानव इन्द्रियों को दास बनकर जीता है, महापुरुष इन्द्रियों को दास बनाते हैं। यदि हम प्रयत्न करें तो हमारे अंदर भी धीरे-धीरे यह शक्ति प्रकट हो सकती है। जंग वाले बर्तन का जंग दूर करने के लिए उसे घिसना पड़ता है, मन को स्वस्थ रखने के लिए मार्जन करना पड़ता है।

व्यक्ति जन्म से महान नहीं, अपने पुरुषार्थ से महान बनता है, आंतरिक प्रकाश को बाहर लाने का प्रयास हमें करना है। जैसा संग वैसा रंग, इन्सान आदतों का गुलाम है, अब आत्मा की अनंत शक्ति को प्राप्त करने और ज्ञान प्रकाश बाहर लाने के लिए हमें भी आदत डालनी होगी, यानि कि हमें हाथ धोकर पीछे प ड़ जाना चाहिये कि हम अपनी आत्मा के सौंदर्य को वैसे प्रप्त करें।

यह बात हमारे मन में स्पष्ट हो जानी चाहिए कि देह से आत्मा भिन्न है। आत्मा अनंत शक्ति की धनी है, कोई योग्य निमित्त पाकर आंतरिक द्वार खुल जाते हैं और हमें अपने सच्चे स्वरुप की पहचान हो जाती है फिर हम इन्द्रियों के गुलाम नहीं

रहते और फिर लगने लगता है कि अपार भवसागर में आत्म तत्व की पहचान कराने वाला यह मनुष्य जन्म तो अति दुर्लभ है। जिस तरह गरीब इन्सान हीरे पन्ने नहीं खरीद सकता है, वैसे ही गुणविहीन व्यक्ति धर्मरुपी रत्न की प्राप्ति नहीं कर सकता। जिस आत्मा के पास गुणों की समृद्धि, विवेक का खजाना और पुण्य का कोष होगा, वहीं धर्म रुपी रत्न को पहचान सकेगा। इस प्रकाशमय तत्व की खोज करने के लिए बुद्धि, गुण तथा पुण्योदय आवश्यक है।

कहते है कि चिंतामणी रत्न सब रत्नों में कीमती है, इसके रहते, दूसरे रत्नों की कोई कीमत नहीं। मानव जीवन में भी धर्मरुपी रत्न का स्थान अमूल्य चिंतामणि रत्न जैसा ही है।

सच्चा मुनिः- सच्चे मुनि छः विशेषणों से युक्त होते हैं, इस प्रकार शास्त्रकारों ने कहा हैः-

1- मग्गणुसारीः- चारित्र मोहनीय के क्षयोपशम से सहज रुप से ही तत्वानुकूल प्रवृत्ति करनेवाले होते है, मार्गानुसारी होते हैं।

2- सद्धोः- शास्त्रविहित अनुष्ठान करने की रुचिवाले होते हैं, श्रद्धालु होते हैं।

3- पन्नवणिज्जोः- प्रज्ञापनीय होते हैं। मतलब कि स्खलना हो जाने पर गीतार्थ की सत्य बात उसी वक्त स्वीकार कर लेते हैं। सत्य को समझने की ओर स्वीकारने की जिनमें योग्यता हो वे ''प्रज्ञापनीय'' कहे जाते हैं।

4- कियावरोः- क्रिया में तत्पर होते हैं। पंचाचार आदि मोक्ष-साधक अनुष्ठानों के लिए सदा तैयार होते हैं।

5- गुणरागीः- स्व-पर के गुणों के प्रति अनुरागी होते है। वे स्व-गुणों के प्रति मात्सर्य-रहित प्रमाद रखते हैं।

6- सक्कारंभसंगओः- अपनी शक्ति-पात्रता आदि के अनुरुप अनुष्ठान का आरंभ करनेवाले होते है अर्थात् अशक्य में प्रवृत्ति नहीं करते है और शक्य में प्रमाद नहीं करते हैं।

क्षयोपशम की मंदता से श्रुतज्ञान की शायद मंदता हो, फिर भी ये छः गुण हो तो मुनि क्षपकश्रेणि में पहुंचकर केवल ज्ञान पा सकते हैं। इस पर माषतुष आदि अनेक दृष्टांत है।

ये छहों गुण गुर्वाज्ञा-पालन को दिखाते हैं गर्वाज्ञा-पालन हो तो ही ये छः गुण हो सकते हैं।

विश्व में सामान्य वस्तु प्राप्ति के लिए भी, इच्छा तथा संकल्प बल जरुरी है, तो फिर अचिंत्य चिंतामणि रत्न की प्राप्ति हेतु केवल इच्छा से काम नहीं चलेगा, दृढ़ संकल्प होना जरुरी है।

दुनिया में कुछ भी अप्राप्य नहीं है, यदि इच्छा तथा संकल्प बल दृढ़ हो तो, जो चाहो मिल सकता है। जितनी इच्छाशक्ति प्रबल उतनी ही सफलता अधिक, आत्मा सर्व शक्तिमान है, वह चाहे तो तीर्थंकर भी बन सकती है।

पर इसके लिए पात्रता चाहिये, गडरिये को चिंतामणी रत्न मिला था, पर उसका मूल्य उसने नहीं जाना तथा कौंए को उड़ाने के लिए फेंक दिया। ऐसा भी एक वर्ग है, लोगों का दूसरा वर्ग जयदेव जैसा है, जो अपना सर्वस्व त्याग कर आराधना करता है और धर्म रत्न को प्राप्त करता है। हमें गड़रिये जैसा नहीं, जयदेव जैसा बनकर अपने जीवन में आराधना, साधना करके धर्म रत्न को प्राप्त करके धन्यतापूर्वक, मानवजन्म सार्थक करना है।

मृत्यु का भय

जो पुण्यशाली पुरुष काल की अनिश्चिंतता को समझकर अपने भविष्य को कल्याणमय बनाने का प्रयत्न समय रहते ही कर लेते है, उन्हें मृत्युकाल का भय नहीं रहता। किसी भी प्रकार का शोक और संताप उनके हृदय में जन्म लेता। अपितु स्वभाव से शांत सरोवर में अवगाहन करते हुए वे मृत्यु का स्वागत एक मित्र की भांति करते हैं। जिस प्रकार का किसान फसल पकने पर आनंद का अनुभव करता है उसी प्रकार पुण्यवान व्यक्ति भी अपना जीवन-रुपी खेत पक जाने पर अनिर्वचनीय उल्लास का अनुभव करता है। ऐसा इसी कारण होता है कि उसने अपना समस्त जीवन पापों से दूर रहकर व्यतीत किया है। यद्यपि प्रत्येक प्राणी मौत से डरता है और उससे छुटकारा पाने की निष्फल कोशिश करता है, पर केवल डरने से या जड़ी-बूटी खाने से तो मृत्यु लौटकर जा नहीं सकती। उससे छुटकारा तो तभी मिल सकता है जबकि मनुष्य इसे जीत ले। जो व्यक्ति अपने जीवन में क्षण-मात्र का भी प्रमाद किये बिना आत्म साधना में लीन रहता है अर्थात् अहिंसा, संयम और तपरुप धर्म की आराधना करता है, वह अपने समस्त कर्मो का क्षय कर लेने के कारण पुनः इस संसार में जन्म नहीं लेता और जन्म न लेने के कारण मरण के भय से भी छुटकारा पाया जाता है।

न्यायालयों की निगाह में जैन धर्म बहुत प्राचीन धर्म है

✼ 1927- मद्रास उच्च न्यायालय द्वारा air 1927 मद्रास 228 मुकदमें के निर्णय में ''जैन धर्म को स्वतंत्र, प्राचीन व ईसा से हजारों वर्ष पूर्व का मना।''

✼ 1939- बम्बई उच्च न्यायालय ने air 1939 बम्बई 377 मुकदमें के निर्णय में कहा कि ''जैन धर्म वेदों को स्वीकार नहीं करता है, श्राद्धों को नहीं मानता है व अनुसंधान बताते हैं कि भारत में जैन धर्म ब्राह्मण धर्म से पहले था।''

✼ बम्बई सरकार ने 19 अगस्त, 1948 को अपनी अधिसूचना में इस तथ्य को स्वीकार किया था यद्दपि जैनों पर हिन्दू लॉ लागू है परन्तु जैनों को हिन्दुओं के रुप में वर्णित नहीं किया जा सकता।

✼ 1951-बम्बई हाई कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश एम.सी. छगला और न्यायमूर्ति गजेन्द्र गड़कर ने याचिका - CWJC91/1951 पर यह निर्णय दिया कि- ''हरिजनों को जैनों के मंदिरों में प्रवेश करने का कोई अधिकार नहीं है क्योंकि वे हिन्दू मंदिर नहीं है, यह विदित है कि जैन हिंदुओं से भिन्न मतावलंबी है।

✼ 1954- उच्चतम न्यायालय ने AIR 1954 SC 282 के निर्णय में माना कि ''भारत में जैन धर्म व बौद्ध अपनी पहचान रखते हैं व वैदिक धर्म से भिन्न है।

✼ 1958- उच्चतम न्यायालय ने केरल शिक्षा बिल मामले में कहा कि- ''जैन समाज अल्पसंख्यकता प्राप्त करने के लिये उपयुक्त है।''

✼ 1963- उच्चतम न्यायालय ने 649 (V50 C101) निर्णय में कहा था हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई व जैनों में ब्राह्मण, बनिया, कायस्थ समुदाय के अलावा सभी समुदायों को सामाजिक व शैक्षिक रुप से पिछड़े माना गया है।

✼ 1968- कलकत्ता उच्च न्यायालय ने AIR 1968 कलकत्ता 74 के निर्णय में कहा कि ''जैन हिन्दू नहीं है केवल उनके फैसले हिन्दू लॉ के अनुसार किये जाते हैं।

✼ 1968- उच्चतम न्यायालय ने 74 (VSSC 14) के निर्णय में ''जैनों को हिन्दू नहीं माना।''

✼ 1975 उच्चतम न्यायालय ने AIR 1975CW 96 के निर्णय में ''जैनों को दिल्ली में अपने शिक्षण संस्थानों का प्रबंधन करने का निर्णय दिया था।

✼1976- दिल्ली उच्च न्यायालय ने AIR 1976 दिल्ली 207 के निर्णय में कहा था- ''संविधान का अनुच्छेद 25 जैनों को स्वतंत्र रुप से मानता है जो कि सर्वोच्च नियम है।''

✼ 1993- उच्चतम न्यायालय ने बाबरी मस्जिद मुकदमें के निर्णय में (1993 AIR 317) जैनधर्म को अन्य अल्प संख्यक धर्म की तरह हिन्दू धर्म से भिन्न माना था।

✼ 1995- उच्चतम न्यायालय ने AIR 1975, SC2089 के निर्णय में माना था कि- ''भारत में बौद्ध व जैन धर्म जाने पहचाने धर्म हैं जो ईश्वर के होने में विश्वास नहीं रखते।''

✼ 2003- उच्चतम न्यायालय AIR 2003 SC 724 में कहा कि- ''राष्ट्रीय गान में जैनों को प्रथक रुप से दिखाया गया है।

✼ 2006- भारतीय सर्वोच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति श्री एस.बी.सिन्हा और श्री दलवीर भण्डारीजी की खंडपीठ ने अपने एक फैसले में कहा कि- ''यह अविवादित तथ्य है कि जैन धर्म हिन्दू धर्म का हिस्सा नहीं है।'' (दैनिक हिन्दुस्तान, नईदिल्ली 24-08-2006)

आयंबिल से मधुप्रमेह Diabetes से मुक्ति

भरतभाई अंधेरी में रहते थे। डायबीटीस हमेशा 365 से 385 रहा करता। उच्च रक्तचाप High Bloodpressure भी 180 से 210 रहा करता था। चार वर्ष से प्रतिदिन दवाईयां लेनी पड़ती थी। डॉक्टरों ने कहा था- यह तकलीफ जीवनभर रहेगी और नियमित रुप से दवाईयां लेंगे तो ही ये तकलीफें कुछ कंट्रोल में रहेंगी।भरतभाई ने नवपदजी की तथा वर्धमान तप की ओली आरंभ कर दी ! परिणाम देखिये ! डायबीटीस और ब्लडप्रेशर ठीक होने लगा.... कुछ समय में नॉर्मल हो गया...! चार साल बीत गये। अब कोई तकलीफ नहीं है। इसके बाद तो इस धर्मानुरागी भरतभाई ने धर्मचक्र, बीस स्थानक तप, अट्ठाई आदि तप अत्यंत सुन्दर रुप से किये। दवाईयां तो चार वर्ष से पूर्ण रुप से बंद कर दी हैं।

इस सत्य कथा को पढ़ने के बाद आपके मन में हमारे सर्वश्रेष्ठ धर्म के प्रति श्रद्धा जाग्रत हुई या नहीं ? तो फिर पूजा इत्यादि धार्मिक क्रियाओं के द्वारा- अत्यन्त भावपूर्वक धर्ममार्ग पर चलकर-आत्मिक सुखशांति प्राप्त करने का प्रयत्न क्यों न करें ?

बिन सांप्रदायिकता

*पंन्यास श्री चंन्द्रशेखर विजयजी

भारत देश के प्रजासत्ताक संविधान में इस देश को बिन सांप्रदायिक रखने का सिद्धांत स्वीकार किया गया है। पहली शंका तो यह होती है कि बिनसांप्रदायिक क्यों ? बिनधार्मिक क्यों नहीं ?

मुझे लगता है कि ईसाई नामक धर्म (अगर वह बहुमत में हो तो उसे धर्म कहा जाय) को भारतव्यापी बनाने का है, इसलिए बिन धार्मिक नहीं कहा। वैदिक धर्म आदि अगर लघुमत में हों तो उन्हें ''संप्रदाय'' गिना कर उन्हें दूर रखने के लिए ''बिन सांप्रदायिक'' कहने में आया हो।

विश्व के स्तर पर बहुमत (ईसाईयों का) लघुमत (हिन्दूओं का) की बात जाने दो। भारतीय स्तर पर तो वैदिक (हिन्दू) धर्म बहुमत में है, इसलिए वही भारतीय प्रजा का राष्ट्रधर्म होना उचित है। संविधान में से उसे दूर कर भारतीय प्रजा को देव न बनते हुए दानव बनाने की बात लगती है।

भारतीय प्रजा में अनेक धर्म है। उनके सेवन से ही वह विश्व की महान प्रजा बनी हुई है। उन धर्मों का लोप किस तरह हो ? इस देश में धर्म के बगैर कोई बात हो नहीं सकती। धर्म के गौरव को प्राप्त करके ही भारतीय उन्नत मस्तक से रहते हैं।

''हर हर महादेव'' कहते हुए या, ''जय एकलिंगजी महाराज'' का जयकार करते हुए भारतीय सैनिकों को जीतने का काम किसी भी सेना के लिए नहीं था।

यतो धर्मस्ततो जयः
धर्मेणैय प्रजाः सर्वाः, रक्षन्ति स्म परस्परम्।
धर्मो रक्षित रक्षितः ॥
न तं बिना क्षपेतामर्थकामौ
धर्मेण हीनाः पशुभिः समानाः।

इत्यादि अनेक वाक्यों से भारत में धर्म तत्व का भरपूर महत्व गिना जाता है। बात ऐसी है कि धर्म का सेवन करनेवाला मनुष्य का पुण्यबल अति बढ़ता है, ताकि वह अनेकविध क्षेत्रों में अत्यंत आगे बढ़ता है और उसका शुद्धिबल भी खूब बढ़ता है। इससे अगर वह कितनी भी सत्ता या संपत्ति का मालिक हो जाए तो भी उसमें अनाचार, अहंकार आसक्ति आदि दोष प्रवेश पाते हैं।

भारत के बड़े बड़े महापुरुष जो कोई हो गए, वह सब धर्म सेवन के कारण हुए हैं।

आज के शिक्षित कहते हैं, धर्म झगड़ा करवाते है, इसलिए वह नहीं चाहिए, यह बात बिलकुल झूठ है।

कुछ धर्महीन लोग जानबूझकर धार्मिक कौमों में झगड़ा कराने के लिए आग लगवाते हैं। सहज है कि धर्म को अपने प्राण मानते हुए लोग धर्म पे अगर कोई हमला करता है तो कूद पड़ते हैं, लेकिन उससे उसे कौमवादी या झगड़खोर तो नहीं कहा जा सकता।

किसी कुत्ते को मार डालना हो तो उसे जनमत को अपनी ओर लाने के लिए उसे पागल करार देना पड़ता है, ठीक इस तरह प्रजाकीय जीवन में ओतप्रोत हो गए धर्म को खत्म करने के लिए ऐसे विधान करने पड़ते हैं।

भारतीय धर्म का एक भी धर्मशास्त्र बताइये जिसमें परधर्मियों के साथ झगड़ा करने की बात बताई गई हो। अरे.... यहां पर तो दुश्मन को भी चाहने की बात बताई गई है। सर्व के सुख की चिंता व्यक्त है। किसी का भी अहित मन से भी नहीं करने का प्रबोध दिया गया है।

ओ देशी-विदेशी गोरों ! भारतीय प्रजा का जबरदस्त जल उनके धर्मसेवन में है, इस बात का पता आपको चल गया है इसलिए आपने इस प्रजा को ''विनधार्मिक'' बनाने का संविधान में आदेश दिया है न ?

अब मैं बौखला गया हूं। मेरे अंदर दबी हुई बात किये बगैर मैं नहीं रह सकता कि आपका यह भय बिलकुल सही है कि भारतीय धर्म अत्यंत प्रचंड बल पैदा करनेवाले हैं। उसके साधक ऋषिमुनि गिरनार या आबु के पहाड़ों की गुहा में बैठकर प्रचंड बल हर एक के लिए सर्जन कर रहे हैं।

ओ गोरों ! कोन्वेन्ट-कल्चर से और लालच दिखाकर आप बड़ा धर्मातर करके राष्ट्रान्तर करने के लिए भले ही घमासान आगे बढ़ते चले जा रहे हों, पर अंत में तो आपकी भयानक पराजय आप निश्चित ही समझें।

हमारा धर्मबल ही हमारी बाजी को एक दशक में पलटा देगा। आपका अस्तित्व ही शायद तहसनस हो जाएगा। जब यह बल क्रोधित होगा तो आपका समुद्र हद छोड़देगा, आपके महानगर और औद्योगिक वसाहतों में भूकम्प आएगा। शायद चारों ओर आग लगी होगी, जंगलों में दावानल भड़क उठेगा।

आप सारे विश्व के बिन-ईसाई लोगों को खत्म करने निकले हैं। यह आपका अति उग्र पाप है। वही आपको नहीं छोड़ेगा। वही आपको खा जाएगा।

भले ही आप हमारी प्रजा को बिन साम्प्रदायिकता के नाम पर बिनधार्मिक बना कर ''पशु'' बना देना चाहते हो जिससे छुरे के एक झटके से उसे काट दिया जाए, पर आपकी यह मुराद वर नहीं आएगी। आपको इस बात का अंदाज तो आ गया है, इसलिए आपने सत्तर हजार धर्म गुरुओं को 31 दिसंबर 1999 के दिन दिल्ली में आदेश दिया है।

अस्तु। एक अत्यन्त गंभीर सवाल यह है कि अगर हिन्दू स्वधर्म के लिए गौरव ले तो वह कौमवादी कहलाया जाएगा तो उसी तरह मुस्लिम क्यों नहीं कहलाए जाएँ ? वह कौम ''लघुमत'' में है इसलिए उसे कुछ नहीं कह सकते यह तो सरासर अन्याय है। तो हिन्दुओं का बहुमत अपने ही राष्ट्रमें गुनाह रुप बन गया है। यह बात आघातजनक कहीं जा सकती है उनके लिए ही नियंत्रण लागू थे ये मौज से घूमें कैसे भी बर्ताव कर लें तो चला जाए।

''लघुमत में हो वह सम्प्रदाय और बहुमत में हो वह धर्म'' ऐसी व्याख्या ईसाईयों की हो सकती है, अपने मत से तो जो जिस धर्म के जितने खासखास-अपने क्रियाकाण्ड हों वे सब सम्प्रदाय कहलाते हैं, क्योंकि वह आत्मा में सरलता कृतज्ञता, सहिष्णुता आदि गुणों का संप्रदान करता है।

इस राष्ट्र को धार्मिक क्रियाकाण्डों से रहित नहीं बनाया जा सकता। वह क्रियाकाण्ड ही प्रजा के आध्यात्मिक ढांचे को मजबूत करते रहते हैं। अगर अपना यह ढांचा टूट जाए तो हम इन्सान भी नहीं बन सकतें। तो फिर महान बनने की तो बात ही कहां रही ?

गलती से भी संविधान की बिन साम्प्रदायिकता का स्वीकार नहीं करना चाहिये। हाँ, अगर उसका अर्थ यह किया जाता हो कि राष्ट्र का अपना कोई धर्म न रहे। बाकी प्रजा को जो ठीक लगे वह करने के लिए स्वतंत्र रहेगा। उसमें राष्ट्र की कोई दखल नहीं होगी, बल्कि उसका गौरव किया जाएगा, तब यह बिल्कुल अलग बात हैं।

अगर नेपाल का-हिन्दू धर्म-राष्ट्र धर्म हो सकता है, पाकिस्तान, बांग्लादेश का इस्लाम राष्ट्रधर्म हो सकता है, तिब्बेट में बौद्धधर्म उसका राष्ट्र धर्म हो सकता ? क्यों न उसे हिन्दु राष्ट्र घोषित किया जाए ?

वेटिकन पंथियों ने तो अ-ईसाई धर्मो को धरती पर से दूर करने के लिए नया उपाय अपनाया है। उसका नाम है- घुसपैठ।

किसी भी धर्म का अनुयायी बन जाओ। पाँव फैलाओ और पेट चीर दो। शायद ऐसा भी हो। इस रीत से वैदिक, स्वामिनारायण, जैन आदि धर्मो में गोरे प्रवेश करें। वह धर्म का स्वीकार इतना बेहूबेहू करें कि शायद परंपरागत रीत का धर्मी भी इतना चुस्त न हो।

वह आदमी आगे बढ़कर उस धर्म का संन्यास धर्म भी स्वीकार कर ले, भगवे या श्वेतवस्त्र पहनने लगे। फिर उसके शास्त्रों का ठोस अभ्यास करें। शायद वह धर्म के आचार्यपद तक भी पहुंच जाए।

गौरा जैनाचार्य, गोरा स्वामिनारायणाचार्य गोरा वैदिक धर्माचार्य।

यह सब मिलकर सब अपने अपने धर्म की महानता की बातें करेंगे और फिर कौन सा धर्म महान ? इस प्रश्न पर वोटिंग होगी तब गोरें ईसाई धर्म को महान कहेंगे। इसी तरह भारत में ईसाई धर्म का व्याप रहेगा।

दूसरी रीत है, मंत्र द्वारा धर्मप्रवेश करने की। अगर गोरें को जैन धर्म में प्रवेश करना हो, तो उसे नवकार मंत्र अति सुन्दर तरीके से बोलना होगा। जैनों के धार्मिक आयोजन 26 वीं शताब्दी को मनाने आदि में प्रवेश लेना होगा। इस तरह अन्यत्र भी ''ॐ नमः भगवते वासुदेवाय'' मंत्र द्वारा स्वामीनारायण पंथ में प्रवेश मिल सकता है। ''हरे राम हरे कृष्णा'' की धून के द्वारा कृष्णपंथ में प्रवेश मिल जाए।

अब तो अपने अपने धर्म को अनुयायियों की सबसे प्रिय चीज है- मंत्र। उसको जपनेवाला आदमी अति प्यारा हो जाता है। मुझे ऐसा भय है कि जिस तरह हरे राम हरे कृष्ण का भरपूर नाद जगाकर हजारों लाखों गोरों ने कृष्णपंथ में प्रवेश पा लिया है, वैसे ही नवकार मंत्र के द्वार से गोरे लोग जैन धर्म में प्रवेश करने लगे।

सुयोग्य आत्मा धर्मप्रवेश कर ले तो उसमें कोई बाधा नहीं होनी चाहिये किन्तु दौरदधाम, दंभ, दिखावा, प्रचार के धूमधड़क्के से यह बात होती हो तो जरुर शंका करने का दिल करें!

मंत्र कोई बाजार में रखने की चीज नहीं है। यह सब को दिया नहीं जाता। जो मंत्र जिसे परंपरा से मिला हो वहीं मंत्र उसे जल्द फल देता है। यह सब बातें जाने बगैर अगर हम नास्ते के पेक की तरह जाहिर में सर्व को मंत्रादान करें तो

उसका मूल्य कम हो जाने का डर रहता है।

हाल में सर्वत्र घुसपैठ के कार्यक्रम चल रहे है, उससे मंत्रजप करके अयोग्य आदमी के घुसपैठ करने की पूरी दहेशत है। ऐसे समय पर, यह खतरा उठाने के बजाय ऐसे आयोजनों से दूर रहना और अपना घर संभालकर रखना ही उचित है। इस तरह धार्मिक ट्रस्टों में दान करके भी घुसपैठ करने का प्रपंच वह लोग कर रहे हैं।

जिस धर्मो सूक्षबुद्धि की कसौटी पर चढ़े बगैर आगे बढ़ गए हैं, वहां धर्म ने अपना व्यक्तित्व खो दिया है, वहां सड़न घुस गई है।

ईसाईओं ने ''बहुमत'' का जो नाद जगाया है, वह बहुमतवाद ही यहां-वहां घूस न जाए उसकी चिंता करनी होगी। खास करके धर्मस्थानों में तो बहुमत से निर्णय नहीं लिया जाना चाहिए। अगर यहां पर बहुमत की घुसपैठ होगी तो लुच्चे, अयोग्य इन्सान अपने बलबूते पर धर्म सिद्धांतों को उथलाने में सफल हो जाएँगे। अपनी परंपरा के धर्मानुयायियों के सिवा अपने धर्मपंथ में किसी को भी प्रवेश देना नहीं चाहिए। ऐसे लोग बांधछोड़ करनेवाले होते हैं। धर्मत्व के असाधारण नियमों को बहुमत के जोर पर रद करने का काम किए बगैर वह रहनेवाले नहीं है।

परतंत्र न हों

''पर''को अपना मानना पराधीनता का मूल है। जब तक हम शरीर को अपना मानते रहेंगे, तब तक पराधीनता कभी छूटेगी नहीं, छूट सकती ही नहीं। शरीर के छूटने पर भी पराधीनता नहीं, छूटेगी। शरीर (''पर'') तो बदलता रहेगा, पर पराधीनता निरंतर रहेगी। शरीर टिकेगा नहीं और पराधीनता निरंतर रहेगी। शरीर टिकेगा नहीं और पराधीनता मिटेगी नहीं। अगर कोई कहे कि मुक्ति (स्वाधीनता) पाने के लिये तो शरीर की सहायता लेनी आवश्यक है तो यह मान्यता भी ठीक नहीं है। स्वाधीनता का साधन पराधीन कैसे हो सकता है ? पराधीनता के द्वारा स्वाधीनता कैसे प्राप्त हो सकती है ? अतः मुक्ति को, तत्वज्ञान को, प्रेम को प्राप्त करने में शरीर सहायक नहीं है, प्रत्युत शरीर का त्याग (संबंध-विच्छेद) सहायक है। त्याग का अर्थ है- शरीर में अहंता-ममता का त्याग। बंधन अहंता-ममता से होता है, शरीर से नहीं। शरीर को सत्ता और महत्ता दे कर उसको अपना मानते हुए कभी मुक्ति नहीं हो सकती। इसलिये शरीर को आवश्यकतानुसार अन्न-जल-वस्त्र तो देना है, पर शरीर से संबंध जोड़कर अन्न-जल-वस्त्र लेनेवाला नहीं बनना है। देनेवाला मालिक होता है और लेनेवाला गुलाम होता है। शरीर की सेवा करने वाला परतन्त्र नहीं होता, प्रत्युत उससे कुछ चाहने वाला परतन्त्र होता है। सेवा करने वाला तो ऊंचा उठ जाता है, पर लेने की इच्छावाले का पतन ही होता है।

कुसंग और सत्संग

हमारी आत्मा निमित्तवासी है। निमित्त मिले वैसी बन जाती है, पानी की तरह सभी आकारों में फीट हो जाती है। पानी को घड़े में, थाली में, गिलास में या लोटे में डालो तो वह उस प्रकार का आकार धारण कर लेता है। हमारी आत्मा भी जैसा निमित्त मिलता है वैसी बन जाती है। इसीलिए दुनिया के सभी धर्मों ने सत्संग की महिमा का गान किया है और कुसंग से दूर रहना बताया है। नीतिशास्त्र तो यहां तक कहते है कि हाथी से हजार हाथ दूर रहो, सिंगवाले प्राणी से तीन हाथ दूर रहो, लेकिन दुर्जन जहां हो उस गांव को ही छोड़ दो। सांप की दाढ में विष, वींछी की पूंछ में विष.... लेकिन दुर्जन के तो सर्व अंगों में विष होता है। ऐसे लोगों का संग कैसे किया जाय ? कुत्ता काटकर जाय, गधा लात मारकर जाय, सांप डंककर जाय लेकिन कुसंग तो पूरा जीवन बर्बाद करके जाता है। कुसंग की निंदा के साथ महापुरुषों ने सत्संग की प्रशंसा भी की है।

''एक घड़ी आधी घड़ी, आधी में पुण आध,
तुलसी संगत संत की, कटे कोटि अपराध''

तुलसीदास का यह प्रसिद्ध दोहा सत्संग की महिमा का वर्णन करता है। अनुभवियों की ऐसी वाणी सुनकर हमें कुसंग का त्याग करना जरुरी है उसी तरह सत्संग करना भी जरुरी है। कुसंग का त्याग करके, सत्संग नहीं करें तो, नहीं चलता है। प्रतिषिद्ध का त्याग जरुरी है उसी तरह कृत्य का करण जरुरी है। व्यापारी को सिर्फ नुकसान नहीं हो यही जरुरी नहीं लाभ-नफा हो यह भी जरुरी है। हम कई बार निषेधात्मक धर्म को ही धर्म मान लेते है, विधेयात्मक धर्म को तो भूल जाते है। नहीं करने का काम न करना ऐसा मानकर संतोष कर लेते हैं, लेकिन करने का काम तो भूल ही जाते है। सिर्फ नकारात्मक नहीं सकारात्मक धर्म भी चाहिये। नेगेटीव और पॉझीटीव दोनों तार मिले तभी बिजली होती है, अगर यह बात हम जानते हैं तो दोनों में हम एक की भी उपेक्षा कैसे कर सकते हैं ?

किस धर्म में कब मनाया जाता है नव वर्ष

1 जनवरी नहीं, दीवाली से जुड़ा है जैनों का न्यू ईयर : हर धर्म अलग-अलग डेट पर करते हैं नए साल का स्वागत:-

दुनिया के अलग-अलग देशों व धर्मो में नया साल अलग-अलग दिन मनाया जाता है। किसी देश या धर्म में नाच-गाकर नए साल का स्वागत किया जाता है तो कहीं पूजा-पाठ व ईश्वर की आराधना कर। नए साल से जुड़ी अनेक मान्यताएं प्रचलित हैं। नव वर्ष के स्वागत का तरीका जो भी हो लेकिन मन में भावना एक ही रहती है कि आने वाला साल जीवन में खुशियां लेकर आए। भारत में रहने वाले विभिन्न धर्मो के लोग अलग-अलग समय पर नया साल मनाते हैं। आज हम आपको बता रहे हैं कि किस धर्म में नया साल कब मनाया जाता है।

जैन नव वर्ष:- जैन नव वर्ष दीपावली से अगले दिन शुरु होता है। मान्यता के अनुसार भगवान श्रीमहावीर स्वामी को दीपावली के दिन मोक्ष प्राप्ति हुई थी। इसके अगले दिन ही जैन धर्म के अनुयायी नया साल मनाते हैं। इसे वीर निर्वाण संवत कहते हैं। गुजरात में भी नए साल का आरंभ दीपावली के दूसरे दिन से ही माना जाता है। व्यापारी भी इसी दिन से नए साल की शुरुआत मानते हैं।

हिन्दू नव वर्ष:- हिंदू नववर्ष का प्रारंभ चैत्र मास की शुक्ल प्रतिपदा से माना जाता है। इसे हिंदू नव संवत्सर या नव संवत कहते हैं। ऐसी मान्यता है कि भगवान ब्रह्मा ने इसी दिन से सृष्टि की रचना प्रारंभ की थी। इसी दिन से विक्रम संवत के नए साल का आरंभ भी होता है। अंग्रेजी कैलेंडर के अनुसार यह तिथि अप्रैल में आती है। इसे गुड़ी पड़वा, उगादी आदि नामों से भारत के अनेक क्षेत्रों में मनाया जाता है।

ईसाई नव वर्ष:- ईसाई समाज 1 जनवरी को नववर्ष मनाते है। करीब 4000 वर्ष पहले बेबीलोन में नया वर्ष 21 मार्च को मनाया जाता था, जो कि वसंत के आगमन की तिथि भी मानी जाती थी। तब रोम के तानाशाह जूलियस सीजर ने ईसा पूर्व 45 वें वर्ष में जूलियन कैलेंडर की स्थापना की, उस समय विश्व में पहली बार 1 जनवरी को नए वर्ष का उत्सव मनाया गया। तब से आज तक ईसाई धर्म के लोग इसी दिन नया साल मनाते हैं। यह सबसे ज्यादा प्रचलित नववर्ष है।

इस्लामी नव वर्ष:- इस्लामी कैलेंडर के अनुसार, मोहर्रम महीने की पहली तारीख को मुस्लिम समाज का नया साल हिजरी शुरु होता है। इस्लामी या हिजरी कैलेंडर चंद्र आधारित है, जो न सिर्फ मुस्लिम देशों में इस्तेमाल होता है, बल्कि दुनियाभर के मुस्लिम भी इस्लामिक धार्मिक पर्वो को मनाने का सही समय जानने के लिये इसी का इस्तेमाल करते हैं।

सिंधी नव वर्ष:- सिंधी नव वर्ष चेटीचंड उत्सव से शुरु होता है, जो चैत्र शुक्ल द्वितीया को मनाया जाता है। सिंधी मान्यताओं के अनुसार इस दिन भगवान झूलेलाल का जन्म हुआ था जो वरुण देव के अवतार थे।

सिक्ख नव वर्ष:- पंजाब में नया साल वैशाखी पर्व के रुप में मनाया जाता है। जो अप्रेल में आती है। सिक्ख नानकशाही कैलेंडर के अनुसार, होला मोहल्ला (होली के दूसरे दिन) नया साल होता है।

पारसी नव वर्ष:- पारसी धर्म का नया साल नवरोज के रुप में मनाया जाता है। आमतौर पर 19 अगस्त को नवरोज का उत्सव पारसी लोग मनाते है। लगभग 3000 वर्ष पूर्व शाहजमशेदजी ने पारसी धर्म में नवरोज मनाने की शुरुआत की। नव अर्थात् नया रोज यानि दिन।

वृद्ध और युवक:- *तुम जितने वर्ष जिये हो उनकी संख्या तुम्हें बूढ़ा नहीं बनाती। तुम बूढ़े तब होते हो, जब प्रगति करना बंद कर दो। जैसे ही तुम्हें लगे कि तुम्हें कुछ करना था वह कर चुके, जैसे ही तुम अनुभव करो कि तुम्हें जो कुछ जानना था वह जान चुके, जैसे ही तुम बैठकर अपने परिश्रम का फल भोगना चाहो और यह सोचो कि तुम जीवन में काफी कुछ कर चुके तुम एकदम बूढ़े हो जाते हो और तुम्हारा क्षय शुरु हो जाता है। इसके विपरीत, जब तुम्हें यह विश्वास हो कि जो जानना बाकी है उसकी तुलना में तुम जो जानते हो वह कुछ भी नहीं है, जब तुम्हें लगे कि तुमने जो कुछ किया है वह जो कुछ करना बाकी है उसका केवल आरंभ है। जब तुम भविष्य को प्राप्त करने योग्य अनंत संभावना से भरे चमकते सूर्य को देखो तब तुम युवा हो। तुमने धरती पर चाहे जितने वर्ष बितायें हों, तुम युवा और भावी कल की उपलब्धियों से समृद्ध हो।*

रिवाल्वर जब खिलौना बन गयी

✻ पू.आ.श्री विजय पूर्णचन्द्र सूरीश्वरजी म.

सूर्योदय का समय था। महाराष्ट्र की धरती के दो शहर धुलिया एवं पांचोरा का राजमार्ग वाहनों के आने-जाने से व्यस्त लग रहा था। आज से 50/75 वर्ष पूर्व इस राजमार्ग पर अनेक प्रकार के वाहन से लोग सवारी करते थे जिसमें एक घोड़ागाड़ी द्वारा कुछ अंग्रेज एवं पक्के जैन श्री खीमजीभाई हीरजी लोडाया धूलिया से पांचोर जा रहे थे। खीमजीभाई का अंग्रेजी भाषा पर अच्छा प्रभुत्व था एवं व्यापारिक दृष्टिकोण से परदेशी प्रजा के साथ संपर्क में आना पड़ता था जिससे अंग्रेजी भाषा वे अच्छी तरह बोल सकते थे।

खीमजीभाई को महामंत्र नवकार पर भारी आस्था थी। उनका मानना था कि व्यापार-धंधे हेतु परदेशी प्रजा के सम्पर्क में रहते हुए भी नवकार महामंत्र के प्रभाव से ही जैनत्व को टिका कर रख सके थे। वे नियमित नवकार का जाप करते, साथ ही परदेशी प्रजा को जब भी मांसाहार की भयंकरता समझाने का अवसर मिलता, तब महामंत्र का स्मरण कर वे उस अवसर का उपयोग कर लेते। अहिंसा का महत्व बखूबी समझाने का कर्त्तव्य बराबर अदा करते।

एक बार अंग्रेजों के साथ धूलिया से पांचोर जा रहे खीमजीभाई की बातों का विषय था- भारतीय संस्कृति की भव्यता! घोड़ागाड़ी की सवारी के खुशनुमा वातावरण में अभी वार्तालाप का रंग जमा ही था कि एकाएक रंग में भंग पड़ गया। वे अंग्रेज शिकार के भारी शौकीन थे। उसमें उनकी नजर दूर-दूर दौड़ते हिरणों के झुण्ड पर पड़ी और उन्होंने अपनी रिवाल्वरों को संभालनी शुरु कर दी।

खीमजीभाई उन सभी के इरादों को समझ गये, अतः उन्होंने कहाकि- भारतीय संस्कृति में एक महत्व की बात कही गयी है कि कोई चीज लेकर यदि वापस करने में हम समर्थ न होवें, तो वह चीज कभी भी लेनी नहीं चाहिये! इस एक सिद्धांत का पालन यदि सभी करने लगे तो यह दुनिया स्वर्ग से भी ज्यादा सुहावनी हो जाये।

अंग्रेजों के मन का कब्जा तो शिकार के शौक ने ले लिया था, फिर भी उन्होंने कहा कि- इसमें कौन सी बड़ी बात है? जो न लौटा सके, वो उसे नहीं ले- इसमें कौन सा बड़ा दर्शन है? खीमजीभाई ने कहा- तो ऐसा कीजिये, आप मुझे वचन दीजिये कि- लेकर हम पुनः लौटा नहीं सके, उसे लेने का विचार भी नहीं करेंगे।

अंग्रेजों को तो यह बात बिल्कुल सादी व सरल लगी। उन्होंने तुरन्त ही कहा- ''दे दिया वचन! जो चीज लेकर पुनः लौटा नहीं सके वह चीज नहीं लेंगे।''

अंग्रेज वचनबद्ध बनते ही खीमजीभाई ने रहस्य को उजागर करते हुए कहा कि- फिर तो अब रिवाल्वर हमें सौंप दीजिए, तभी आप वचन का बराबर पालन कर पायेंगे। आपके वचन का पालन में यह रिवाल्वर बाधक बन सकती है।

अंग्रेजों की आंख में आश्चर्य था। उन्होंने कहा कि- वह हिरणों का झुण्ड देखते ही हमारा शिकार का शौक जागृत हो उठा है, ऐसी घड़ी सामने आयी है, तब रिवाल्वर आपको कैसे सौंपे! इस नियम के साथ रिवाल्वर का क्या संबंध! खीमजीभाई को लगा कि- मित्रों को अब बराबर शिकंजे में लिया जा सकता है। अतः उन्होंने कहाकि- देखिये! इस रिवाल्वर द्वारा आप हिरण के प्राणों का हरण करेंगे। अब लिये हुए प्राण पुनः हिरणों को देकर, क्या उसे जिलाने में आप समर्थ है! यदि आपके पास ऐसी ताकत है, तो मुझे रिवाल्वर नहीं चाहिये एवं आप शिकार खेलें, इसमें भारतीय संस्कृति को बीच में बोलने का कोई अधिकार नहीं!

अंग्रेज अब विचार में पड़ गये फिर आश्चर्य अनुभव करते हुए बोले खीमजीभाई! आपने तो दाव-पेंच का खेल खेला! हमें यदि ऐसा मालूम होता तो हम वचन में नहीं बंधते। आपकी बात सच है कि- हम वचन में बंधे है, लेकिन यह भी सच है कि शिकार की मौज का ऐसा अवसर भी कभी-कभी ही मिलता है, इसलिये हमारे संबंधों को कायम रखना है, तो मेहरबानी करके अब हमें वचनबद्धता की पुनः स्मृति नहीं दिलवायें।

खीमजीभाई ने मित्रों की इस चेतावनी को ध्यान में लिये बिना भी ऐसे शौक को तिलांजलि देने हेतु बहुत समझाया, लेकिन जब उन्हें लगा कि मेरे समझाने से कोई अर्थ निकलने वाला नहीं है, तब वे मौन हो गये और मन ही मन महामंत्र का जाप करने लगे। अपनी नजर के सामने हत्या का खेल हो, यह बात उन्हें हरगिज मंजूर नहीं थी, ऐसी नाजुक घड़ी में उनकी अंतरात्मा कहती थी कि मारने वाले की अपेक्षा बचाने वाले के पास ज्यादा बल व शक्ति का भंडार होता है।

खीमजीभाई ने मन ही मन एक अडिग निर्णय लेकर अंतिम बार मित्रों को समझाने का प्रयत्न किया, किन्तु यह भी निष्फल हुआ। हिरणों की दौड़-धाम से सौंदर्यभरी उस धरती पर वे अंग्रेज रिवाल्वर के साथ घोड़ागाड़ी से उतर गये। अबोल

जीवों के रक्त से यह धरती रंजित न बने, इन पापियों की भावना सफल न हो, इसलिए नवकार महामंत्र का प्रभाव इस वातावरण में शक्तिपात करे तो कितना अच्छा हो ? इस विचार को बलवान बनाकर खीमजीभाई एक वृक्ष के नीचे काउस्सग्ग मुद्रा में ध्यानस्थ खड़ेहो गये। उनके अंतर से ऐसी आवाज आ रही थी कि दृढ़ संकल्पशक्ति कभी निष्फल नहीं जाती।

खीमजीभाई काउस्सग्ग मुद्रा में खड़ेहो गये व अंग्रेज अपना शिकार का शौक पूरा करने के लिये मैदान में आ गये। बहुत ही करीब में हिरणों का झुण्ड देखकर उनके आनंद का पार नहीं रहा। दूसरी ही पल में उन्होंने रिवाल्वर से गोलियाँ दागनी शुरु कर दी। उनके मन में विश्वास था कि सात-आठ हिरण तो अभी ढल जायेंगे, लेकिन उनका विश्वास गलत निकला। जैसे कोई अदृश्य शक्ति ने हिरणों को बचाने के लिये अपना हाथ आगे बढ़ाया हो, वैसे उनकी सारी गोलियां निष्फल गई। हिरणों के झुण्ड के कानों में मानों रिवाल्वर की कोई आवाज जैसे पहुंची ही न हो इस प्रकार वे आनंद में घूमते रहे।

गोली की आवाज सुनते ही खीमजीभाई ने आंखें खोली एवं सामने जो दृश्य देखा, जिससे उनके आनंद का कोई पार नहीं रहा। उड़ते पक्षियों को विंधने वाली अंग्रेज की वे रिवाल्वर नजर के सामने के निशान को ताकने में बिल्कुल निष्फल साबित हुई थी और सचमुच हिरणों का एक बाल भी बांका नहीं हुआ था।

निष्फलता को देखकर वे अंग्रेज दुगुने जोश से हिरणों का शिकार करने के लिये अंधाधूंध गोलियों की बौछार करने लगे, फिर भी सफलता हाथ नहीं लगी। खीमजीभाई अभी भी काउस्सग्ग ध्यान में ही थे, उनको सम्बोधन करते हुए निराश होकर अंग्रेजों ने कहा- ''चलो! अब आगे बढ़ें। कुदरत हमारी सहाय में नहीं है, इसलिये शिकार का हमारा शौक अधूरा ही रह गया, नक्की आपने कोई मंत्र-तंत्र किया है, नहीं तो हमारी रिवाल्वर ऐसे कभी निष्फल जाये, यह संभव नहीं है।''

सभी घोड़ागाड़ी में बैठे। खीमजीभाई ने कहा- रोकने से नहीं हारने से रुके! अंग्रेज मित्रों के समक्ष उनकी रिवाल्वर को खिलौने में पलटाने वाली आगम्य शक्ति के रुप में महामंत्र का उल्लेखन करने के अनुपम अवसर को एकदम सार्थक करनेवाले खीमजीभाई भी घोड़ागाड़ी में बैठे, तब उनके अंतर के तार तार महामंत्र का गीत गा रहे थे।

विषय-कषाय ही दुःख है

दुःख कहां से आते है ? बाहर से नहीं, अपने भीतर से ही आते हैं। हमारे दुःख का कारण हम स्वयं ही है, दूसरा कोई भी नहीं। यह विचित्र दिखनेवाली बात है, फिर भी सत्य है।

विषय-कषाय दुःख देनेवाले है, और उनके करनेवाले हम स्वयं हैं।

विषय-कषायों से दुःख आता है, ऐसी बात नहीं है। विषय-कषाय स्वयं दुःखरुप है, यह बात हम कभी समझे नहीं है। विषय-कषाय करेंगे तो दुःख आयेगा- ऐसा मानकर तो बहुत वक्त हम उससे रुके हैं, किन्तु विषय-कषाय स्वयं ही दुःख हैं, ऐसा हमें कभी नहीं लगा है। इस तत्व को हर व्यक्ति समझ सकता है, अनुभव कर सकता है, अगर आत्म-निरीक्षण करें तो!

जब जब मन में विषय-कषाय की मात्रा बढ़ जाय तब तब मन का निरीक्षण करना। वह अत्यन्त क्लिष्ट-संक्लिष्ट अवस्था में होगा। यह क्लिष्टता दुःख ही है या और कुछ ? चित्त व्याकुल और विव्हल हो तब सुख किस तरह हो सकता है ? हां.... सुख की भ्रमणा जरुर हो सकती है। इस भ्रमणा में ही हम उलझ गये हैं न ? इस रहस्यभरी बात को हम कभी समझ नहीं सके हैं।

विषयों से दुःख आयेगा तो ? कषाय करेंगे और परिणाम बूरा आयेगा तो ? ऐसे विचारों से हम विषय-कषायों से बहुत वक्त रुके हैं, किन्तु विषय-कषायों से बहुत वक्त रुके हैं, किन्तु विषय-कषाय स्वयं दुःख है, ऐसा कभी लगा नहीं है।

संसार की पूरी इमारत विषय+कषाय की नींव पर खड़ी है। हाईड्रोजन और ऑक्सीजन से पानी तैयार होता है, उसी तरह विषय-कषाय से संसार तैयार हुआ है। उपाध्यायजी म. कहते है- विषय-कषाय की इस विष-लता को काटनी हो तो अध्यात्म की कुल्हाड़ी हाथ में ले लो, क्षण में ही विष-लता कट जायेगी।

करो घर खाली

✻ राजश्री, राजगढ़

जब तक पंछी पिंजरे में
पिंजरे की रौनक निराली रहती है
हर कोई लाड़ लड़ाता न रहता कोई बाकी
उड़ा पंछी जब पिंजरे से देख न पाया कोई साथी।
कहे सब ले चलो, पिंजरे को अब करो घर खाली।

वर्तमान तीर्थंकर भगवानजी के शासन यक्ष और यक्षिणी

1- श्री ऋषभदेवजी :-

1- गोमुख देव 1- चक्रश्वरी देवी

2- श्री अजितनाथजी :-

2- महायज्ञ देव 2- रोहिणी देवी

3- श्री संभवनाथजी :-

3- त्रिमुख देव 3- प्रज्ञप्तिदेवी

4- श्री अभिनंदननाथजी :-

4- यक्षेश्वर देव 4- व्रजश्रृंखला देवी

5- श्री सुमतिनाथजी :-

5- तुम्बरु देव 5- पुरुषदत्ता देवी

6- श्री पद्यप्रभुजी :-

6- कुसुमदेव 6- मनोवेगादेवी

7- श्री सुपार्श्वनाथजी:-

7- वरनन्दि देव 7- काली देवी

8- श्री चंद्रप्रभुजी :-

8- विजय देव 8- ज्वालामालिनी देवी

9- श्री सुविधिनाथजी :-

9-अजितदेव 9- महाकाली देवी

10- श्री शीतलनाथजी :-

10-ब्रह्मेश्वरदेव 10-मानवी देवी

11- श्री श्रेयांसनाथजी :-

11-कुमारदेव 11- गौरी देवी

12- श्री वासुपूज्यजी :-

12-षणमुखदेव 12- गांधारी देवी

13- श्री विमलनाथजी :-

13-पाताल देव 13- वैरोटी देवी

14- श्री अनंतनाथजी :-

14-किन्नर देव 14- अनंतमती देवी

15- श्री धर्मनाथजी :-

15-किंपुरुष देव 15- मानसी देवी

16- श्री शांतिनाथजी :-

16-गरुड़ देव 16-महामानसीदेवी

17- श्री कुंथुनाथजी :-

17-गंधर्व देव 17- जया देवी

18- श्री अरहनाथजी :-

18-महेन्द्रदेव 18- विजया देवी

19- श्री मल्लिनाथजी :-

19-कुबेर देव 19- अपराजितादेवी

20- श्री मुनिंसुव्रतनाथजी :-

20-वरुण देव 20- बहुरुपिणी देवी

21- श्री नमिनाथजी :-

21-विधुत्प्रभ देव 20- चामुण्डी देवी

22- श्री नेमिनाथजी :-

22- सर्वाण्हदेव 22- अंबिका देवी

23- श्री पार्श्वनाथजी :-

23-धरणेन्द्र देव 23- पद्मावती देवी

24- श्री महावीर स्वामीजी :-

24-मातंग देव 20- सिद्धायिका देवी

जिन्दगी में 8 के पहाड़े का महत्व....

8 X01=08 बचपन।

8 X02=16 जवानी की शुरुआत।

8 X03=24 शादी की उम्र।

8 X04=32 बच्चों की जिम्मेदारी होना।

8 X05=40 खुशहाल परिवार।

8 X06=48 सांसारिक जिम्मेदारी और स्वास्थ्य के बिगड़ने की शुरुआत।

8 X07=56 बुढ़ापे की शुरुआत, रिटायरमेंट की तैयारी और वसीयत लिख डालने का समय।

8 X08=64 रिटायरमेन्ट के बाद कम से कम तनाव में रहने का प्रयास और सेहत का ख्याल रखना।

8 X09=72 रोग और स्वास्थ्य संबंधी तकलीफों से सामना, खुद को ज्यादा से ज्यादा खुश रखने का प्रयास।

8 X10=80 पिछले 80 सालों में जिन मित्रों और सहयोगियों और रिश्तेदारों ने आपका साथ दुःख में नहीं छोड़ा, उनके साथ हंसी खुशी जीवन बिताना।

कितना महत्वपूर्ण है 8 का पहाड़ा !

इसलिए हंसते रहे, हंसाते रहे, प्यार से रहें,

परिवार और दोस्तों के संग रहे !!!

जैन शासन में इतिहास बनाने वाले शासन रत्न (संघपति)

✻ सौ प्रथम भरत चक्रवर्ती का शत्रुंजय संघ- जिसमें 32,000 मुकुटबद्ध (राजा), 32,000 नाटकवाले, 84 लाख वाद्य, 3 लाख मंत्री, 84 लाख हाथी, 84 लाख घोड़े, 1600 यक्ष, 84 लाख रथ, 10 करोड़ धोडे रहनेवाले, 3 करोड़व्यापारी, 32 करोड़ सुथार, सवा करोड़ भरत के पुत्र, करोड़ साधु-साध्वियां, 99 करोड़ संघ-पति।

✻ विक्रम राजा का संघ:- 269 सोने के जिनालय, 500 हाथी दांत के जिनालय, 500 चंदन के जिनालय, 1,10,09,000 बैलगाड़ियां, 18 लाख घोड़े, 76,000 हाथी, 76,000 ऊंट, 70 लाख श्रावक परिवार, 500 आचार्य, करोड़ स्त्रियां।

✻ पांच पांडवों का संघ:- 300 सोने के जिनालय, 800 चांदी के जिनालय, 800 आचार्य, 8000 साधु, 2 करोड़ श्रावक, 50,000 हाथी, 800 राजा, 8 लाख घोड़े 1 करोड़ सेठियें, कृष्ण महाराजा संघ के साथ।

✻ कृष्णा महाराजा का संघ:- 500 सोने के जिनालय, 1700 काष्ठ के जिनालय, हजारों साधु-साध्वियां, 24 करोड़ मानव, आंवले जैसे मोतियों से शत्रुंजय को बधाया, परिवार के साथ राजा ने प्रत्येक मूर्ति की पूजा की थी।

✻ दशरथ राजा का संघ:- 400 सोने के जिनालय, 8 हाथी दांत के जिनालय, 800 संघपति, 100 राजा, 5 करोड़ मानव, प्रत्येक गांव में स्वामी वात्सल्य।

✻ रामचन्द्रजी का संघ:- 500 सोने के जिनालय, 712 चांदी के जिनालय, 5012 काव्य के जिनालय, 20 करोड़घोड़े, 19 करोड़ पाड़ेपानी के लिये, 10,000 हाथी, 7 करोड़बैलगाड़ियां, करोड़ साधु-साध्वीजी, हीरा-मोती से रावण वृक्ष की पूजा।

✻ वि.सं. 1468 में निकला हुआ गुण राजा श्रावक का संघ:- 700 रथ, 2 लाख मानव, सामसुन्दरी जैसे 100 आचार्य, सोपारक नगर में 60,000 टंकों का खर्च किया, 20,000 टंक सोने की मोहरें मुनि सुन्दरविजय के उपाध्याय पद से खर्च की थी।

✻ थराद के आभु संघवी का संघ:- 700 काष्ठ के जिनालय, 1510 जिनबिम्ब, 260 दुकानें, 36 आचार्य एवं संघयात्रा के वक्त सभी को वस्त्रों की लुहाणी की गई थी।

✻ मांडवगढ़ से शत्रुंजय, गिरनार तीर्थ के जांझण मंत्री का संघ:- 12 कास्ट के जिनालय, 30 आचार्य, 12000 बैलगाड़ियां, 12 बड़े संघपति, 2000 सैनिक, 5000 घोडे (सामान के लिये) एवं संघ श्रावक-श्राविकाएं, तीर्थ प्रवेश के समय सात लाख मानव, उस समय लक्ष्मणजी में 101 जिनालय, 2000 जैनों के घर थे। झांझण मंत्री का संघ 1340 महासुद-पांचम के दिन निकला था।

✻ वस्तुपाल तेजपाल का संघः- 24 रथ हाथी दांत के, 45,000 रथ, 700 आचार्य, 2000 साधु, 2100 दिगम्बर साधु, 7 लाख दीवाघरे, 1000 कन्दोई मिठाई बनाने के लिये। वस्तुपाल तेजपाल के 12 संघों का समय, प्रथम - 1249 में माता-पिता की हाजरी में, दूसरा- 1273 में माता-पिता के आत्मश्रेयार्थ में पहला-1277 में शत्रुंजय से गिरनार का, दूसरा 1283 में शत्रुंजय का, तीसरा- 1284 में शत्रुंजय का ढांचा, 1285 में शत्रुंजय का, पांचवां- 1286 शत्रुंजय का, छठा- 1287 में शत्रुंजय का, सातवां- 1289 में शत्रुंजय से गिरनार का। आठवां- 1290 में शत्रुंजय से गिरनार का, नवमां- 1291 शत्रुंजय से गिरनार, दसवां-1292 से गिरनार, ग्यारवां व बाहरवां-1293 व 94 में शत्रुंजय से गिरनार।

✻ कुमारपाल राजा के संघ की विशिष्ठता:- 2800 जिनालय, 11000 हाथी, 5000 साधु, 11 लाख घोड़े, 16 लाख यात्री, 5000 गांवों में रत्न जड़ित ध्वजा चढ़ाई। कुमारपाल राजा के संघ में 24 मंत्री थे। नगर सेठ के पुत्र आभडढ़ ने जहां संघ का पड़ाव हुआ वहां पर सांवेया की काफी की थी।

वर्जित कार्य:- *अपनी दौलत, अपनी कमजोरी, अपने घर के दोष, मित्र के अवगुण, मन की योजना, दिया हुआ दान, किया हुआ उपकार और अपने अपमान की बात के विषय में किसी से भी चर्चा न कर इन्हें गुप्त रखें। किसी पुरुष से उसकी आय या वेतन न पूछें, महिला से उसकी आयु न पूछें, परायी स्त्री से आँखे मिलाकर बात न करें, मित्र की अनुपस्थिति में बार-बार उसके घर न जायें, मन का भेद किसी को न बतायें और जब तक कोई कार्य पूरा और सफल न हो जाए तब तक उसकी चर्चा किसी से न करें।*

भक्ति की शक्ति

✽ सुधीर पटवा, एड. कुकड़ेश्वर

एक नगर सेठ प्रतिदिन सोने की थाली में कीमती सामग्रियां लेकर भगवान की पूजा करने जाते थे। वहीं एक गरीब अंधा व्यक्ति भी भक्तिवश प्रतिदिन खाली हाथ उसी मंदिर में आता था और भगवान की कृपा का आभार मानकर लौट जाता था।

एक दिन अंधा व्यक्ति सेठजी से पहले मंदिर में पहुंचा उस वक्त वहां पर अन्य कोई नहीं था। वह अंध व्यक्ति प्रभु कृपा का आभार प्रकट कर ही रहा था कि भगवान की प्रतिमा से आवाज आई कि हे भक्त ! तुझे दिखता नहीं है मंदिर में आने में भी कष्ट झेलना पड़ते है इसलिये मैं अपने ये दोनों नेत्र तुम्हें देता हूं ताकि तुम देख सको, तत्काल वो भक्त बोल पड़ा नहीं, नहीं प्रभु ऐसा मत करना मैं तो बिल्कुल ठीक हूं, अपने कर्मो का भोग भोग रहा हूं। मैं आपके दर्शन अपने दिये (अन्तर) की आँखों से कर लेता हूं किन्तु आप ने अपने नेत्र मुझे दे दिये तो आपकी कृपा फिर मुझ पर और भक्तों पर कैसे पड़पावेगी ?

ये बात चल ही रही थी कि नगर सेठ का मंदिर में आना हुआ। यह वार्ता सुनते ही उनका धैर्य चुक गया और वे बोल पड़े अन्याय ! घोर अन्याय !! हे भगवान मैं जो नगर सेठ हूं, आपकी इतने वर्षो से रोज भक्ति करता हूं, हमेशा स्वर्ण थाल में श्रेष्ठ उपलब्ध सामग्री भेंट में लाता हूं फिर आपने आज तक मुझसे कभी बात नहीं की और यह भिखमंगा सूरदास रोजाना खाली हाथ आता और माथा टेककर चला जाता है उसे आप अपने नेत्र निकाल कर देने लगे। यह तो मेरे साथ अन्याय है।

तब प्रतिमा से आवाज आई सेठ तू जब भी आता अहंकार से भरा होता है और जरा विचार कर तू एक छोटी सी दुकान में बैठता था, आज करोड़ों की संपत्ति का मालिक है। कई दुकानों, फैक्ट्रियों व अपार धन वैभव के होते हुए भी तेरे में संतोष तो बून्द मात्र भी नहीं है, कल ही शहर में एक बड़ी मील तेरी खुल जाय यह मांग लेने की थी जब भी तू आया एक न एक मांग लेकर ही आया। और इधर यह सूरदास जो कई बार मंदिर आने-जाने में ठोकर खाकर गिर चुका है उसके बावजूद इसने मुझसे कभी कुछ भी नहीं मांगा, आंखे जीवन के लिये कितनी जरुरी होती है तुम आंखवाले और अहंकार से भरे व्यक्ति कभी नहीं समझ सकते है, उन्हें भी लेने से उसने मना कर दिया। ये एक समर्पित भक्त है जिसके पास संतोष और स्वीकार भाव की अखाण्ड निधि है जबकि तुम सम्पदा के ढेर पर अहंकार का ताज पहने दिनरात असंतोष की अग्नि से जलते अतृप्त भिखारी हो- तुमसे मैं और क्या बोलूं। ऐसी है समर्पण व भक्ति की शक्ति।

योग मतलब ?

उपा. श्री यशोविजयजी म. ने ''पातंजल योगदर्शन'' पर टीका लिखी है। उस ग्रंथ में पतंजलि ने लिखा है- **''योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः''**। योग अर्थात् चित्तवृत्तिओं का निरोध। उपाध्यायजी म. ने इसमें सुधारा करते हुए लिखा- **''योगः क्लिष्टचित्तवृत्तिनिरोधः''**। चित्त की क्लिष्ट वृत्तिओं का निरोध उसका नाम योग।

बात भी सही है। साधक को समग्र चित्तवृत्तिओं का निरोध नहीं करना है, सिर्फ क्लिष्ट वृत्तिओं का निरोध करना है, अशुभ वृत्तिओं को ही रोकनी है, शुभ वृत्तिओं को नहीं। खेत में घास और अनाज दोनों उगते हैं, किन्तु किसान उसमें से सिर्फ घास को ही हटाता है, अनाज को नहीं। हम किसान से इतना नहीं सीखेंगे ?

आज-कल शुभ-अशुभ सर्व वृत्तिओं के निरोध की हवा चल रही है। घास को ही काटना था वहां अनाज भी काटा जा रहा है। ''शुभ-अशुभ वृत्तियां पैदा करनेवाला मन है, उस मन को ही हटा दो, शून्य बन जाओ'' ऐसी लुभावनी बातों में आ कर कई साधक मार्ग भूलते हैं। ऐसे लोग उन्मनी भाव तक तो नहीं पहुंच सकते, लेकिन जहां होते हैं, वहां से भी नीच गिरते है, अशुभ भाव से छूट तो नहीं सकते, किन्तु शुभ भाव से भी हार जाते हैं।बीमार मगन के नाक पर बहुत मक्खियां बैठती थी इसलिए उन्हें उड़ाने के लिए छगन को बैठाया। थोड़ी ही देर में छगन रुम से बाहर निकला। चमन ने पूछा- अरे छगन ! तेरा काम छोड़ कर बाहर क्यों आया ? काम पूरा करके ही आया हूं। छगन ने कहा। यह किस तरह हो सकता है ? मक्खियां तो बैठती ही रहेगी ना ? अब वे नहीं बैठ सकेगी। क्योंकि मैंने उनका अड्डा (बैठने का स्थान- नाक) ही काट डाला है। मक्खियां उड़ाने के प्रयत्न में नाक को ही काटनेवाले छगन को देखकर अशुभ विचार रोकने का प्रयत्न में शुभ विचारों को भी हटानेवाले याद आ जाते हैं

कस्बे में हमारे अतिथिमुनि ढूंढने बाहर चले घर घणी

श्री संघ के अनुरोध पर और वहां के वाशिन्दों की पुण्याई से संत-साध्वीवृंद शेषकाल तथा चार्तुमास हेतु बिराजमान हो पाते है। ऐसा सौभाग्य भाग्यशालियों को काफी प्रयत्न व इन्तजार के पश्चात नसीब से ही मिल पाता है।

नगर में संत का पदार्पण होता है तो भाग्य,
संत अपने को याद करें तो सौभाग्य,
स्वयं का संत बनना महाभाग्य,
और संत का लाभ न ले पाना दुर्भाग्य।

एक श्रद्धेय जैनाचार्य ने एक बस्ती में संत मुनि-साध्वीजी के पधारने व कुछ दिन वहां बिराजने के पश्चात यह कथन फरमाया- **''सकिरी सो काम आवत-जावत पन्हिया टटी बिसर गयो हरिनामी।''** हमारे गुरु भगवंत भगवान श्रीमहावीर के दूत है। जिनवाणी के प्रचार-प्रसार करने के लिए वे संसार त्याग कर संयम पंथ की ओर अग्रसर हुए है, प्रभुवाणी को हम तक पहुंचाने को। आने व उसके बाद विहार करने के बाद प्रभु का नाम बिसर जाने के लिए उनका आगमन नहीं होता है। ''नो टाईम'' के इस टाईम में आज की व्यस्त भरी दिनचर्या में श्रावक-श्राविकाओं के मुंह से यह सुना जाता है कि उनके पास समय का अभाव है। पधारे हुए अतिथि संतों का दर्शन व व प्रवचन सुनने का समय नहीं है किन्तु ज्ञानीजन द्वारा कहीं गई यह बात रेखांकित करने वाली है कि जब आप स्थानक/मंदिर/उपाश्रय नहीं जाते तो यह मत सोचो कि वक्त नहीं मिला, बल्कि ये सोचो कि आपसे ऐसी क्या खता हुई कि प्रभु/गुरु भगवंतों ने आपको अपने समक्ष खड़ा करना पसन्द नहीं किया।

✻ एस.सी.कटारिया (जैन), रतलाम

चार्तुमास हेतु अपने यहां बिराजित साधु-साध्वीवृंद के दर्शन-व्याख्यान सुनने का समय नहीं है लेकिन बाहर जानेवाले संघ हेतु समय है, उसके लिये तैयार वहां जाकर भी हम धर्म ध्यान नहीं कर वहां प्रवचन, प्रार्थना,विभोर गोष्ठी से गायब होकर सैर सपाटे को चले जाते है। इस तरह संघ के साथ धर्मध्यान के लिए जाना नहीं होकर वहां मनोरंजन यात्रा बन जाता है। ऐसी यात्रा ले जाने वाले श्री संघ और आतिथ्य का लाभ उठाने वाले श्री संघ को आर्थिक रुप से भारी होकर दोष लगानेवाली होती है। इस प्रवृत्ति में यथार्थ भावों का अभाव होकर केवल औपचारिकता ही होती है, ऐसे गुरु भगवंतों को भी उत्साहित नहीं करना चाहिये। गुरु भगवंतों को अपने चार्तुमास की श्रृंखला का खुलासा तीन सालों का एक साथ कर देना चाहिये जिससे श्री संघों इसकी विनंती के लिये व्यर्थ का आगमन न कर कई दोषों से बचा जा सके।

सब से प्रेम करो- *इस छोटी-सी जिन्दगी में हम कसौटी पर हैं। इस संसार में जो कुछ थोड़े दिन हमें रहना है, उनमें सबकी सेवा तथा सबका प्रेम हासिल करने की कोशिश करनी चाहिये। जिन्होंने इस दुनिया में आकर पैसा कमाया, लेकिन प्रेम गंवाया, उन्होंने कुछ भी नहीं कमाया। जिन्होंने ज्ञान हासिल किया, मगर सबका प्रेम हासिल नहीं किया, उन्होंने कुछ भी हासिल नहीं किया। जिन्होंने शक्ति सम्पादन की, पर सबका प्रेम सम्पादन नहीं किया, उन्होंने कुछ भी सम्पादन नहीं किया। इसलिये, भाईयों सबको प्रेम करो और सबका प्रेम हासिल करो, यही सर्वोदय-समाज का संदेश है।*

आगमोद्धारक की सदस्यता एवं श्रुतभक्ति में दान देने के लिये ऑन लाईन बैंक की जानकारी

महोदय,

आगमोद्धारक की सदस्यता प्राप्त करने के लिये सदस्यता शुल्क एवं श्रुतभक्ति दान आप ऑन लाईन जमा कर सकते है। आपकी धनराशि भेजने के लिये:-

बैंक का नाम:- इण्डियन ओवरसीज बैंक, शाखा नईसड़क उज्जैन (म.प्र.)
खाता:- श्री सिद्धसेन दिवाकर चेरिटेबल ट्रस्ट, 46, सखीपुरा, उज्जैन (म.प्र.)
खाता क्रं.:- 068002000001425 IFSC Code:- IOBA0000680

वर्ग पहेली क्रमांक-332

✻ प्रस्तुति :- जयंतीलाल जैन, रतलाम (म.प्र.)

1	■	2	■	3	4		5	■
6	7		8	■		■	9	10
■		■	11	12		■	■	
13		14	■		■	15	■	
	■	16					■	
17			■		■	■	18	
	■	■	19		20	■		■
21	22	■		■	23	24		25
■	26				■		■	

बाएं से दाएं:-

1- सोलहवें विहरमान का नाम--- स्वामी (4)

6- वेरावल के निकट भ.चंद्रप्रभस्वामी का तीर्थ च---पाटन (1,3)

9- मंदसौर के निकट पार्श्व प्रभु का प्राचीन तीर्थ--- पार्श्वनाथ (2)

11-चौथे तीर्थंकर प्रभु का लांछन--- (3)

13-जैन धर्म के प्रमुख ग्रंथ कहलाते है--- (3)

16-भ.महावीर के दस मुख्य श्रावकों में से एक (3,2)

17-नगर का पर्याय--- (3)

18-तिथि का कम होना कहलाता है तिथि का--(2)

19-अक्षत पूजन करता थका, सफल करुं अवतार। फल मांगू प्रभु अगले, तार तार मु---(1,2)

21-बीसवें तीर्थंकर भगवान के पिता श्री सु---जी (2)

23- भ.नमिनाथ के पिता का नाम---न (4)

26- भगवान महावीर के एक प्रमुख श्रावक का नाम --- पुत्र (4)

ऊपर से नीचे:-

1- आठवें तीर्थंकर प्रभु का लांछन--- (2)

2- भगवान महावीर के 11 वें गणधर का नाम--- सजी (2)

4- नौंवे तीर्थकर भगवान सुविधिनाथजी का चिन्ह---(3)

5- नयसार भगवान महावीर का प्रथम--- था (2)

7- माता मरुदेवी जहां से मोक्ष सिधारी वह स्थान पुरिमताल इस शहर में है ---राज (3)

8- एक और डेढ़ के बीच की राशि --- (2)

10-अकबर को प्रतिबोध देने वाले आचार्य---सूरि (5)

12-भगवान महावीर के एक प्रमुख श्रावक का नाम--- (3,2)

13-विद्याधरों को प्राप्त विद्या जिसके द्वारा वे आकाक्षा में विचरण कर सकते थे---नी (5)

14-सुखाया हुआ कच्चा आम कहलाता है अ---(3)

15-कौशम्बी के राजा जिनकी रानी मृगावती थी--- निक (2)

18-भगवान महावीर की च्यवन, जन्म व दीक्षा स्थली --- कुंड (3)

19----ल डाल पर सोने की चिड़िया करती है बसेरा, वो भारत देश है मेरा (2,1)

20-जहां न पहुंचे---, वहां पहुंचे कवि (2)

22-जीव दो भेद होते है एक स्थावर और दूसरे--- (2)

24-भ.अजितनाथजी की माता का नाम वि--- (2)

26-राजा जितारीजी और रानी---देवी के तीर्थंकर पुत्र है भ.श्री संभवनाथ स्वामी (2)

वर्ग पहेली क्रमांक-331 का परिणाम

न	य	■	ब	■	क	र्णा	व	ती
व	■	सु	द	र्श	न	■	का	र्य
धा	म	■	ना	■	क	■	■	न्च
■	सि	द्ध	व	र	■	ना	ज	ग
पं	■	भ	र	त	पु	र	■	ति
चा	रां	ग	■	प	रि	या	ला	■
स	■	■	अ	■	म	■	ल	क
रा	व	■	पा	लि	ता	ना	■	म
पा	ट	ण	■	■	ल	■	फ	ल

ज्ञानगंगोत्री क्रमांक-332

*** आचार्य प्रवर श्री मृदुरत्नसागरजी म.सा.**

नीचे दिये गये वाक्यों के संबंधों के लिये दो नाम खोजिए।

1- भाई महाराज की मृत्यु से बहन साध्वीजी को बहुत खेद हुआ।

2- मित्र ने मित्र को जिनमूर्ति भेंट की।

3- बहन ने भाई को भोजन कराकर शोक दूर किया।

4- विषय सुखों के लिये भाई ने भाई का खून किया।

5- जीजाजी के वचन से सालाजी ने शीघ्र दीक्षा ली।

6- देवरजी ने भाभीजी के पैर का पायल पहचाना।

7- भाभीजी ने देवरजी को संयम में स्थिर किया।

8- बेटे को मारने के लिये माँ ने उसे लक्षागृह में भेजा।

9- पत्नी ने पति को अंतिम निर्यामणा करवाया।

10-गुरु ने शिष्य को आखरी समय पर दूर भेजा।

11-मौसी ने भांजी से मिच्छामि दुक्कडं किया।

** मायिक सुख की सब प्रकार की इच्छा कभी भी छोड़े बिना चारा नहीं है तो जबसे यह वचन सुना, तभी से उस क्रम का अभ्यास करना उचित है ऐसा समझो।*

नोट- पोस्टकार्ड पर अपने पते के साथ शहर के पिनकोड नंबर अवश्य डालें।

प्रिय पाठकों! उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तर हमें पोस्टकार्ड पर लिखकर हमें दिनांक 25-1-2023 तक भेज दीजिये। सही उत्तरों में से लक्की ड्रा निकालकर प्रथम तीन को क्रमशः51/-, 31/-, 21/- रूपये की राशि से सम्मानित किया जायेगा साथ ही उत्तीर्ण होने वालों के नाम ''आगमोद्धारक'' मासिक में प्रकाशित किये जायेंगे। भेंट राशि एम.ओ. द्वारा भेजी जायेगी। - सम्पादक

वर्गपहेली क्रमांक-331 के परिणाम

विजेताः-

1- रेशम बहन कोठारी, नीमच (म.प्र.) -प्रथम

2- श्रीमती कुसुम गौतम जैन,आगर (म.प्र.) -द्वितीय

3-श्रीमती प्रभा जैन, देवास (म.प्र.) - तृतीय

इनके भी उत्तर सही थेः-

स्नेहलता जैन, मंदसौर, सुधा लोढ़ा, उज्जैन

ज्ञानगंगोत्री क्रमांक-331 के परिणाम

सही उत्तर-

1- नासपति, 2- छत्रपति, 3- कीर्ति, 4- जगति 5- भभूति, 6- अविरति, 7- प्रकृति, 8- मुक्ति, 9- राष्ट्रपति,10-नरक गति,11-जाति, 12- संघपति।

नोटः- इस बार किसी के भी सही उत्तर प्राप्त नहीं हुए।

बुद्धि और सद्बुद्धि :- *बुद्धि और सद्बुद्धि में बहुत फर्क है। बुद्धि हमारी चालाकी का नाम है और सद्बुद्धि समझदारी का। सारी चालाकियां बुद्धि से निकलती है और समझदारी सद्बुद्धि से। इसीलिए दुनिया में जितनी बुद्धिमानी बढ़ रही है उतनी ही चालाकियां भी बढ़ती जा रही है। होना तो यह चाहिए था कि लोग जितने शिक्षित होते, जितने बुद्धिमान होते उतने ही सरल, विनम्र और विद्यावान होते पर उलटा ही हुआ है और हो रहा है। आज का शिक्षित और बुद्धिमान व्यक्ति कम पढ़े-लिखे लोगों से अधिक चालाक, पाखण्डी और बेईमान हो गया है, दूसरे को मुर्ख बनाने और चूसने की कला में कुशल हो गया है जिससे यह तथ्य प्रकट होता है कि बुद्धि सांसारिक कुशलता व सफलता देती है और सद्बुद्धि समझदारी, ईमानदारी, तत्वज्ञान और परमात्मा के प्रति प्रेरणा व आध्यात्मिक शक्ति देती है।*

सूचना- अब पहेली के लिये ड्रा द्वारा प्रोत्साहन राशि पुरस्कार में दी जायेगी। इसके लिये ड्रा निकालकर क्रमशः तीन पुरस्कार तीन विजेताओं को रुपये 31/-, 21/-, 11/- एम.ओ.भेजे जावेंगे। सही उत्तरवाले नाम हम छापेंगे ही। आप सहयोग बनाये रखिये। धन्यवाद।

युवा जैनाचार्यश्री की सूरत के उधाना में महामांगलिक का आयोजन स्थानकवासी संघ ने करवाकर एकता का परिचय दिया

✻ पूना में सुयोग जिन मंदिर का भूमि पूजन हुआ। ✻ 24 दिसंबर को महामांगलिक उधाना मे हुई।✻ आगामी महामांगलिक पालीताना में होगी। 19 से 23 जनवरी को श्री सिद्धाचल छ:रि पालित संघ।✻ पालीताना में एक ओर धर्मशाला बनेगी।✻ तपस्वी मुनिश्री लब्धिरत्न सागरजी अट्ठम के साथ श्री शत्रुंजय तीर्थ की 11 यात्रा की। ✻ सूरत से शंखेश्वर तीर्थ होकर श्री सिद्धाचल पहुंचेंगे युवा जैनाचार्य। ✻ मध्यप्रदेश-राजस्थान के संघों में अनेक आयोजन। अंजन प्रतिष्ठा-दीक्षा में निश्रा रहेगी। ✻ अनेक प्रांतों से चार्तुमास की विनंती। ✻ गुरु मंदिर प्रतिष्ठा महोत्सव प्रतापगढ़ में होगा।

सूरत- मुंबई में चातुमार्सिक आराधना में गुरु नवरत्नसागरसूरीजी सूरत एवं सागर समुदाय का नाम धर्म क्षेत्र में शिखर पर पहुंचाने के बाद शासन प्रभावक कार्यों से पूज्यपाद गुरुदेव मालव भूषण आचार्यभगवंत श्री नवरत्न सागरसूरीजी महाराजा के नाम को रोशन करने वाले अपने युवा शिष्यों मंडली के साथ जिन शासन को शोभायमान करने वाले गुरु नवरत्न कृपापात्र, युवाहृदय सम्राट, महामांगलिक प्रदाता परम पूज्य युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरी जी म. सा.एवं युवा मुनि भगवंत प.पू. मुनि श्रीकीर्तिरत्न सागरजी म. सा. ,प.पू. मुनि श्रीतीर्थरत्नसागरजी म. सा. प.पू. मुनि श्रीउदयरत्नसागरजी म. सा. ,प.पू.मुनि श्री उत्तमरत्नसागरजी म. सा. ,प.पू.मुनि श्रीउज्ववलरत्न सागर जी म. सा.,प.पू. मुनि श्री,प.पू. मुनि श्रीरम्यरत्न सागरजी म. सा.,प.पू. मुनिश्रीलब्धि रत्नसागर जी म. सा.मुनिश्री शौर्यरत्न सागरजी म.सा. मुनिश्री ऋषभरत्न सागरजी म.सा.मुनिश्री सिध्दरत्न सागरजी म.सा.आदि ठाणा का विहार पूना के लिये हुआ था, कुछ मुनि भगवंत आगम शासन प्रभावक कार्यों की व्यवस्था को अंतिम रुप देने के लिये श्री सिद्धाचल महातीर्थ पहले ही पहुंच गया। पूना में जिन मंदिर का भूमि पूजन गोंडीजी और दादावाड़ी में स्थिरता के साथ जैन पंडितवर्यो के साथ चर्चा आदि कर सूरत की ओर विहार किया था, यहां उधाना में स्थानकवासी संघ के द्वारा 24 दिसंबर को महामांगलिक का आयोजन कर जैन एकता का परिचय दिया गया। यहां से आपका विहार श्री शंखेश्वर महातीर्थ की वंदना करने के लिए हुआ। शंखेश्वर से श्री सिद्धाचल महातीर्थ आगमन हुआ है, यहां जनवरी में स्थिरता कर साध्वी भगवंतों के स्थिरता के लिए 29 जनवरी को धर्मशाला का भूमि पूजन कर मध्यप्रदेश की ओर विहार होगा। शिवगढ़ में अंजन प्रतिष्ठा के साथ तनोड़िया में प्रतिष्ठा महोत्सव दीक्षा आदि जिन शासन कार्यों में निश्रादाता रहेंगे। इसके बाद प्रतापगढ़ की ओर विहार होगा साथ ही जोधपुर तथा बांदा में प्रतिष्ठा महोत्सव मई में निश्रा प्रदान करेंगे। विहार यात्रा में अनेक श्रीसंघों, नगरों में विविध शासन प्रभावक कार्य भी होंगे। अनेक स्थानों की विभिन्न प्रांतों से आगामी चार्तुमास की विनंति है। इसकी घोषणा मार्च-अप्रेल में हो सकती है। अन्य कार्यक्रमों की रुपरेखा बन रही है।

✻ ऐसा एक ही पदार्थ परिचय करने योग्य है कि जिससे अनंत प्रकार का परिचय निवृत्त होता है। वह पदार्थ कौन सा ? और किस प्रकार से ? इसका मुमुक्षु लोग विचार करते हैं।

परम पूज्य युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरी जी म. सा. आगामी संभावित आयोजनः-

✻ मुंबई महानगर से पूज्य गुरुदेव का विहार गुजरात की ओर से।
✻ श्री शंखेश्वर महातीर्थ की यात्रा।
✻ श्री शंखेश्वर से पालीताना की ओर विहार।
✻ पालीताना महातीर्थ में 5 दिवसीय छःरि पालित संघ- 19 जनवरी 2023 तक।
✻ 22 जनवरी को पालीताना महातीर्थ में नवरत्नधाम में महामांगलिक।
✻ पालीताना महातीर्थ से मध्यप्रदेश की ओर विहार यात्रा।
✻ शिवगढ़ नगर में अंजनशलाका प्रतिष्ठा महोत्सव-22 फरवरी 2023।
✻ तनोड़िया नगर में भव्यातिभव्य प्रतिष्ठा महोत्सव- 3 मार्च 2023।
✻ प्रतापगढ़ नगर में परम पूज्य आचार्यदेव श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा. का 80 वां जन्म महोत्सव- दिनांक 10 मार्च 2023।
✻ प्रतापगढ़ नगर में पोरवालो का मंदिर में भव्यातिभव्य प्रतिष्ठा महोत्सव- दिनांक 12 मार्च 2023।
✻ सूर्यनगरी जोधपुर के समीप स्थित 109 पार्श्वचंदन प्रभावती मंदिर में 109 पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमाओं की भव्य अंजनशलाका प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव- दिनांक 3 मई 2023।
✻ हाड़ौति क्षेत्र में स्थित लोकप्रिय धर्मानुरागी राजस्थान केबिनेट मिनिस्टर श्री प्रमोद जैन भाया के द्वारा बारा नगर में निर्मित भव्य जिनालय की प्राण प्रतिष्ठा अंजनशलाका महोत्सव में निश्रा उपस्थिति- दिनांक 23 मई 2023।
✻ श्री पालीताना महातीर्थ में नवनिर्मित नवरत्नधाम के सामने केशरियाजी के पास स्थित विशाल भूखण्ड पर भव्य धर्मशाला निर्माण हेतु भूमि पूजन 29 जनवरी 2023, रविवार।

देशभर में श्री पार्श्वप्रभु के जन्म दीक्षा कल्याणक पर हजारों अट्ठम तप और विविध आयोजन हुए

उज्जैन- सम्पूर्ण देश में 23 वें तीर्थकर परमात्मा श्री पार्श्वनाथ प्रभु के जन्म और दीक्षा कल्याणक पर हजारों की संख्या में अट्ठम तपाराधना के साथ विविध आयोजन हुए। पार्श्व प्रभु के 108 तीर्थो के साथ जहां भी मूलनायक श्री प्रभु पार्श्व विराजमान है वहां 5 दिवसीय आयोजन 16 से 20 दिसंबर तक आयोजन की बहार रही। अट्ठम के साथ संध्या भक्ति, पूजन, महापूजन प्रवचन, संगीत सभा, स्वामी वात्सल्य स्नात्र महापूजन जैसे विविध आयोजन हुए। परमात्मा की आंगी, मंदिरजी की सज्जावट, वरघोड़े आदि आयोजन भी हुए। इस बार श्री पार्श्व प्रभु का जन्म कल्याणक बहुत ही हर्षोल्लास, उमंग के साथ मनाया गया।

✻ सब कुछ अनुकूल होगा। इस अनुकूल के पीछे उस अज्ञात का हाथ है। वह यदि हमारा मन, मस्तिष्क हृदय का संतुलन बनाये रखा तो हम अवश्य उसे प्राप्त कर सकते हैं। यदि हम अपने संतुलन को खो देंगे। असंतुलित रहेंगे तो वह कैसे साध्य होगा।

गच्छाधिपति राजेन्द्र सूरीजी की अनुमोदना

मुंबई- 90 वर्षीय पूज्यपाद गच्छाधिपति के 90 वर्ष की वय की अनुमोदनार्थ 90 जैन श्री संघों में 90 आचार्य भगवंतों के साथ 90 पद पर विराजित 90 गुरु भगवंतों की निश्रा में सामुहिक सामायिक और गुरु गुण कीर्तन का आयोजन किया गया। पूज्य आचार्य भगवंत श्री राजयश सूरीजी, श्री यशोविजयसूरीजी तथा राजशेखर सूरीजी म.सा. की प्रेरणा से आयोजन हुआ।

✻ किसी की भूल को पकड़कर बैठ जाना सज्जन व्यक्ति का स्वभाव नहीं होता।

वरिष्ठतम जैनाचार्य श्री नंदीवर्धनसूरीजी के 90 वें जन्मदिवस पर 21 दिवसीय आयोजन

पूना- सागर समुदाय के वरिष्ठ-तम जैनाचार्य श्री नंदीर्धनसागरसूरीजी महाराज 90 वर्ष की वय को प्राप्त कर रहे है। आपकी अनुमोदनार्थ संपूर्ण भारत के जैन संघों में 21 दिवसीय जिन भक्ति गुरुभक्ति आयोजन किया जायेगा। सर्वाधिक संयम जीवनवाले ऊर्जाप्रदाता आपश्री 5 वें आचार्य है। सूरत के श्री रतनलाल पानाभाई मद्रासी ने गच्छाधिपति श्री माणिक्यसागर सूरीजी के वरद हस्ते सूरत में आगमोद्धारकश्री की मूर्ति प्रतिष्ठा दिनांक 9 फरवरी 1951 को शुक्रवार के दिन हुई थी उसी दिन आपकी दीक्षा सम्पन्न हुई। आपको पूज्यपाद मालव देशोद्धारक श्री चंद्रसागरसूरीजी की देशना पुन वैराग्य उत्पन्न हुआ था और पूज्यपाद गच्छाधिपति श्री देवेन्द्रसागर सूरीजी महाराजा के शिष्य घोषित किया गया था।

पालीताना में चार्तुमास, नव्वांणु, उपधान संघ के बाद मालवा के संतों के अतिव्यस्त शासन प्रभावक कार्य

✻ आगामी चार्तुमास नागपुर वर्धमान नगर में।

पालीताना- पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री जितरत्नसागर सूरजी महाराज 266 ओली आराधक श्री आचार्य श्रीचन्द्ररत्न सागरसूरी जी, मुनिश्री ज्ञानेशरत्नसागरजी मुनि श्री चैत्यरत्नसागरजी, मुनि श्री गोयम सागर जी म.सा. आदि ठाणा का उपधान और नव्वाणु यात्रा के बाद अति व्यस्त शासन प्रभावक धार्मिक आयोजनों की श्रृंखला है। वाणी के जादूगर पूज्य आचार्य भगवंत श्री जितरत्नसागरसूरीजी म.सा. की निश्रा में सोनकच्छ से पालीताना संघ के बाद 18 दिसंबर दो बार गांव का छःरिपालित संघ का आयोजन हुआ इसके साथ ही दिनांक 21 दिसंबर को नव्वाणु और छःरि पालित संघ की मालारोपण विधि सम्पन्न हुई। 26 दिसंबर को भी छःरि पालित संघ में निश्रा प्रदान की। आचार्य श्री जितरत्न सागरसूरीजी उज्जैन में अभ्युदयपुरम् में प्रतिष्ठा महोत्सव में निश्रा प्रदान करेंगे पूज्य आचार्य श्री चन्दरत्नसागर सूरीजी म.सा. की निश्रा में रिंगनोद में कुमारी दिशा की दीक्षा का महोत्सव मनाया जायेगा। मालवा के श्रीसंघों में भी विभिन्न शासन प्रभावक आयोजन आपके आगमन के समय होंगे। इसके बाद आपश्री सूरत में दिनांक 16 मार्च को पूज्य साध्वीवर्या श्री सम्यरत्ना श्रीजी के 200 ओली पारणा तपोत्सव में निश्रा प्रदान करेंगे। आगामी चार्तुमास वर्धमान नगर नागपुर में घोषित हुआ है। इधर पूना की भी विनंती है और इस बारे में निर्णय लेने में आयेगा।

केशरवाड़ी में उपधान तप

चैन्नई- श्री कलापूर्ण जैन आराधक मंडल के संयोजन में केशर वाड़ी में श्रावक से श्रमण बनने की धार्मिक क्रिया उपधान का आयोजन हो रहा है। पू. आचार्यश्री उदयप्रभ सूरीजी म.सा. की निश्रा में आयोजित होनेवाले उपधान का प्रथम मुहूर्त 18 दिसंबर को है, द्वितीय मुहूर्त 20 दिसंबर को हुआ मोक्षमाला रोपण 5 फरवरी 2023 को होगी।

बाल मुमुक्षु श्री वीर वीर श्रमण बनेंगे

निगड़ी- यहां विराजित सागर समुदाय के श्रमण परम्परा संवाहक संघवत्सल, संघ हितैषी, संघ कौशल्य धार संघ स्थिवर, परम अप्रमत्तयोगी, निर्ग्रन्थ शिरोमणी, पूज्यपाद जिनागम सेवी सुविशाल सागर समुदाय के गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री दौलतसागर सूरीश्वरजी महाराजा अजात शत्रु पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री नंदीवर्धनसागर सूरीश्वरजीं प्राचीन तीर्थोद्धारक सागर की शान पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री हर्षसागर सूरीश्वर जी महाराज आदि ठाणा की अमृत निश्रा में दिनांक 21 दिसंबर को 12 वर्षीय श्री वीरकुमार प्रतीकभाई विराणी को श्रमण भगवान श्री महावीर स्वामीजी के श्रमण संघ से सम्मिलित होने के लिये पूज्यपाद गच्छाधिपति ने दीक्षा का मंगल मुर्हूत प्रदान किया। आपकी दीक्षा 23 जनवरी 2023 को सम्पन्न होगी। आप अपना जीवन सकल संघ हित चिंतक प्राचीन तीर्थोद्धारक आचार्य भगवंत श्री हर्षसागरसूरीजी को समर्पण कर रहा है। दीक्षा के कार्यक्रम की रुपरेखा शीघ्र बन रही है।

भागकर शादी करने वाली श्रुति दीक्षा लेगी

पालीताना- श्रुति ने परिवार से भागकर शादी की इसके बाद पुनः लौटकर परिवार में आई। परिवारवालों ने उसे साधु-साध्वी भगवंतों का सम्पर्क करवाने से जीवन में परिवर्तन आने से अब श्रुति दिनांक 26 जनवरी को पूज्य जैनाचार्य जयानंदसूरीजी म.सा.की अमृत निश्रा में श्री कलिकुंड पार्श्वनाथ महातीर्थ में दीक्षा लेने जा रही है।

सागर समुदाय 2023 चार्तुमास..!

✽ संघ स्थविर, सुविशाल गच्छाधिपति पूज्यपाद आचार्य श्री दौलतसागर सूरीश्वरजी महाराजा, पूज्य नंदिवर्धनसागर सूरीश्वरजी म.सा. पू.आ.श्री नरदेवसागर सूरीश्वरजी म.सा. पू.आ.श्री हर्षसागर सूरीश्वरजी म.सा. पू.आ.श्री जितरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा., पू.आ.श्री चंद्ररत्नसागर सूरीजी म.सा., पू.आ.श्री मुक्तिसागर सूरीजी म.सा., पू.पं. श्री अचलमुक्तिसागरजी म.सा.,पू.पं. श्री विरागसागरजी म.सा., पू.मुनिवर श्री ऋषभचंद्रसागरजी म.सा., पू.मुनिवर श्री जयचंद्रसागरजी म.सा. आदि 150 का चार्तुमास कोडवा-पूना (महा.) में होगा।

✽ पू.आ.श्री अशोकसागर सूरीश्वरजी म.सा., पू.आ.श्री सौम्यचंद्र सागर सूरीश्वरजी म.सा., पू.आ.श्री विवेकचंद्रसागर सूरीश्वरजी म.सा. आदि का चार्तुमास नागेश्वर महातीर्थ, नागेश्वर, उन्हेल (राज.) में होगा।

✽ पू.आ.श्री जिनचंद्रसागर सूरीश्वरजी म.सा., पू.आ.श्री हेमचंद्र सागर सूरीश्वरजी म.सा., पू.पं.श्री विरागचंद्रसागरजी म.सा. आदि 100 का चार्तुमास पालीताना (गुज.) में होगा।

✽ पू.आ.श्री चंद्राननसागर सूरीश्वरजी म.सा. आदि का चार्तुमास मुंबई क्षेत्र में होगा।

✽ पू.आ.श्री चंद्रशेखारसागर सूरीश्वरजी म.सा. आदि पादलिप्तपुरम् पालीताना (गुज.) में होगा।

✽ पू.आ.श्री सागरचंद्रसागर सूरीश्वरजी म.सा., पू.गणिवर्य श्री तीर्थचंद्रसागरजी म.सा. पू.गणिवर्य श्री मोक्षचन्द्रसागरजी म.सा. आदि बाबुलनाथ,वालकेश्वर, मुंबई (महा.) में होगा।

✽ पू.आ.श्री नयचन्द्रसागर सूरीश्वरजी म.सा., पूज्य मुनिवर श्री अजितचंदसागरजी म.सा. आदि का चार्तुमास भायकला-मुंबई (महा.) में होगा।

✽ पू.आ.श्री पूर्णचंद्रसागर सूरीश्वरजी म.सा., पू.मुनिवर श्री संभवचंद्रसागरजी म.सा. आदि का चार्तुमास दादा साहेब, भावनगर (गुज.) में होगा।

✽ पू.आ.श्री अक्षयचंद्रसागर सूरीश्वरजी म.सा., पूज्य मुनिवर श्री नयशेखारसागरजी म.सा. आदि का चार्तुमास भायंदर- मुंबई (महा.) में होगा।

✽ पू.आ. श्री मृदुरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा. आदि का चार्तुमास कुरार विलेज, कादिंवली ईस्ट, मुंबई (महा.) में होगा।

✽ पू.आ.श्री मतिचंद्रसागर सूरीश्वरजी म.सा. आदि का चार्तुमास नयापुरा, उज्जैन (म.प्र.) में होगा।

✽ पू. आ.श्री गुणचंद्रसागर सूरीश्वरजी म.सा. आदि का चार्तुमास बोटाई में होगा।

✽ पू.पंन्यास श्री लब्धिचंद सागरजी म.सा. आदि का चार्तुमास आगम मंदिर, पालीताना (गुज.) में होगा।

✽ पू.पंन्यास श्री प्रसन्नचंद्र सागरजी म.सा. आदि का चार्तुमास नीमच (म.प्र.) में होगा।

✽ पू.पंन्यास श्री अपूर्वचंद्र सागरजी म.सा., पू. गणिवर श्री रम्यचंद्र सागरजी म.सा. आदि का चार्तुमास इन्दौर (म.प्र.) में होगा।

✽ पू. गणिवर्य श्री दर्शनचंद्र सागर जी म.सा. आदि का चार्तुमास सायवशे, अहमदाबाद क्षेत्र (गुज.) में होगा।

✽ पू. गणिवर्य श्री आगमचंद्र सागरजी म.सा. आदि का चार्तुमास लुणावडा में होगा।

✽ पू. गणिवर्य श्री आनंदचंद्र सागरजी म.सा. आदि का चार्तुमास रेसक्रास रोड़, इन्दौर (म.प्र.) में होगा।

✽ पू.गणिवर्य श्री आदर्शरत्न सागरजी म.सा., पू.मुनिवर श्री अक्षत-रत्नसागरजी म.सा. आदि का चार्तुमास भवानीमंडी (राज.) में होगा।

✽ पू.मुनिवर श्री सुधर्मसागरजी म.सा.का चार्तुमास जानपुर, अहमदाबाद (गुज.) में होगा।

✽ पू.मुनिवर श्री सुमतिसागरजी म.सा. का चार्तुमास पालीताना (गुज.) में होगा।

✽ पू. मुनिवर श्री दीपरत्न सागर जी म.सा. का चार्तुमास पार्श्व-विहार, जामनगर (गुज.) में होगा।

✽ पू. मुनिवर श्री कुलरत्न सागर जी म.सा. का चार्तुमास गोपीपुरा सूरत (गुज.) में होगा।

✽प्रर्वतक पू.मुनिवर श्री देवप्रभ सागरजी म.सा. पू.मुनिवर श्री विनीत सागरजी म.सा., पू. मुनिवर श्री विनम्र सागरजी म.सा.आदि का चार्तुमास मुंबई क्षेत्र (महा.) में होगा।

✽ पू. मुनिवर श्री कल्पचंद्र सागरजी म.सा. आदि का चार्तुमास सूरत क्षेत्र(गुज.) में होगा।

✽ पू. मुनिवर श्री अभिनंदनचंद्र सागरजी म.सा. आदि का चार्तुमास नरसापुर (आं.प्र.) में होगा।

✽ पू.मुनिवर श्री सिद्धचंद्र सागरजी म.सा. आदि का चार्तुमास राजस्थान में होगा।

✽ पू. मुनिवर श्री निपुणचंद्र सागरजी म.सा. आदि का चार्तुमास सेवाडी-राजस्थान में होगा।

✽ देव-देवियों की प्रसन्नता को क्या करेंगे ? जगत की प्रसन्नता को क्या करेंगे ? प्रसन्नता सत्पुरुष की चाहो।

।। श्री परमात्माय नमः ।।

जीवदया फंड

शेठ नगीनचंद कपुरचंद झवेरीना प्रयासथी

श्री नगीनचंद कपुरचंद झवेरी

सुभाष चौक, गोपीपुरा, सुरत - 1
मो.: 09825414470 / 9820078772
स्थापना वि. सं. 1962
इ.स. 1906 रजि. नं.- 1744
PAN : AAATS8024L

पैसा भेजने का पता :

प्रफुल अमीचंद झवेरी

26, खटाऊवाडी, गोरेगांवकर लेन,
सेन्ट्रल सिनेमानी पाछळ,
मुंबई - 400 004.
ऑफिस फोन : 2387 8476
मोबाईल : 98200 78772

धर्मप्रेमी सद्‌गृहस्थश्री, सादर प्रणाम !

जीवदया फंड संस्था सुरत के दानवीर शेठ श्री नगीनचंद कपुरचंद झवेरी के प्रयासों के द्वारा स्थापित एक रजीस्टर्ड ट्रस्ट है। यह जीवदया फंड संस्था के द्वारा कतल के लीये जानेवाले ओर बीन उपयोगी जीवो को छुडवाकर के सुरत की पांजरापोल में भेजा जाता है। यह कार्य पीछले ११४ सालो से यह संस्था कर रही है। ओर शेठश्री के उत्तम पुण्यबल की वजह से यह कार्य के अंदर लगातार प्रतिवर्ष प्रगति हो रही है। जैसे की पीछले पांच सालो के दौरान (एप्रील - २०१४ से मार्च - २०१९) १०७९८ जीवो को छुडाया / बचाया गया है।

हमारे आंगन में आनेवाले बेझुबान जीवो को पांजरापोल के अंदर ट्रस्टीओ के द्वारा नीगरानी करके सोंपा जाता है। ओर पशु के संपूर्ण जीवनकाल तक उसको संभालकर रखा जाता है।

अनंत दया के सागर भगवान श्री महावीर प्रभु के शासन के दो स्तंभ है। अहिंसा ओर जीव के उपर मैत्री। सर्वज्ञश्री के यह संदेश को सार्थक करने के लिये दीनो का भी बहुत बडा महत्व है। जैसे की

आपके परिवार के कोई भी सभ्य का जन्मदिन
पशु परिवार के एक सभ्य को जीवनदान देकर मना सकते है।

आपके परिवार मे आये हुए शुभ लग्नोत्सव के दीन
एक पशु युगल को जीवनदान देकर उनका जीवन उत्सवमय बना सकते है।

कर्मसंयोग के कारन आई हुई बीमारी का दुःख ओर अशाता को टालने के लीये
कोई पशु को अभयदान प्रदान करके महाशाता का सुख प्रदान करे।

अपने स्वजन के मृत्यु के दुःखद समय में एक पशु को
मृत्यु के मुखमें से छुडवाने से आपश्री को सांत्वना भी प्राप्त होती है ओर आपके स्वजन की सदगति प्राप्ती की प्रार्थना भी कर सकते है।

पवित्र पर्व के धर्मोत्सव के समय एक जीवको
जीवनदान देकर पर्व उपासना को दया ओर करुणामय बनाये।

आपश्री हंमेशा के लीये तिथि का भी चयन कर सकते है। यह तिथि के दीन दान में दी गई रकम का जो ब्याज मीलता है उसमें से जीव को छुडवाया जायेगा।

यह संस्था के द्वारा एप्रील २०२० से मार्च २०२१ के एक वर्ष के समय जो की लोकडाउन था,
उस समय में कुल २५९१ जीवो को छुडवाया गया है।

आपश्री चेक या ड्राफ्ट जीवदया फंड के नाम का बनाए। रोकड रकम में भी आप योगदान दे सकते है। (आपश्री का अनमोल योगदान सुरत ओर मुंबई में उपर दिये गये पते पर भीजवा सकते है।)

आपश्री आपका योगदान हमारे बेन्क खाते के अंदर भी जमा करवा सकते है। जीसकी जानकारी नीचे दी गई है। हमारी संस्था का 80-G नंबर AAATS 8024 LF 20210 है।

Bank Name	: AXIS BANK LTD.	Bank Name	: BANK OF INDIA
A/c. Name	: JIVDAYA FUND	A/c. Name	: JIVDAYA FUND
IFSC	: UTIB0002274	IFSC	: BKID000001
A/c. No.	: 921010033621820	A/c. No.	: 00120100001219
Branch	: Charni Rd, Mumbai	Branch	: Mumbai Main Branch

जीवदया की शुभ भावना से कीये हुए कार्य से अक्षय सुख ओर मोक्षमार्ग की प्राप्ति होती है ओर नरकगति के कर्म का ओर अनेक भवो के पापो का क्षय भी जीवदया का कार्य करने से होता है। जीवदया का कार्य तीनो लोकमें श्रेष्ठ ओर सर्वोत्तम कार्य है।

दान अेज सफल जीवन

लि. ट्रस्टीगण

प्रफुल अमीचंद झवेरी
पुष्पसेनभाई पानाचंद झवेरी
विरेन्द्र नेमचंद झवेरी

नतीनभाई फकीरचंद
शरदभाई गुलाबचंद कांटावाला
उषाकांत साकेरचंद झवेरी

पूज्य गच्छाधिपति आचार्य विज्ञानप्रभसूरीजी म.सा के आगामी कार्यक्रम

✻ 13 जनवरी 2023, पोष वदि -6 को श्री सुमतिनाथ जैन श्वे. मू.पू. संघ, बोरसद बंधुबेलड़ी पू. मुनि पुंडरीकप्रभविजयजी म.सा. की द्वितीय वार्षिक स्वर्गतिथि पर गुणानु वाद सभा पू.सा.प्रशांत रसा श्रीजी म.सा. की वर्धमान तप की 100 वीं ओली का पारणा।

✻ 27 जनवरी 2023, माघ सुदि-6, को श्री पारस सोसायटी श्वे. मू. पू. जैन संघ, बरोड़ा श्री शीतलनाथ जिनालय की पुनः प्रतिष्ठा का भव्य कार्यक्रम।

✻ 1 मार्च 2023 फाल्गुन सुदि-10, को श्री केशर हेम प्रवज्या मंडप, भिवंडी में निवासी मुमुक्षु मनिषा कुमारी जवेरीलालजी मुणोत की भागवती प्रवज्या।

ले लो....

छाछ में से मक्खान, कीचड़ में से कमल, समुद्र में से अमृत, वांश में से मोती, मिट्टी में से सोना, फूल में से सुगंध, वृक्ष में से फल, फल में से रस, शरीर में से धर्म !

आचार्यश्री महासेनसूरीजी म.सा. की कर्णाटक में शासन प्रभावना

✻ प.पू. दादा गुरुदेव आ.श्री लब्धिसूरीजी म. के पूज्य शंखेश्वर प्रेमी आ. महासेनसूरीजी ठाणा-4 की निश्रा।

✻ भाद्र पद मास में पूज्यश्री ने सूरिमंत्र साधना मौन सह की, अंत में समूह में श्री गौतमस्वामी महापूजन ठाठ से हुआ।

✻ आसोज नवपद ओली पूज्यश्री की प्रेरणा से 360 भाविकों ने ओली आराधना की, सुदि-14 को 500 आयंबिल हुए, विशिष्टप्रभावना दी गई।

✻ वि.सं.2079 का चार्तुमास विनंति अनेक संघों की, इसमें अक्की पेठ बेंगलोर श्री वासुपूज्य संघ की जय बुलाई गई।

✻ दावण गिरि के 13 जिनालयों की वाजते-गाजते चैत्य परिपाटी ठाठ से की गई।

✻ का.व.2,3 को चैत्य परिपाटी करके का.व.4 को नागेश्वर पार्श्वतीर्थ में पधारे, पाठशाला के बालक-बालिकाओं का समूह स्नात्र महोत्सव हुआ।

✻ का.व.4 ता. 13-11-2022 को शुभ मुर्हूत में बैंगलोर की ओर विहार प्रारंभ किया, चित्रादुर्ग-हीरीयुर होते हुए टुमकुंर पधारे, शिखरबंधी जिनालय की प्रेरणा देकर मा.सु.13, ता. 8 दिसंबर को सस्वागत 44 वर्षो से पू.आ.श्री अमरसेन सूरीजी, आ.श्री अजितसेन सूरीजी का मिलन हुआ, आ.श्री अरविंदसागर सूरीजी उपधान आराधकों सह गुरुदेवश्री के सन्मुख पधारे थे, श्री पार्श्व सुशीलधाम में श्री शंखेश्वर पार्श्व प्रभु के दर्शन से आनंदित हुए।

✻ पूज्यश्री की निश्रा में अक्कीपेठ-बेंगलोर संघ में पौष दशमी की अट्ठम आदि की आराधना समूह में हुई। चैत्री ओली तथा उपधान तप श्री पार्श्व सुशील धाम में होगा।

✻ पूज्यश्री की प्रेरणा से श्री पार्श्वलब्धिपुरम में पौष दशमी मेला-अट्ठम आराधना हुई।

मालव विभूषण पू.अनुयोगाचार्य श्री वीररत्न- विजयजी म.सा. के आगामी कार्यक्रम

✻ 26 जनवरी 2023 : बसंत पंचमी, शिवपुर महातीर्थ मातमोर में श्री माणिभद्रवीर का विशाल भव्य जन्मोत्सव।

✻ 1 फरवरी : पूज्य अनुयोगाचार्यश्री का 60 वां षष्ठिपूर्ति भव्य दीक्षा दिन समारोह श्री शिवपुर मातमोर में।

✻ 20 से 22 फरवरी : पूज्य अनुयोगाचार्य श्री वीररत्नविजयजी म.सा. का 71 वां भव्य जन्म-दिन महोत्सव- श्री जैन श्वे.राऊ, जन्मदिन : 22 फरवरी।

✻ 1 मार्च : श्री सिद्धाचल वीरमणि तीर्थधाम शाजापुर, श्री आदिनाथ प्रभु की अंजनशलाका प्रतिष्ठा।

✻ 29 मार्च से 6 अप्रेल तक : 400 तपस्वी साधकों के साथ चैत्रमास की विशाल नवपद ओली आराधना श्री ऋषभदेव छगनीराम जैन श्वे. पेढ़ी, खाराकुआ उज्जैन में।

श्री शंखेश्वरपुरम् का प्रतिष्ठा महोत्सव में सागर गच्छाधिपति के साथ अनेक जैनाचार्यों की निश्रा में होगी

✻ 9 दिसंबर को ईको साईन्स प्रदर्शन।

✻9 दिसंबर को साईन्स प्रौजेक्ट लांज-बीना बहन की दीक्षा

पालीताना- श्री सिद्धाचल महातीर्थ के समीप बने श्री शंखेश्वरपुरम् तीर्थ में प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन पूज्यपाद गच्छाधिपति संघ स्थविर आचार्य भगवंत श्री दौलतसागरसूरीजी महाराजा के साथ अनेक साधु-साध्वी भगवंत की अमृत निश्रा में होगी, लगभग 400 साधु-साध्वी भगवंतों की उपस्थिति का अनुमान है। दिनांक 8 से 12 दिसंबर 2022 तक यह आयोजन होगा। भव्य पंचकल्याण स्टेच कार्यक्रम का आयोजन होगा। च्वयन आदि कार्यक्रम के साथ दीक्षा भी होगी। दिनांक 11 दिसंबर को अनेक वैज्ञानिकों की उपस्थिति में साईन्स प्रोजेक्ट का शुभारंभ होगा। दिनांक 12 दिसंबर को अंजन प्रतिष्ठा के साथ संघपति की संघमाल भी होगी। दिनांक 13 दिसंबर को सभी गुरु भगवंतों का प्रवेश पालीताना में होगा। यह श्री सिद्धाचल की भावयात्रा के साथ पारणा भवन 36 संगीतकारों के द्वारा गिरिराज की भक्ति का आयोजन होगा। दिनांक 14 दिसंबर को मेरुगिरी महोत्सव के अंतर्गत सभी पगलिया (सीढ़ियों) का पूजन किया जायेगा।

निश्रा प्रदाता गुरु भगवंत

प.पू.आचार्य श्री नंदीवर्धन सागर सूरीश्वरजी म.सा., ''लघु त्रिपुटी'' प.पू. आ.श्री अशोक सागर सूरीजी म. सा., प.पू.आ.श्री जिनचंद्रसागर सूरीजी म. सा., प.पू.आ.श्री हेमचंद्रसागर सूरीजी म. सा., प.पू.आ.श्री हर्षसागर सूरीजी म. सा., प.पू.आ.श्री जितरत्न सागरसूरी जी म.सा., प.पू.आ. श्री चंद्ररत्नसागर सूरीजी म.सा., प.पू. आ.श्री सागरचंद्र सागरसूरीजी म.सा. प.पू. आ.श्री नयचंद्र सागर सूरीजी म.सा. प.पू.आ.श्री पूर्णचंद्र सागर सूरीजी म.सा. प.पू.आ.श्री अक्षय चंद्रसागरसूरीजी म.सा., प.पू.आ.श्री मतिचंद्र सागरसूरी जी म.सा., प.पू.आ.श्री मृदुरत्नसागर सूरीजी म. सा.,पू.पंन्यास श्री लब्धिचंद्रसागरजी म. सा., प.पंन्यास श्री दिव्येशचंद्र सागर जी म.सा.

पौष दशमी पर 600 आराधकों ने अट्ठम तप वचनसिद्ध जैनाचार्य की निश्रा में किये

शंखेश्वर- सागर समुदाय के वरिष्ठजैनाचार्य भोपावर तीर्थ प्रतिष्ठा चार्य श्री नरदेवसागरसूरीजी म.सा. 97 ओलीजी आराधक मुनिश्री पद्म कीर्ति सागरजी म. सा. के साथ साध्वी श्री आत्मप्रज्ञा श्रीजी म.सा. एवं साध्वी श्री भद्रगुप्ता श्रीजी म.सा. आदि ठाणा-4 की निश्रा में भव्य रुप से परमात्मा श्री अजितनाथ प्रभु, श्री गोड़ी पार्श्वनाथ एवं श्री जीरावला पार्श्वनाथ प्रभु की छत्राछाया में अट्ठम तपाराधना में 600 से अधिक तपस्वियोंने जुड़कर तपस्या का रिकार्ड। परमात्मा प्रभु श्री पार्श्वनाथ दादा के जन्म दीक्षा कल्याणक पर दिनांक 17 से 19 दिसंबर तक यह आराधना वाव (गुज.) में हुई। श्रीमती पुष्पा बहन प्रभुलाल दुदाचंद कुलड़िया परिवार, वाव ने इस आराधना का लाभ लिया।

ठाणे में पौष दशमी आराधना

ठाणे- यहां के कासर वदवती में स्थित श्री शंखेश्वर तीर्थधाम में मुनिश्री अर्पणविजयजी के संयम जीवन के 5 वर्ष पूर्ण होने पर श्री पार्श्वनाथ प्रभु के जन्मदीक्षा कल्याणक पर 17 से 29 दिसंबर तक आयोजित अट्ठम तपाराधना में 150 तपस्वियों ने भाग लिये। जे.के. संघवी ने प्रबंध व्यवस्था संभाली। साध्वी परम क्षमाश्रीजी म.सा. की निश्रा में आयोजन हुआ। सात बहनों ने पौषध के साथ अट्ठम किया।

साध्वीश्री सौम्यवंदना श्रीजी का चार्तुमास

उज्जैन- सागर समुदाय की साध्वीवर्या श्री सौम्यवंदना श्रीजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास ऋषभदेव छगनीराम पेढ़ी पर होने की संभावना है। इस संदर्भ में दिनांक 27 जनवरी 2023 को रिंगनोद में होनेवाले दीक्षा महोत्सव में पूज्य ओली आराधक आचार्य श्री चंद्ररत्नसागरजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में घोषणा होने की संभावना है।

भीवड़ी में उपधान तप

भीवड़ी- ओसवाल पार्क में पूज्य आचार्य भगवंत श्री यशोरत्न सूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में श्रावक से श्रमण बनाने वाली आराधना उपधान तप का आयोजन होने जा रहा है। प्रथम प्रवेश दिनांक 29 नवंबर तथा द्वितीय प्रवेश दिनांक1 दिसंबर को हुवा। उपधान तप की माल 18 जनवरी 2023 को होगी।

भोपावर-तृतीय ध्वजारोहण वर्षगांठ एवं महामांगलिक का आयोजन

भोपावर- 87000 हजार वर्ष प्राचीन श्री शांतिनाथ प्रभु का महातीर्थ अब विश्व ख्याति प्राप्त कर चुका है। दो वर्ष पूर्व फाल्गुन सुदी-3 को भव्य प्रतिष्ठा महोत्सव सम्पन्न हुआ था। मोन्टेक्स ग्रुप के श्री रमणभाई मुथा के नेतृत्व में यादगार महोत्सव का आयोजन आज भी धर्मिष्ठों को याद आता है। महातीर्थ का तृतीय ध्वजारोहण महोत्सव आचार्य भगवंत श्री नवरत्नसागर सूरीजी महाराजा के प्रशिष्य गणिवर्य श्री आदर्शरत्न सागर जी म.सा. आदि ठाणा श्रमण-श्रमणी वृंद की पावन निश्रा में फागुन सुदी-2 दिनांक 21फरवरी को पूज्यश्री महामांगलिक एवं फागुन सुदी-3 दिनांक 22 फरवरी को श्री शांतिनाथ प्रभु के भव्य जिनालय एवं गुरु मंदिर पर ध्वजारोहण सम्पन्न होगा।सत्तर भेदी पूजन पढ़ाई जायेगी। चैन्नई निवासी श्री तेजराज कोठारी परिवार ध्वजा के लाभार्थी है। इस अवसर पर पूज्यपाद गुरुदेवश्री के मंदिर पर भी ध्वजा चढ़ाई जावेगी। श्री रमणभाई, श्री हितेशभाई आदि के साथ अनेक विशिष्ट अतिथियों का आगमन होगा।

द्वारिका में नेमिजिन तीर्थ की अंजन प्रतिष्ठा आचार्य पद महोत्सव

मुंबई- द्वारिका में पूज्य आचार्य भगवंत श्री ललितशेखर, श्री मनमोहन श्री रविशेखर,श्री हेमप्रभ,श्री धर्मशेखर श्री जयधर्म सूरीश्वरजी म.सा. आदि विशाल संख्या में साधु-साध्वी भगवंतों की निश्रा में श्री नेमिजिन तीर्थ की अंजन प्रतिष्ठा महोत्सव के साथ आचार्य पद प्रदान एवं दीक्षा महोत्सव का भव्य आयोजन होने जा रहा है। दिनांक 19 से 24 फरवरी 2023 तक आयोजित महोत्सव में बावन जिनालय प्रतिष्ठा होगी और पंन्यास श्री हर्षशेखर विजयजी म.सा. का आचार्य पद प्रदान किया जायेगा इसके लिये एक स्पेशल ट्रेन से धर्मिष्ठ लाभार्थी भीवड़ी से द्वारिका पहुंचेंगे।

सूरत उमरा से श्री सिद्धाचल महातीर्थ का भव्य छःरि पालित यात्रा संघ का आयोजन

उमरा- पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री अशोकसागर सूरीजी महाराजा, बंधुबेलड़ी बंधुबेलड़ी आचार्य भगवंत श्री जिनचंद्रसागर सूरीजी एवं आचार्य श्री हेमचंद्रसागरसूरीजी म.सा.आचार्य श्री लब्धिचंद्रसागरसूरीजी, आचार्य श्री सौम्यचंदसागरससूरीजी म.सा. आदि विशाल संख्या में श्रमण-श्रमणीवृंद की अमृत निश्रा में उमरा से श्री सिद्धाचल महातीर्थ का छःरिपालित यात्रा संघ का आयोजन हुआ। उमरा से संघ का प्रयाण दिनांक 24 नवंबर को हुआ। संघ ने दादा के दरबार में 23 दिसंबर को प्रवेश किया एवं 24 दिसंबर को संघ की माल दादा के दरबार में हुई, इसी दिन दादा के शिखर पर भव्य ध्वजा चढ़ाई गई। ध्वजा को बधाने का आयोजन विगत दिनों ध्वजा उत्सव के रुप में मनाया गया। ध्वजा चढ़ाने का लाभ कंचन बहन कीर्तिलाल छोगमल जी शाह परिवार ने लिया है।

सुव्रत उदय उपधान महोत्सव

चैन्नई- पूज्यपाद गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री उदयप्रभ सूरीश्वर जी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में चैन्नई में श्रावक से श्रमण बनने धर्म क्रिया आराधना का आयोजन होने जा रहा है। उपधान तप में प्रवेश का प्रथम मुर्हूत 23 अप्रेल 2023 को है। उपधान तप की माल दिनांक 11 जून 2023 को होगी। उपधान तप के लाभार्थी संघवी सरोज बहन कोठारी परिवार है।

अयोध्यापुरम् से श्री शत्रुंजय तीर्थ

पालीताना- पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री कुमुदचंदसूरीजी म.सा. आदि ठाणा की अमृत निश्रा में अयोध्यापुरम् तीर्थ से श्री शत्रुंजय महातीर्थ का छःरिपालित यात्रा संघ का आयोजन मण्डलेचा परिवार धार के द्वारा हो रहा है। संघ प्रयाण 4 जनवरी को होगा। पालीताना प्रवेश 8 जनवरी तथा 9 जनवरी को दादा के दरबार में माल होगी।

गिरनारजी में 108 नव्वांणु यात्रा होगी

चैन्नई- श्री आदिनाथ जैन ट्रस्ट के तत्वावधान में श्री गिरनार महातीर्थ में 108 नव्वांणु यात्रा का भव्य आयोजन होने जा रहा है। अध्यात्म योगी श्री महेन्द्रसागरजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में यात्रा का आरंभ दिनांक 22फरवरी 2023 को होगा। संघमाल 26 मार्च को होगी।

चार्तुमास- पूज्य पंन्यास प्रवर श्री लब्धिवल्लभविजयजी म.सा. का वर्ष 2023 का चार्तुमास ईटला जैन संघ मुंबई में होगा।

आचार्य श्री रत्नसुन्दरसूरीजी की 400 वीं पुस्तक विमोचन में 12 दिन के महोत्सव में 10 लाख भक्तों की उपस्थिति

अहमदाबाद-अगले माह नये वर्ष में पूज्यपाद सरस्वती पुत्र जैनाचार्य श्री रत्नसुन्दर सूरीजी म.सा. की 400 वीं पुस्तक के विमोचन महोत्सव में 10 लाख धार्मिष्ठों की उपस्थिति की स्थापना है। 12 दिवसीय आयोजन जीएमडीसी ग्राउण्ड में होगा। इस महोत्सव में 1200 साधु-साध्वी भगवंतों की अमृत उपस्थिति रहेगी। 400 वीं पुस्तक का विमोचन 22 जनवरी को होगा। इस पुस्तक का प्रकाशन 15 से अधिक भाषा में विमोचन होगा। आपश्री के द्वारा लिखित पुस्तक देश-विदेश में 90 लाख की संख्या में वितरित हो चुकी है। प्रवेश द्वार 1500 फीट लम्बा तथा 70 फीट ऊंचा बनाया जा रहा है। महोत्सव में 30 फीट की गिरनार तीर्थ प्रतिकृति का निर्माण किया जा रहा है साथ ही मंदिर का निर्माण किया जा रहा है जो 300 फीट का होगा। इसमें एक साथ 5000 धर्मिष्ठ 69 ईंच की श्री नेमिनाथ प्रभु की प्रतिमा के दर्शन कर सकेंगे। साधु-साध्वीजी के लिये 200 से अधिक कुटीर ठहरने के लिये बनाई जा रही है। 25 हजार लोग बैठ सके ऐसा 300 फीट लम्बा प्रवचन हाल बनेगा।

मुनिश्री अक्षतरत्नसागरजी को भोपावर में गणिपद ध्वजारोहण के साथ प्रदान की जायेगी

✻ पंच दिवसीय आयोजन में अंजनशलाका भी होगी।

✻ पौष दशमी आराधना नितोड़ा में हुई।

भोपावर- पूज्यपाद गणिवर्य श्री आदर्शरत्नसागरजी म.सा.आदि ठाणा की निश्रा मे मुनिपुंग शतायधानी श्री अक्षतरत्नसागरजी म.सा. का गणिपद पर प्रतिष्ठित किया जायेगा। भोपावर महातीर्थ में श्री शांतिनाथ प्रभु की तृतीय वर्षगांठ के शुभ प्रसंग पर आपको गणि पद प्रदान किया जायेगा इसके साथ ही भोपाल में मार्च में होनेवाले प्रतिष्ठा महोत्सव में विराजित होने वाले परमात्मा की अंजनशलाका भी इस प्रसंग पर होने जा रही है। राजस्थान के आबू के समीप स्थित श्री चिंतामणी पार्श्वनाथ प्रभु के तीर्थ में आपकी निश्रा में पौष दशमी की आराधना भव्य रुप से सम्पन्न हुई। पंच दिवसीय आराधना में बड़ी संख्या में अट्ठम तप हुए।

कालधर्म:- पालीताना में वल्लभ समुदाय के वरिष्ठ आचार्य भगवंत श्री बसंत विजय सूरीजी म.सा. का देवलोक गमन 10 दिसंबर को हुआ। आपकी पालकी 11 दिसंबर को पंजाबी धर्मशाला से निकली।

✻ परमानंद रुप हरि को एक क्षण के लिये भी न भुलना, यह हमारी सर्व कृति, वृत्ति और लेखका हेतु है।

मुनिश्री विशुद्धरत्नसागरजी का हिमालय की ओर प्रयाण

उज्जैन- पूज्यपाद गुरुदेव मालव भूषण आचार्यदेवेश श्री नवरत्नसागर सूरीजी महाराजा के गुरुकुल के रत्न मुनिश्री विशुद्धरत्नसागरजी एवं मुनिश्री समकितरत्नसागरजी म.सा. ने हिमालय की ओर प्रयाण किया है, नाम के अनुरुप शुद्ध सात्विक चारित्र का पालन करने वाले मुनिश्री एकांत में रहते हुए साधना करते रहे है, मोबाईल आदि से सम्पर्क से दूर रहनेवाले मुनिश्री का विहार झांसी से लखनऊ होते हुए चल रहा है।

पूना में अट्ठम तपाराधना

पूना- श्री आदिश्वर महाराज मंदिर ट्रस्ट एवं श्री गोरीवाला ओसवाल जैन संघ में पूज्य साध्वी श्री ऋतुप्रज्ञा श्रीजी म.सा. आदि ठाणा की पावन निश्रा में श्री पार्श्वनाथ प्रभु के जन्म दीक्षा कल्याणक पर अट्ठम तप का आयोजन किया गया। दिनांक 16 दिसंबर को उत्तर पारणा एवं 17 से 19 दिसंबर तक अट्ठम तप हुए, दिनांक 20 दिसंबर को पारणा एवं तपस्वीयों का बहुमान किया गया।

श्री गिरनार महातीर्थ का संघ

रावणगिरी- पंकुबहन परमार परिवार के द्वारा प्राचीन वंथली तीर्थ से श्री गिरनार महातीर्थ का छःरिपालित यात्रा संघ का आयोजन दिनांक 11 से 14 फरवरी तक किया जा रहा है। संघ पूज्य जैनाचार्यश्री रश्मिरत्नसूरीजी म.सा., आचार्यश्री संयमरत्नसूरीजी म.सा., आचार्य श्री हेमवल्लभ सूरीजी म.सा.आदि विशाल संख्या में श्रमण-श्रमणीवृंद की निश्रा में निकलेगा।

वीररत्न विजयजी को आचार्य पदवी प्रदान की जायेगी

उज्जैन- पूज्य अनुयोगाचार्य श्री वीररत्न विजयजी म.सा. को आचार्य पदवी प्रदान की उद्‌घोषणा हुई। आपके आचार्य बनने का भक्तों को बरसों से इंतजार था। पूज्यश्री को बहुप्रतिक्षित आचार्य पदवी मिलने के समाचार मिलते ही गुरु भक्तों में हर्ष की लहर दौड़गई। सभी गुरुभक्तों ने मिलकर एक दूसरे को बधाई दी एवं खुशियां व्यक्त की। जैन जगत के 24 तीर्थंकरों ने प्रति स्वरुप 24 साधु साध्वी भगवंत की उपस्थिति में यह घोषणा हुई। इस अवसर पर आचार्य श्री पद्‌मभूषण सूरीजी भी उपस्थित थे। पूज्य अनुयोगाचार्य वीररत्न विजयजी को आचार्य पदवी की आज्ञा पूज्य गच्छाधिपति श्रीमद् विजय राजेन्द्र सूरीश्वरजी ने प्रदान की। यह आज्ञा प्रदान करते हुए गच्छाधिपति ने कहा कि प्रेम भुवनभानु सूरी समुदाय के 700 साधु-साध्वीजी के विशाल साम्राज्य में वीररत्न विजयजी का चौथा स्थान है। संपूर्ण मालवा क्षेत्र में विचरण करके आपने 280 से अधिक जिन मंदिर, उपाश्रय एवं आराधना स्थल का निर्माण करके मालवा को भारतभर में सुप्रसिद्ध बना दिया है। पदवी प्रदान की घोषणा जैन जगत के प्राचीन तीर्थ मांडवगढ़ में ऋषभ विजय जी ने की। उपस्थित भक्तों ने वासक्षेप, चंदन के चूर्ण एवं अक्षत से पूज्यश्री का अभिषेक किया। इस नयनरम्य दृश्य के हजारों भक्त साक्षी बने। आचार्य पद प्रदान महोत्सव शिवपुर मातमोर मणिभद्र तीर्थ में 1 से 5 फरवरी तक आयोजित होगा। पदवी 5 फरवरी को दी जायेगी।

उज्जैन में चैत्रमास ओली अनुयोगाचार्यश्री और गणिवर्य आदर्शरत्नसागरजी की निश्रा में होगी

✻ 29 मार्च से 6 अप्रेल तक आयोजन में 400 आराधक भाग लेंगे।
✻ गणिवर्य श्री की निश्रा में दीक्षा भी होगी।

उज्जैन- आगामी वर्ष के चैत्र माह में नवकार ओलीजी की आराधना अनुयोगाचार्य श्री वीररत्नविजयजी म.सा. जो 5 फरवरी को आचार्य पद पर प्रतिष्ठित होने जा रहे है। आपकी ओर गणिवर्य श्री आदर्शरत्नसागरजी म.सा. की निश्रा में होने जा रही है। ओली आराधना 29 मार्च से 6 अप्रेल तक श्री ऋषभदेव छगनीराम पेढ़ी खाराकुआ में होगी। आराधना में लगभग 400 आराधकों के भाग लेने की संभावना है। ओलीजी की तैयारी आरंभ हो गई है। भाग लेने वाले आराधक 90090 26932 पर सम्पर्क कर फार्म भरें, फार्म भरनेवाले को ही प्रवेश दिया जायेगा।

15 वां पौषधधारी छ:रिपालक संघ की पूर्णाहुति

अहमदाबाद- प.पू. 451 दीक्षा दानेश्वरी आचार्यदेव श्री गुणरत्न सूरी जी म.सा. के शिष्य प.पू. सूरिमंत्र आराधक आचार्यदेव श्री रविरत्न सूरी जी म.सा., पू.आचार्य श्री जयेशरत्न सूरीजी म.सा., पंन्यास श्री वैराग्यरत्न वि. म.सा.आदि-10 साधु-साध्वीजी भगवंतों की पावन निश्रा में शांतिनगर अहमदाबाद से पानसर तीर्थ का पौषध धारि छ:रि पालक संघ का प्रयाण दिनांक 9 नवंबर को हुआ। ओगणेज तीर्थ-शेरीसा तीर्थ होते हुए दिनांक 11 नवंबर को पानसर तीर्थ में पहुंचा, तीर्थ पेढ़ी ने संघपति परिवारों का बहुमान किया। संघ में प्रतिदिन उषाभक्ति भक्तामर पाठ, प्रवचन संध्या भक्ति हुई। 9 साल से 75 वर्ष के 108 आराधकों ने पौषध के साथ एकासना कर पैदल विहार किया। दिनांक 12 नवंबर को पानसर तीर्थ में संघपतियों की चौमुखी भगवान समक्ष संघमाला परिधान किया गया। सभी आराधकों का बहुमान किया है। स्व. मुनि श्री अर्हत रत्न वि.म. का जीवन पुस्तक ''तारो सथवारो'' का विमोचन हुआ। पूज्यश्री की निश्रा में 16 वां पौषध संघ दिनांक 12 से 17जनवरी तक श्री कंदबगिरि से शत्रुंजय महातीर्थ का 12 गाऊ संघ होगा। संपर्क करें- 7487866344

पू.पं. विरागसागरजी को आचार्य पदवी

मुंबई- पूज्यपाद गच्छाधिपति संघ स्थविर आचार्य भगवंत श्री दौलतसागरसूरीजी महाराजा की आज्ञा से आचार्य भगवंत श्री हर्षसागरसूरीजी म.सा. के सुशिष्य क्रांतिकारी संत प्रवर पूज्य पंन्यास प्रवर श्री विरागसागरजी म.सा. को आचार्य पद पर प्रतिष्ठित किया जायेगा। आपकी आचार्य पदवी इसी वर्ष होगी।

श्री शत्रुंजय महातीर्थ से श्री गिरनार महातीर्थ छःरिपालित संघ निकलेगा

✲ दोषी परिवार लाभार्थी है।

दिल्ली- श्री प्रेमभुवनभान सूरी समुदायवर्तीय आचार्य भगवंत श्री गुण रत्नसूरीजी महाराज के सुशिष्य आचार्य देवश्री विजय रश्मिरत्न सूरी जी म.सा., मुनि श्री भव्यरत्नविजय जी म.सा. आदि ठाणा आप साबरमती अहमदाबाद में चार्तुमास आराधना के लिये विराजमान है, आपश्री की निश्रा में श्रीमती असुबहन रमनाथ मलजी समरथमलजी दोषी परिवार दिल्ली के द्वारा भव्य छःरि पालित यात्रा का आयोजन किया जा रहा है। संघ, दादा के दरबार से दादा के दरबार के लिये प्रस्थान करेगा। श्री सिद्धाचल महा तीर्थ पालीताना से संघ का प्रस्थान दिनांक 18 जनवरी 2023 को होगा और मालरोपण दिनांक 31 जनवरी को होगी।

जैनाचार्य श्री रवि-ललितशेखर सूरीजी की निश्रा में उपधान और संघ का आयोजन

पालीताना- पूज्य आचार्यश्री रवि शेखर सूरीजी म.सा. एवं श्री ललित शेखर सूरीजी म.सा.आदि विशाल संख्या में साधु-साध्वी भगवंत की अमृत निश्रा में पालीताना के मेवाड़ भवन में पंच मंगल महा श्रुतस्कंध उपधान तप की आराधना का आयोजन प्रथम प्रवेश के साथ 1 जनवरी 2023 को होने जा रहा है, द्वितीय प्रवेश 3 जनवरी का है, उपधान तप की माल 19 फरवरी को होगी इसके साथ ही आपकी निश्रा में श्रीमती लक्ष्मीबाई सराफ परिवार, मुंबई के द्वारा सोनगढ़ से श्री सिद्धाचल का छःरि पालित यात्रा संघ का आयोजन 12 जनवरी से होगा, 14 जनवरी को दादा के दरबार में प्रवेश एवं 15 जनवरी को माल होगी।

जैनाचार्य श्री रत्नचंद्रसूरीजी म.सा. के सूरी पद रजत वर्ष के अवसर पर विविध आयोजन

सूरत- पूज्य प्रभावक आचार्य भगवंत श्री रत्नचंद्रसूरीजी म.सा. के सूरी पद रजत वर्ष में अनेक शासन प्रभावक आयोजन होने जा रहे है। सूरत वेसु में चार्तुमास के उपरांत पूज्यश्री बड़ोदा पधारेंगे। यहां अलकापुरी में रजत वर्ष पर आपश्री का भव्य मंगल प्रवेश सूरी रजत वर्ष की घोषणा के साथ मुनिश्री राजदर्शनविजयजी को गणिपद की घोषणा के बाद आपका विहार पालीताना की ओर होगा। यहां आपश्री की निश्रा मेंसोनगढ़से पालीताना का छःरिपालित यात्रा संघ का आयोजन 28 दिसंबर से 1 जनवरी 2023 तक होगा इसके बाद मुमुक्षु हीर (15) की भगवती दीक्षा 18 जनवरी तथा मुमुक्षु विरेन बोहरा (12) की दीक्षा 3 फरवरी को अहमदाबाद में होगी। चैत्र ओली सुमेरु तीर्थ पर होगी। आपश्री का आगामी चार्तुमास नवसारी श्री संघ में होगा।

आचार्यश्री रत्नचंद्र सूरीजी का चार्तुमास नवसारी में

नवसारी- दक्षिण गुजरात की डायमंड नगरी नवसारी नगर की पावन धरा पर श्री महावीर नगर जैन श्री संघ एवं श्री चिंतामणी जैन श्री संघ नवसारी के तत्वावधान में वर्ष 2023 व विक्रम संवत् 2079 का चार्तुमास परम गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री राम सूरीश्वरजी म.सा. (डहेला वाला) के शिष्यरत्न परम पूज्य आचार्य भगवंत श्रीमद् विजय रत्नचंद्र सूरीश्वरजी म. सा., परम पूज्य आचार्य भगवंत श्रीमद् विजय उदयरत्नसूरीश्वरजी म. सा. आदि विशाल श्रमण-श्रमणीवृंद का होगा।

झालरापाटन में दादावाड़ी प्रतिष्ठा

झालरापाटन- खारतरगच्छ जैनाचार्य श्री जिन गणिप्रभ सूरीजी म.सा. आदि साधु-साध्वीवृंद की निश्रा में यहां दादावाड़ी का प्रतिष्ठा महोत्सव अंतर्राष्ट्रीय जैन विधिकारक भाई श्री मनोजकुमार बाबुमलजी हरण के मार्गदर्शन में सम्पन्न हुआ। 30 दिसंबर को गुरु भगवंतों के प्रवेश के बाद 31 दिसंबर को 18 अभिषेक हुए। 1 जनवरी को साध्वी भगवंत की बड़ी दीक्षा भव्य रथयात्रा और प्रतिष्ठा का मंगल विधान सम्पन्न हुआ। श्री वृहत्त शांतिस्नात्र महापूजन पढ़ाई गई। 2 जनवरी को द्वारोद्घाटन के साथ महोत्सव की पूर्णाहुति हुई

✲ संकल्प का बल होता है तो विकल्प को अवकाश नहीं रहता।

सागर समुदाय के तीन वरिष्ठ मुनि भगवंत का प्रर्वतक पद पर आसीन किया गया

मुंबई+पालीताना- आंत्रोली कपड़वंज में जन्म लेनेवाले 94 वर्ष की पद एवं 38 वर्ष की दीक्षा पर्याय पूर्ण करनेवाले पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री हर्षसागर सूरीजी म.सा. के मुनि पिताश्री के गुरु पूज्य गच्छाधिपति आचार्य देवेश श्री देवेन्द्रसागरसूरीजी महाराजा है जिनकी पुत्री साध्वी श्री हितपूर्णा श्रीजी म.सा. है जो 97 वर्ष की वय तक डोली में नहीं बैठे, मर्यादा और संस्कृति परम्परा को मानने, मनानेवाले पूज्य मुनि प्रवर श्री देवप्रभसागरजी म.सा. को दिनांक 25 नवंबर को संघ स्थविर सागर गच्छाधिपति जिनागम सेवी पूज्यपाद दौलतसागरसूरीजी महाराजा के द्वारा प्रर्वतक पद पर सुशोभित किया गया।

इसके साथ ही पूज्य आचार्य भगवंत श्री चन्द्र शेखरसागर सूरीजी म.सा. के दो शिष्यरत्न मुनिपुंग श्री विश्वशेखरसागर म.सा. एवं मुनिश्री दिव्यशेखारसागरजी म.सा.को पालीताना में दिनांक 9 दिसंबर को पादलिप्तपुरम् आराधना भवन में प्रर्वतक पद से सुशोभित किया गया। इस प्रसंग पर आचार्य चंद्रशेखार सागर सूरीजी आचार्य श्री जितरत्नसागर सूरीजी, आचार्य श्री नयचंद्रसागर सूरीजी, आचार्य श्रीमृदुरत्नसागर सूरीजी के साथ शताधिक साधु-साध्वीजी की मंगल निश्रा रही।

पूज्य मुनि श्री देवप्रभ सागरजी म.सा.

जन्म- आंत्रोली-कपड़वंज (अहमदाबाद)
उम्र- 94 वर्ष
दीक्षा पर्याय- 38 वर्ष
दीक्षा- वि.संवत 2041, मागसर सुदी-10
गुरुदेव- गच्छाधिपति पूज्य आ. श्री देवेन्द्र सागरसूरिजी महाराजा
वडिल गुरु बंधु- संघ स्थविर पूज्य गच्छाधिपति श्री दौलतसागरसूरिजी महाराजा
घर से दीक्षित संसारी सुपुत्र- शासन प्रभावक पूज्य आचार्य श्री हर्षसागरसूरिजी महाराजा
संसारी सुपुत्री सरल स्वभावी- पूज्य सा. श्री हितपूर्णा श्रीजी म.सा.
पूज्यश्री की विशेषताः-

1- संयम में अति चुस्त।
2- निर्दोष गोचरी के गवेषक।
3- 93 वर्ष तक डोली और व्हीलचेयर का भी त्याग। चलकर ही विहार के आग्रही।
4- सभी क्रिया समय पर और विधिपूर्वक अप्रमत्त भाव से।
5- त्रिकाल देववंदन- प्रभु भक्ति।
6- मर्यादा प्रेमी एवं संस्कृति आग्रही।
7- 12 व्रत एवं 14 नियम के विशेष प्रेरक।
8- वात्सल्य के भंडार।
9- जिनशासन एवं जिनाज्ञा को संपूर्ण समर्पित।
10- बापूजी महाराज के उपनाम से सुविख्यात।

परम पूज्य मुनि श्री विश्वशेखरसागरजी म.सा.

जन्मः-वि.सं. 2025, मार्गशीर्ष वद-4, सोमवार दिनांक 9-12-1968, गांव- बुलेट, झारखण्ड (बिहार)
दीक्षाः-वि.सं.2038, मार्गशीर्ष सुद-13, बुधवार, दिनांक 9-12-1981, रतलाम (म.प्र.)
बड़ी दीक्षाः-वि.सं.2038, माघ सुद-10, बुधवार, दिनांक 3-2-1982, उज्जैन (म.प्र.)
प्रवर्तक पदः- वि.सं. 2079, मार्गशीर्ष वद-1, शुक्रवार, दिनांक 9-12-2022, पालीताना सौराष्ट्र

परम पूज्य मुनि श्री दिव्यशेखरसागरजी म.सा.

जन्मः-वि.सं. 2030, वैशाख वद-10 रविवार दिनांक 27-5-1973, गांव-बुलेट, झारखण्ड (बिहार)
दीक्षाः-वि.सं.2039, ज्येष्ठ सुद-5 गुरुवार, दिनांक 27-5-1982 सालमगढ़ (राज.)
बड़ी दीक्षाः-वि.सं.2039, आषाढ़ सुद-3 बुधवार, तारीख 23-6-1982, राजगढ़ (म.प्र.)
प्रवर्तक पदः-वि.सं. 2079, मार्गशीर्ष वद-1 शुक्रवार, दिनांक 9-12-2022, पालीताना सौराष्ट्र
दीक्षा गुरुः-सराक समाजोद्धारक पू.आ.श्री यशोभद्र सूरीजी म.सा.
गुरु :-सराक समाज हितचिंतक आ.देव श्री चन्द्रशेखरसागर सूरीश्वरजी म.सा.
विचरण-मध्यप्रदेश, राजस्थान, वागड़ क्षेत्र, बिहार, झारखंड, वेस्ट बंगाल, गुजरात-सौराष्ट्र आदि।

वागड़ नरेशाचार्यश्री की निश्रा में सैलाना के प्रकाशजी मेहता का संघ नववर्ष में आयोजित होगा

✻ उपधान माल सम्पन्न।
✻ आगामी चार्तुमास कांदिवली मुंबई में होगा।
✻ 5 छ:रिपालित संघ के आयोजन आपकी निश्रा में।

पालीताना- पालीताना- मालव भूषण आचार्य भगवंत गुरुदेव श्री नवरत्न सागरसूरी जी म.सा. के तीसरे सुशिष्य वागड़ विभूषण जैनाचार्य श्री मृदुरत्न सागर सूरीजी म.सा. मुनिश्री मुनिरत्न सागर जी मुनिश्री नमिरत्नसागरजी म.सा., श्री गंभीररत्न सागरजी म.सा., श्री पद्मरत्नसागरजी म.सा. आदि की निश्रा में उपधान तप की माल का आयोजन 12 से 14 दिसंबर के मध्य सम्पन्न हुआ। श्री ऋषिमंडल महापूजन भी हुई। दिनांक 13 दिसंबर को उपधान तपस्वीयों का भव्य वरघोड़ा आयोजित किया गया, दिनांक 14 दिसंबर को मालारोपण विधि सम्पन्न हुआ।

आपकी निश्रा में श्री महेन्द्रपुरम् तीर्थ श्री सिद्धाचल महातीर्थ का छःरिपालित यात्रा संघ चन्द्रकांत प्रेमिला बहन कपिल सेठ परिवार के द्वारा आयोजित किया गया। श्री महेन्द्रपुरम् तीर्थ से संघ का प्रयाण दिनांक 26 दिसंबर को हुआ एवं माल दादा के दरबार में दिनांक 30 दिसंबर को हुई। दूसरा संघ 6 जनवरी 2023 से सोनगढ़ से पालीताना छःरि पालित संघ तीसरा छःरि पालित संघ सोनगढ़ से **श्री सिद्धाचल का श्री प्रकाशचंद्रजी राजमलजी मेहता परिवार, सैलानावाले के द्वारा दिनांक 27 से 30 जनवरी 2023 तक आयोजित किया गया है।** संघ में पूज्य साध्वीवर्या श्री शशिप्रभा श्रीजी म.सा. आदि ठाणा का भी सानिध्य रहेगा।

अभ्युदयपुरम् में पौष दशमी पर अट्ठम तपाराधना हुई

उज्जैन-पूज्यपाद अभ्युदयसागर जी म.सा. के सुशिष्य एवं अभ्युदयपुरम् तीर्थ एवं गुरुकुल के संस्थापक मालव मार्तण्ड जैनाचार्य श्री मुक्तिसागर जी म.सा. ,पू.पंन्यास श्री अचलमुक्ति सागर जी म. सा., मुनिश्री पावनमुक्ति सागर जी, मुनिश्री मनमुक्तिसागरजी म. सा. आदि ठाणा की निश्रा में दिनांक 17 से 19 दिसंबर तक पौष दशमी आराधना पर अट्ठम तप का आयोजन हुआ अभ्युदयपुरम् का प्रतिष्ठा महोत्सव दिनांक 4 फरवरी 2023 को 23 दिवसीय भव्य आयोजन के साथ होगा।प्रतिष्ठा के पावन प्रसंग पर पूज्य पंन्यास प्रवर श्री अचतमुक्ति सागरजी म.सा. को आचार्य पदवी पर प्रतिष्ठित किया जायेगा। लगभग 70-75 जिन बिम्बों के साथ नवग्रह मंदिर, 45 जिनालय का निर्माण यहां हुआ है।

गच्छाधिपति आचार्य श्री जयानंदसूरिजी की निश्रा में आगामी आयोजन

✻ पालीताना में 6 मुमुक्षुओं की दीक्षाएं।

✻ तगड़ी से शत्रुंजय तीर्थ का छःरि पालित संघ।

✻ कलिकुंड तीर्थ में तीन दीक्षाएं।

✻अहमदाबार में गृहमंदिर की प्रतिष्ठा।

✻ अहमदाबाद में त्रि दिवसीय महोत्सव

✻ मुंबई महानगर में चार्तुमास।

✻ 9 दिसंबर को आपके वरद् हस्तों से शत्रुंजय तीर्थ में ही एक मुमुक्षु दिनेश कंचनदेवी दिनेशजी नागोत्रा सोलंकी (सांथु/बन्कापुर) 6 मुमुक्षु आराधना कुमारी की दीक्षा

✻ 18 दिसंबर को शा. जेठमलजी किनाजी संकलेचाकी दीक्षा

✻ 26 जनवरी को कलिकुंड तीर्थ में मुमुक्षु राजभाई अश्विन भाई मोरखिया की दीक्षा

✻ 4 से 6 फरवरी को अहमदाबाद पालड़ी में थराद निवासी देसाई भीखा मल गगलदास के गृह मंदिर की प्रतिष्ठा आपके वरद् हस्तों से सम्पन्न होगी।

✻ अहमदाबाद शाहीबाग में 7 से 9 फरवरी को धानसा निवासी महावीर कुमार की दीक्षा

✻ आपश्री का मुनि मंडल सह आगे मुंबई की ओर विहार होगा।

दो आचार्य पदवी अयोध्यापुरम में

मुंबई- पूज्यपाद गच्छाधिपति संघ स्थविर आचार्य भगवंत श्री दौलतसागरसूरीजी महाराजा की आज्ञा से बंधु बेलडी गुरुकुल में के पूज्य पंन्यास प्रवर श्री प्रसन्नचन्द्रसागरजी म.सा. एंव श्री विरागचंन्द्रसागरजी म.सा. को आचार्य पद पर 12 फरवरी को प्रतिष्ठित किया जायेगा।

चर्च की नगरी मडगांव में जिनमंदिर प्रतिष्ठोत्सव में देश विदेश के धर्मिष्ठों ने महोत्सव को ऐतिहासिक बनाया

※ बंधु त्रिपुटी आगम-प्रशम-व्रज की पावन निश्रा रही।

※ ध्वजारोहण और वास्का-जिनालय के लिये भूमि पूजन।

मडगांव- गोवा प्रांत में अंतर्राष्ट्रीय जैन विधिकारक शासनरत्न श्री मनोज कुमार बाबुमलजी हरण के कुशल मार्गदर्शन और प्रेरणा से नवनिर्मित श्री सुमतिनाथ प्रभु के सुन्दर जिन मंदिर के प्रतिष्ठा महोत्सव ने चर्च की नगरी में जैनत्व का शंखनाद कर दिया। सागर समुदाय के बंधु त्रिपुटी मुनि भगवंत श्री आगम-प्रशम-व्रजरत्नसागरजी म.सा. की निश्रा में सम्पन्न महोत्सव ने गोवा के इतिहास में एक नया रिकार्ड बना दिया। श्री मनोजजी हरण का मैनेजमेंट और वाणी ने की जादूगरी से महोत्सव में लक्ष्मीवर्षा के साथ जिनशासन की प्रभावना का इतिहास सर्जित कर दिया। प्रतिष्ठा महोत्सव के सभी चढ़ावे के साथ उपाश्रय, धर्मशाला, भोजनशाला के लिये लगभग 3 करोड़ रुपये से अधिक का सद्व्यय लाभार्थियों ने किया। दिनांक 1 से 5 दिसंबर तक हुए महोत्सव मुनि भगवंतों ने गोवा के सुकुर परवरिम में श्री धर्मनाथ जिनालय का ध्वजारोहण 26 नवंबर को सम्पन्न करवाया। दिनांक 4 दिसंबर को वास्को में नवनिर्मित होनेवाले जिन मंदिर का भूमि पूजन 7 दिसंबर को हुआ। इसके साथ ही दिनांक 4 दिसंबर को अमेरिका के ओरिजॉन के विर्वतन शहर के जिन मंदिर में विराजित होनेवाली जिन प्रतिमा का महाभिषेक और प्रतिमा अर्पण कार्यक्रम भी हुआ। महोत्सव में दिनांक 1 से 5 दिसंबर तक श्री पार्श्व पद्मावती श्री नाकोड़ा भैरव महापूजन के साथ दिनांक 3 दिसंबर को आयोजित वरघोड़े ने मडगांव की सड़क पर जिनशासन के गौरव को यादगार बना दिया। धर्मसभा में अमेरिका, नेपाल के साथ देश के आये लब्धि प्रतिष्ठित धर्मिष्ठों का सम्मान किया गया। दिनांक 4 दिसंबर को प्रतिष्ठा में सैकड़ों की संख्या में धर्मिष्ठा का उत्साह देखने लायक था। दिनांक 5 दिसंबर को प्रातः द्वारोद्घाटन एवं सत्तरभेदी पूजन के साथ महोत्सव की पूर्णाहुति हुई। श्री सुमतिनाथ परमात्मा की प्रतिष्ठा गोवा के इतिहास में यादगार बन गई। मुनि भगवंतों ने यहां से पालीताना के लिये विहार किया है। श्री मनोजजी ने कुलपाकजी में आचार्य श्री तीर्थभद्र सूरीजी म.सा. की निश्रा में मुनि सुव्रतस्वामी जिनालय की प्रतिष्ठा सम्पन्न करवाई। यह आपकी 1155 वीं प्रतिष्ठा थी इसके बाद आपने दिनांक 14 दिसंबर को शाहपुरा (कर्नाटक) में जाजम के चढ़ावे करवाये।

मुनि मैत्रीसागरजी का कालधर्म हुआ

सूरत- सागर समुदाय के आचार्य भगवंत श्री सागरचंद्रसागरसूरीजी म.सा. के सुशिष्य मुनिप्रवर श्री मैत्री सागरजी म.सा. का देवलोकगमन दिनांक 11 दिसंबर को आगमोद्धारक धानेरा आराधना भवन उपाश्रय में रात्री 11.36 बजे हो गया। आपका 28 वर्ष का संयम जीवन रहा और वय 37 वर्ष की थी। दिनांक 12 दिसंबर को पालकी निकली। दिनांक 15 दिसंबर को गुणावाद सभा का आयोजन सागर समुदाय के वरिष्ठजैनाचार्य श्री अशोक सागरसूरीजी महाराजा की निश्रा में किया गया।

कोठारी परिवार के द्वारा छःरिपालित यात्रा संघ का श्री नेमी से श्री आदि तक आयोजन

झीलवाड़ा- पूज्य आचार्य भगवंत श्री विजय रविशेखर एवं श्री विजय ललित शेखर सूरीजी म.सा. आदि विशाल संख्या में साधु-साध्वी भगवंतों की अमृत निश्रा में श्री नेमीनाथ प्रभु के महातीर्थ गिरनार से दादा श्री आदिनाथ प्रभु के महातीर्थ श्री सिद्धाचल का छःरिपालित संघ आयोजित होने जा रहा है। लाभार्थी झीलवाड़ा के कोठारी परिवार के द्वारा अनेश, सुकृत किये है। संघ का आयोजन 29 जनवरी से 11 फरवरी 2023 तक होगा। संघ माल 12 फरवरी 2023 को होगी। इसके पूर्व लाभार्थी परिवार और संघयात्री मुंबई से गिरनार पहुंचेंगे यहां दिनांक 28 जनवरी 2023 को तीर्थयात्रा एवं गुरु भगवंतों का मंगल प्रवेश होगा।

प्राचीन तीर्थोद्धारक जैनाचार्य श्री हर्षसागरसूरीजी को सकल संघ हितचिंतक उपाधि से नवाजा गया

✻ विमोचन पूर्वोत्सव भी मना।

निगड़ी-श्रमण परम्परा संवाहक संघवत्सल, संघ हितैषी, संघ कौशल्य धार संघ स्थिवर, परम अप्रमत्तयोगी, निर्ग्रन्थ शिरोमणी, पूज्यपाद जिनागम सेवी सुविशाल सागर समुदाय के गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री दौलतसागर सूरीश्वरजी महाराजा अजात शत्रु पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री नंदीवर्धनसागर सूरीश्वरजी आदि ठाणा की अमृत निश्रा में प्राचीन तीर्थोद्धारक सागर की शान पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री हर्षसागर सूरीश्वर जी महाराज को गच्छाधिपति संघ स्थिवर ने सकल संघ हितचिंतक पदवी से विभूषित किया गया। इस अनुठे मंगलमय प्रसंग पर देशभर के श्रीसंघों से बड़ी संख्या में गुरु भक्तों की उपस्थिति रही। पूना के समीप निगड़ी में निर्मित राजगृही नगरी में त्रिदिवसीय महोत्सव का आयोजन किया गया था। दिनांक 9 से 11 दिसंबर तक आयोजित महोत्सव के अंतर्गत सवा लाख महामंत्र का भाष्य जाप हुआ। दिनांक 10 दिसंबर को सद्गुरु कीर्तन के द्वारा पूज्यश्री के जीवन की गौरव गाथा की सुन्दर प्रस्तुति की गई। दोपहर में श्री पार्श्वपंच कल्याणक पूजन हुई। दिनांक 11 दिसंबर को भव्य रुप से निर्मित धर्मसभा मंडप में उपस्थित धार्मिंठों की करतल ध्वनि के मध्य पूज्यश्री के गुणगान का उल्लेख करते हुए सकल संघ हित चिंतक पदवी प्रदान की गई। इस पुनीत पावन प्रसंग पर पूज्यपाद गच्छाधिपति पर जिनशान की दौलत, पुस्तक की दूसरी आवृत्ति का भव्य विमोचन भी सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर अनेक शासन प्रभावक घोषणा भी हुई।

भारत बंद कर जैन समाज ने तीर्थ रक्षा का संकल्प व्यक्त किया

✻ श्री शिखरजी और श्री शत्रुंजय तीर्थ जैनत्व की प्रबल आस्था के केन्द्र है। ✻ सरकार झूकी

उज्जैन- सम्पूर्ण जैन समाज श्री सम्मेद शिखरजी महातीर्थ को पर्यटन क्षेत्र बनाने और श्री शत्रुंजय महातीर्थ में आततयीयों के द्वारा तीर्थ में की गई तोड़फोड़ से अत्यधिक आक्रोश में है। लगातार एक शांत समुदाय को बगैर कारणों से निरंतर सिरफिरे लोगों का सामना करना पड़रहा है। तीर्थ पर्यटन और तोड़फोड़ के स्थान है या आत्म शांति आस्था और विश्वास के प्रतीक है। यह बात सरकार को समझाने के लिये सम्पूर्ण देश में समग्र जैन समाज ने विरोध स्वरुप विशाल रैलियों का आयोजन किया साथ ही 21 दिसंबर को संपूर्ण देश में जैन समाज ने अपना कारोबार बंद रखकर अपना विरोध जतलाया साथ ही प्रशासन को उच्च स्तर पर अपनी बात पहुंचाने के लिये ज्ञापन भी दिया गया। राज्य और केन्द्र सरकार को इस बारे में शीघ्र ही निर्णय लेना होगा। अन्यथा जैन समाज अपने तीर्थों की रक्षा के समुचित कदम उठायेंगे। सरकार अपना निर्णय वापस लेने जा रही है

अमेरिका में अट्ठम तपाराधना

ईशान- अमेरिका के वर्जिनिया राज्य के रिचयलु शहर में श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ भगवान का शिखरबंद मंदिर की प्रतिष्ठा 15 जून 2019 में सम्पन्न हुई। श्री जैन सोसायटी आफ सेंट्रल वर्जिनिया द्वारा इस वर्ष श्री पार्श्वनाथ जन्म कल्याणक के अवसर पर संपूर्ण अमेरिका के साधर्मिक भाई-बहनों को सामूहिक अट्ठम तप, धारण और पारणे के साथ कराने का निर्णय लिया और बाहर से आनेवालों के ठहरने और मंदिरजी तक जाने आने की व्यवस्था भी की।संघ के निकेतनभाई, भरतभाई शाह एवं शैलेष जैन (कांग्रेसा) सक्रिय रहे। अमेरिका में रहकर अट्ठम तप की आराधना करने का भाव रखनेवाले सभी साधर्मिक बंधु इस सामुहिक आराधना में शामिल हुए। संघ में लगभग 100 परिवार है। प्रतिष्ठा के बाद से प्रति रविवार साधर्मिक वात्सल्य, स्नात्र पूजा और पाठशाला चालू है।

हुबली में प्रतिष्ठा

पूज्य आचार्य भगवंत श्री अजीत शेखर सूरीजी म.सा. ने नवनिर्मित श्री शांतिनाथ जिन मंदिर की अंजन प्रतिष्ठा महोत्सव के लिये महासुद-13 दिनांक 3-2-2023 का मंगल मुर्हूत प्रदान किया।

हमारे तीज-त्यौहार

1- माघ वदी-7	शनिवार	14/01/2023	धनार्क कुमुर्हूता समाप्त 20.48 बजे सूर्य मकर राशि में
2- माघ वदी-12(13)	गुरुवार	19/01/2023	मेरु तेरस श्री आदिनाथ प्रभु का निर्वाण कल्याणक
3- माघ सुदि-5	गुरुवार	26/01/2023	बसंत पंचमी श्री शंखेश्वर महातीर्थ की वर्षगांठ, आगमोद्धारकश्री का दीक्षा दिन ज्ञानाराधना का दिन
4- माघ सुदि-6	शुक्रवार	27/01/2023	श्री शंखेश्वर आगम मंदिर का प्रतिष्ठा दिन

पुष्प नक्षत्र :

आरम्भः- माघ वदि-1- दिनांक 08/01/2023 रविवार, समय-03.09 बजे से

समाप्तः-माघ वदि-2-दिनांक 09/01/2023 सोमवार, समय-06.06 बजे तक

पंचक :

आरम्भः-माघ सुदि-2- दिनांक 23/01/2023 सोमवार, समय- 13.53 बजे से

समाप्तः-माघ सुदि-6- दिनांक 27/01/2023 शुक्रवार, समय- 18.37 बजे तक

दृष्टिकोण बदलें:- *हिंसा और परिग्रह के प्रति जनता का दृष्टिकोण बदले, ऐसा प्रशिक्षण शिक्षा के साथ चले। वर्तमान में शिक्षा केवल व्यवसाय, शिल्प, यांत्रिक विकास और शारीरिक स्वास्थ्य के साथ जुड़ी हुई है। उसका मार्ग बदलना आवश्यक है। उसका प्रवाह केवल जीविका की ओर है, वह जीवन की ओर भी मुड़े। आर्थिक स्पर्द्धा और सुविधावादी दृष्टिकोण ने गहरी जड़ें जमा ली है। चेतना की उर्वरा भूमि में यदि हिंसा और परिग्रह के अल्पीकरण एवं सीमा के बीज बोए जाएं, संस्कार डाले जाए तो एक स्वस्थ विकल्प बन सकता है। यह शिक्षा जगत के माध्यम से ही संभव है।*

सारे देश में आगमोद्धारक प्रतिनिधि नियुक्त करना है

जैन जगत की प्रतिष्ठित, प्रसिद्ध मासिक पत्रिका आगमोद्धारक के सदस्यता अभियान के लिये सारे देश में प्रतिनिधियों की नियुक्ति की जा रही है। सक्रिय युवा भाई-बहन जो जिनशासन के प्रचार-प्रसार हेतु अपनी सेवा देना चाहते है वे तुरन्त निम्न पते पर संपर्क करें।

प्रतिनिधि को कम से कम 25 सदस्य बनाना आवश्यक है। आपकी सहमति प्राप्त होने पर रसीद कट्टे एवं प्रचार-प्रसार सामग्री आपको भेजी जायेगी। सम्पादक से सम्पर्क करें।

सादर आमंत्रण

❊ पूज्य साधु-साध्वीजी से विनंती है कि आपके चार्तुमास एवं सभी धार्मिक कार्यक्रमों की जानकारी एवं धार्मिक महोत्सव की सूचना आगमोद्धारक तक पहुंचाने का कष्ट करें, ताकि अंक आपको लगातार भेजा जा सके तथा समाचार प्रकाशित किया जा सकें।

❊ आगमोद्धारक के लिये आपकी रचनाएं भी प्रकाशन के लिये निरंतर भेजते रहे। आपकी रचना से हम प्रोत्साहित होंगे।

❊ पत्रिका को और अच्छा बनाने के लिये आपके सुझाव, मार्गदर्शन भी भेजते रहे ताकि आगमोद्धारक की गुणवत्ता बढ़ाई जा सके।

❊ अंक आपके तक नियमित रुप से नवीन स्वरुप के साथ 10 तारीख तक पहुंचे ऐसा हमारा प्रयास रहता है, अंक अप्राप्ति पर शीघ्र सूचित करें।

- सम्पादक